

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 मई 2024

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 मई 2024

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62

अंक : 03

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26

Office Posted at R.M.S., Bikaner



राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्ग जैन संघ का मुख्यपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक

पाठ्यिक

अभिमान क्षम



શુભીતિપણ



राम चमकते भानु समाना

जूते यदि पैर काटते हैं तो उन्हें स्नोहिल बनाया
जाता है, न कि फेंके जाते हैं।

असफलता सफलता की अरुणिमा-आभा है।

गलती को स्वीकारने से हिम्मत अनेक गुणा बढ़ जाती है। सच्चाई के समीप पहुँचना होता है। आत्मविश्वास का ग्राफ बहुत ऊँचा उठ जाता है। राजा के सामने खड़े होने में भी कभी हिचक नहीं होगी।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल नी म.आ.

વર्षीतप पारणો સંપન્ન

चિત્તૌડાંગઢ, 10 મર્ચ 2024 | પરમ પૂજ્ય આચાર્ય પ્રવર 1008 શ્રી રામલાલ જી મ.આ. એવં બહુશ્રુત, વાચનાચાર્ય ઉપાધ્યાય પ્રવર શ્રદ્ધેય શ્રી રાજેશ મુનિ જી મ.આ. કે પાવન સાન્નિધ્ય મેં ચિત્તૌડાંગઢ કી પાવન ધરા પર 105 આરાધકોં ને વર્ષીતપ પારણા સંપન્ન કિયા। વિદ્યાસાગર માંગલિક ભવન મેં આયોજિત કાર્યક્રમ મેં આચાર્ય ભગવન્ ને આદિનાથ ભગવાન દ્વારા ઇક્ષુરસ સે પારણા કરને કા વિવેચન ફરમાતે હુએ તપ કો જીવન ભાવિત કરને કા માર્બ બતાયા। સભી તપસ્વિયોં ને ઇક્ષુરસ સે પારણા સંપન્ન કર ગુરુચરણોં મેં તપ ભેંટ પ્રસ્તુત કી। (વિસ્તૃત સમાચાર આગામી અંક મેં)

-મહેશ નાહટા

॥ आगमवाणी ॥

जीव दया दम सच्चं अचोरियं बंभवेर संतोषे।
सम्मददंसण-णाणे तउरो य सीलस्स परिवारे॥

-शीलपाहुड (19)

जीवदया, दम, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, संतोष, सम्यग्दर्शन, ज्ञान और तप, ये सब शील का परिवार हैं अर्थात् शील के अंग हैं।

Compassion for the living, restraint, truth, non-stealing, celibacy, contentment, right-vision-knowledge-conduct are the members of the family of righteous conduct.

न हु सक्का नाउं जे नाणं जिणदेसियं महाविसयं।
ते धन्ना जे पुरिसा नाणी य चरित्तमंता य॥

-चंद्रवेद्यक (68)

वे पुरुष धन्य हैं, जो जिनेंद्र भगवान द्वारा उपदिष्ट अति विस्तृत ज्ञान को जानने हेतु समर्थ नहीं हैं।
फिर भी जो चारित्र से संपन्न हैं, वस्तुतः वे ही ज्ञानी हैं।

Blessed are those people who are unable to comprehend the vast knowledge preached by the Lord but are still endowed with the virtue of right-conduct. Actually, they are the really learned ones.

नाणेण विणा करणं, करणेण विणा न तारयं नाणं।
भवसंसारसमुद्दं नाणी करणाद्विअरो तरइ॥

-चंद्रवेद्यक (73)

ज्ञान से रहित क्रिया और क्रिया से रहित ज्ञान तारने वाला अर्थात् सारथक नहीं होता है, जबकि क्रिया में स्थित रहा हुआ ज्ञानी संसार रूपी भवसमुद्र को तैर जाता है।

Both, the action without knowledge and the knowledge without action are fruitless, as they do not liberate. However, the learned aspirant that acts liberates.

जहा ऊरो चंदनभारवाही, भारस्स भागी न हु चंदणस्स।
एवं खु नाणी चरणेण हीणे, नाणस्स भागी न हु सरेण्डईण॥

-आवश्यक निर्युक्ति (100)

जिस प्रकार चंदन का भार उठाने वाला गधा केवल भार ढोने वाला है, उसे चंदन की सुगंध का कोई पता नहीं चलता। इसी प्रकार चारित्र-शून्य ज्ञानी केवल ज्ञान का भार ढोता है, उसे सद्गति की प्राप्ति नहीं होती।

As the donkey that lifts the sandal-wood bundle does not benefit from its fragrance so also a conductless learned person only carries the burden of hi knowledge. He can't liberate.

साभार- प्राकृत मुक्तावली



राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

- 07** विवाह का उद्देश्य
- 11** ग्रंथियाँ अमृत-विष
- 17** लक्ष्य-संधान

- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.
- आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.
- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

- 21** ऐसी वाणी बोलिए : मधुर वचन
- 26** श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला
- 28** श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

- संकलित
- कंचन कांकरिया
- सरिता बैंगानी

संस्कार सौरभ

- 30** धर्ममूर्ति आनंद कुमारी - साध्वी दीक्षा
- 39** खुशियों का उपवन व्यसनमुक्त जीवन
- 42** कैसे करें व्यक्तित्व निर्माण ?
- 46** व्यक्तित्व : एक मीमांसा
- 48** दिखावे का चक्रव्यूह

- संकलित
- डॉ. दिलीप धींग
- पद्मचंद गाँधी
- प्रो. सुमेरचंद जैन
- सुरेश बोरदिया

भक्ति रस

- 34** अक्षय तृतीया
- 51** 'राम' 'गुण' 'गाथा'
- 52** गुरु राम महत्तम गुणमाला

- पायल वया
- नरेश मेहता
- गणेश इंगरवाल

विविध

- 35** बालमन में उपजे ज्ञान
- 53** गुरुचरण विहार

- मोनिका जय ओस्टवाल
- महेश नाहटा



क्या मन भर गया?

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

भ व्य आत्माओ! संसार में रहते हुए आप लोगों ने खूब धन कमाया। खूब दान दिया। खूब नाम भी कमाया। यश भी बहुत फैला पर क्या तृप्ति हुई? धन से अरुचि हुई? भूख से ज्यादा खाने पर अन्न से अरुचि पैदा हो जाती है। हाँड़ी में ज्यादा राँधना हो यानी हाँड़ी में मर्यादा से ज्यादा अन्न पकाया-राँधा जाए तो हंडिया फूट जाती है। क्या धन की कोई सीमा है? क्या उससे मन फटता है? मन में और अधिक पाने की चाह तो बनी नहीं रहती? उत्तर स्पष्ट है। ऐसी स्थिति में विचार करें कि पचास-साठ वर्षों में भी जिससे मन भरा नहीं, क्या पंद्रह-बीस या तीस वर्ष और भी जी लें तो मन भर जाएगा? उत्तर संतोषकारक आना कठिन है। जब जीवन तृप्त हुआ ही नहीं, अतृप्त ही बना रह गया तो वैसी स्थिति में जीवन को जी भी लिया तो अंततोगत्वा पाया क्या? यदि कोई यह प्रश्न पूछ ले तो क्या सांत्वनाकारक जवाब आ पाएगा? यदि कहे नहीं, तो फिर लाभ क्या पाया? कहना होगा कि हमारे पास कोई संतोषकारक उत्तर नहीं होगा। इसका स्पष्ट कारण है जब तक धन का मोह बना रहेगा, तृष्णा बनी रहेगी, लोभ छूटेगा नहीं। लोभ के कारण चिंता पैदा होगी। चिंता से जीवन का रस सूख जाता है। चेहरे की चमक फीकी पड़ जाती है। इतना ही नहीं बुढ़ापा जल्दी ही झलकने लगता है। शरीर की चमड़ी में झुर्रियाँ पड़ने लगती हैं। इनसे बचने का एक ही सशक्त उपाय है कि लोभ-तृष्णा, इच्छा-आकांक्षा को शांत करो। धन में दूबो मत। शालिभद्र की तरह निस्पृह जीवन जीओ। यदि इंद्रिय संयम बना रहेगा तो धन की क्षुधा शांत हो जाएगी।

सुझ सज्जनो! इतने वर्षों तक संसार का जीवन जीया, उसका अनुभव लिया, अब संयमी जीवन जी कर उसका भी अनुभव लेने का प्रयास करो। अंतर के इस भय को दूर करो कि संयम खांडे की धार है। संयम खांडे की धार नहीं, आनंद का अगार है। यदि कोई दुनिया में सुखी है तो आत्म-संयम से ही है। आत्म-संयम दुनिया की वह संपदा है जो जीव को कृत्य-कृत्य बना देती है। अतः आत्म-संयम के क्षेत्र में कदमों की चाल रुके नहीं, ऐसा लक्ष्य रखना जरूरी है।

कार्तिक कृष्ण 9, बुधवार, 04-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर





Has The Mind Been Satiated?

-Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

Exalted souls! Living in the mundane world you have earned a lot of wealth. And donated liberally. And merited great renown too. Your fame spread far and wide, but did you get satisfaction? Did you become disinterested in wealth? If you gorge beyond what your hunger warrants, you feel a distaste for food. Excessive cooking in the earthen pot, or say cooking beyond its sufferance, would cause the pot to break. Does wealth admit of any limitation? Does it ever cause the mind to explode? Does not the craving for more wealth stay put in the mind?

The answer is clear. Let us ponder- if the mind has not known satisfaction for fifty, sixty years, would it feel satiated if one lives on for another fifteen to twenty years, or for that matter, thirty years. When life did not attain fulfilment; rather, it only remained discontented, what did one achieve in the end, notwithstanding the fact that the life was lived through? Should such a question be asked, would it beget a consolatory answer? If not, what was the point of it all? It must be acknowledged that such a query would not admit of a satisfying answer. The reason clearly is that so long as attachment to wealth endures, craving lasts, greed cannot be got rid of. And greed would beget anxiety. And anxiety would dry up the sap of life. It would cause the facial glow to fade. Not just this, it would begin to age. Wrinkles would show up on the body skin.

The only way to obviate all this is to have greed, craving, desires, ambitions abated. Do not be engrossed in wealth. Live a life of non-attachment like Shalibhadra did. Should the senses be restrained, the longing for wealth would subside.

O learned gentlemen, you have lived a worldly life for these many years, and savoured its experience; now, live a life of restraint and strive to experience how it is. Rid yourself of the fear within that disciplined life is akin to the edge of a dagger. Far from being the edge of a dagger, it is, in fact, a treasure house of joy. If at all someone is happy in the world, it is owed to self-restraint. Self-restraint is the resource of the world that makes the soul gratified and happy. Hence, it is necessary to fix a goal that obliges you to march relentlessly in the area of self-restraint.

Wednesday, 04-11-2015

Courtesy- Brahmakshar



विवाह का उद्देश्य

-परम पूज्य आचार्य प्रब्रह्म 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

वा

स्तव में विवाह का उद्देश्य दुर्विषय-भोग नहीं है, किंतु ब्रह्मचर्य पालन की कमज़ोरी को धीरे-धीरे मिटाकर ब्रह्मचर्य पालन की पूर्ण शक्ति प्राप्त करना तथा आदर्श गृहस्थ जीवन व्यतीत करना है। यदि कामवासना को शांत करने की पूर्ण क्षमता विद्यमान हो तो विवाह करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार आग लगने ही नहीं दी गई या लगने पर तत्क्षण बुझा दी गई तब तो दूसरा उपाय नहीं किया जाता और तत्क्षण न बुझा सकने पर और आग बढ़ जाने पर उसका आंकलन कर बुझाने का प्रयत्न किया जाता है। इसके लिए जिस मकान में आग लगी होती है, उस मकान से दूसरे मकानों का संबंध तोड़ दिया जाता है ताकि आग आगे न फैल सके और इस प्रकार उसे सीमित करके बुझाने का प्रयत्न किया जाता है। जो आग लगने के समय न बुझाई जा सकी थी, उसे इस उपाय से बुझा दिया जाता है। यदि आग को सीमित न किया जाए तो अनेक मकान भस्म हो सकते हैं। यही बात विवाह के संबंध में भी है। यदि मनुष्य मन पर नियंत्रण रखकर उद्धीप्त कामवासना पर नियंत्रण रख सकता हो या उद्धीप्त होने ही न दे सकता हो तो उसे विवाह की कोई आवश्यकता नहीं। उपयुक्त नियंत्रण न रख सकने के कारण उस अग्नि को विवाह द्वारा सीमित कर दिया जाता है। इस प्रकार वासना की अग्नि बढ़ नहीं पाती

तथा मनुष्य शारीरिक व मानसिक शक्तियों का हास होने से बच जाता है। यदि नियंत्रण की क्षमता न हो और विषयेच्छा की पूर्ति में पूर्ण स्वतंत्रता हो तो भयंकर हानि की संभावना है। तात्पर्य यह है कि विवाह करने के पश्चात् भी विषयेच्छा को सीमित करने का प्रयत्न करना चाहिए तथा आदर्श गृहस्थ जीवन व्यतीत कर हृदय की विशालता द्वारा अपने कर्तव्यपथ की ओर अग्रसर होते रहना चाहिए।

आदर्श विवाहित जीवन व्यतीत करने में वात्सल्य, अनुकंपा, सहानुभूति, विश्वमैत्री आदि सद्गुणों का भी समुचित निर्वाह किया जा सकता है, जिसका लाभ स्वच्छंदता में नहीं होता। संतान के पालन-पोषण तथा उसके प्रति वात्सल्य गृहस्थ जीवन में ही हो सकता है, जो कि विश्वमैत्री की ओर अग्रसर होने का प्रथम प्रयास होता है। अगर मनुष्य इतने सीमित क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त न कर सके तो क्या उससे आशा की जा सकती है कि वह और विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश कर प्राणीमात्र के कल्याण का प्रयत्न करेगा?

ब्रह्मचर्य न पाल सकने पर दुराचारपूर्ण जीवन श्लाघ्य नहीं हो सकता। इस विषय में गांधी जी लिखते हैं- ‘यद्यपि अखंड ब्रह्मचर्य को ही सर्वोत्तम मानते हैं, लेकिन सबके लिए यह शक्य नहीं है। इसलिए वैसे लोगों के लिए विवाह-बंधन केवल आवश्यक नहीं, वरन्



कर्तव्य के बराबर है। मनुष्य के सामाजिक जीवन का केंद्र एक पत्नीव्रत तथा एक पतिव्रत ही है। यह तभी संभव है जब स्वच्छंदता निय समझी जाए और उसे विवाह-बंधन द्वारा त्यागा जाए।”

विवाह, पुरुष व स्त्री के आजीवन साहचर्य का नाम है। यह साहचर्य कामवासना को सीमित कर आदर्श गृहस्थ जीवन के निर्माण का साधन है। एक पाश्चात्य विद्वान् लिखते हैं— “विवाह करके भी विषय, विलासमय, असंयमपूर्ण जीवन व्यतीत करना धार्मिक और नैतिक दोनों दृष्टियों से अक्षम्य अपराध है। असंयम से वैवाहिक जीवन को ठेस पहुँचती है। संतानोत्पत्ति के सिवाय और सभी प्रकार की कामवासना तृप्ति दांपत्य प्रेम के लिए बाधक और समाज तथा व्यक्ति के लिए हानिकारक है।”

इस कथन द्वारा जैनशास्त्र तथा वैदिक सिद्धांतों के कथन की पुष्टि की गई है। जैनशास्त्र तो इनके आद्यप्रेरक ही हैं।

विवाह तो तुम्हारा हुआ, पर देखना चाहिए कि तुम विवाह करके चतुर्भुज बने हो या चतुष्पद? विवाह करके अगर बुरे काम में पड़ गए तो समझो कि चतुष्पद बने हो। अगर विवाह को भी तुमने धर्मसाधना का निमित्त बना लिया हो तो निःसंदेह तुम चतुर्भुज, जो ईश्वर का रूप माना जाता है, बने हो। इस बात के लिए सतत प्रयत्न करना चाहिए कि मनुष्य चतुष्पद न बनकर चतुर्भुज ईश्वर रूप बने और अंततः उसमें एवं ईश्वर में किंचित् भी भेद न रह जाए।

विवाह में जहाँ धन की प्रधानता होगी, वहाँ अनमेल विवाह होना भी स्वाभाविक है। अनमेल विवाह करके दांपत्य जीवन में सुख-शांति की आशा करना ऐसा ही है, जैसे नीम बोकर आम के फल की आशा करना। ऐसे जीवन में प्रेम कहाँ? प्रेम को तो वहाँ पहले ही आग लगा दी जाती है।

प्राचीनकाल में विवाह के संबंध में कन्या की भी सलाह ली जाती थी और उसे अपने लिए वर खोजने

की स्वतंत्रता प्राप्त थी। माता-पिता इस उद्देश्य से स्वयंवर की रचना करते थे। अगर कन्या ब्रह्मचर्य पालन करना चाहती तो भी उसे अनुमति दी जाती थी। भगवान ऋषभदेव की ब्राह्मी और सुंदरी नामक दोनों कन्याएँ विवाह के योग्य हुईं तो भगवान उनके विवाह संबंध का विचार करने लगे। दोनों कन्याओं ने भगवान का विचार जाना तो कहा— “पिता जी! आप हमारी चिंता न कीजिए। आपकी पुत्री मिटकर दूसरे की पत्नी बनकर रहना हमसे न हो सकेगा।” अंततः दोनों कन्याएँ आजीवन ब्रह्मचारिणी रहीं।

हाँ, विवाह न करके अनीति की राह पर चलना बुरा है, पर ब्रह्मचर्य पालन करना बुरा नहीं है। ब्रह्मचारिणी रहकर कुमारिकाएँ समाज की अधिक से अधिक और अच्छी से अच्छी सेवा कर सकती हैं। बलात् ब्रह्मचर्य और बलात् विवाह दोनों बातें अनुचित हैं। दोनों स्वेच्छा और स्वसामर्थ्य पर निर्भर होने चाहिए।

स्त्री और पुरुष के स्वभाव में जहाँ समता नहीं होती वहाँ शांतिपूर्वक जीवन व्यवहार नहीं चल सकता। विवाह का उत्तरदायित्व अगर माता-पिता समझते हों तो प्रतिकूल स्वभाव वाले पुत्र-पुत्री का विवाह नहीं करना चाहिए। लोभ के वश होकर अपनी संतान का विक्रय करके उनका जीवन दुःखमय बनाना माता-पिता के लिए धोर कलंक की बात है।

पुरुष मनचाहा व्यवहार करें, स्त्रियों पर अत्याचार करें, चाहे जितनी बार विवाह करने का अधिकार भोगें, यह सब विवाह प्रथा से विपरीत प्रवृत्तियाँ हैं। ऐसे कार्यों से विवाह की पवित्र प्रथा एवं आदर्श कलुषित हो गए हैं। विवाह का वास्तविक आदर्श स्थापित करने के लिए पुरुषों को संयमशील होना चाहिए।

आजकल धन एवं आभूषणों के लिए विवाह किया जाता है। भारत के प्राचीन इतिहास को देखें तो पता चलेगा कि सीता, द्रौपदी आदि का स्वयंवर हुआ था। उन्होंने अपने लिए आप ही वर पसंद किया था। भगवान नेमिनाथ तीन सौ वर्ष की उम्र तक कुमार रहे। क्या उन्हें

कन्या नहीं मिलती थी? पर उनकी स्वीकृति के बिना विवाह कैसे हो सकता था? इसी कारण उनका विवाह नहीं हुआ। आजकल विवाह में कौन अपनी संतान की सलाह लेता है? गांधी जी भी लिखते हैं- “विवाह बंधन की पवित्रता को कायम रखने के लिए भोग नहीं, अपितु आत्मसंयम ही जीवन का धर्म समझा जाना चाहिए। विवाह का उद्देश्य दंपत्ति के हृदयों से विकारों को दूर करके उन्हें ईश्वर के निकट ले जाना है।”

विवाह संस्कार द्वारा ऐसे ही स्त्री-पुरुषों का आजीवन साहचर्य सफल और उपयुक्त हो सकता है, जो स्वभाव, गुण, आयु, बल, वैभव, कुल और सौंदर्य आदि को दृष्टि में रखकर एक-दूसरे को पसंद करें। स्त्री-पुरुष में से किसी एक की ही इच्छा से विवाह नहीं होता, किंतु दोनों की इच्छा से हुआ विवाह ही सही माना जा सकता है। जबरदस्ती केवल माता-पिता की इच्छा से किया गया विवाह सफल गृहस्थ जीवन के लिए उचित नहीं हो सकता। अर्थ संबंधी प्रश्न को सामने रखकर किया जाने वाला विवाह तो समाज के लिए और भी धातक सिद्ध होता है। इसमें समान गुण, समान धर्म व समान मनोवृत्तियों वाले साथियों का मिलना दुर्लभ होगा और निर्धन श्रेणी के पुरुषों के लिए यह बहुत जटिल समस्या हो जाएगी।

विवाह संबंध स्थापित करने में पुरुष और स्त्री का अधिकार समान ही होना उचित है अर्थात् जिस प्रकार पुरुष स्त्री को पसंद करना चाहता है, उसी प्रकार स्त्री भी पुरुष को पसंद करने की अधिकारिणी है। ऐसी अवस्था में सामाजिक संतुलन ठीक रहेगा और पति-पत्नी के मध्य मैत्री संबंध स्थापित होगा। इस विषय में स्त्रियों के अधिकार पुरुषों से भी अधिक हैं। स्त्रियाँ अपने लिए वर चुनने के लिए स्वयंवर करती थीं, यह कहा जा चुका है, पर पुरुषों ने अपने लिए स्त्री पसंद करने को स्वयंवर की ही तरह कोई स्त्री सम्मेलन किया हो, ऐसा प्रमाण कहीं नहीं मिलता। इस प्रकार पूर्वकाल में स्त्री की पसंदगी को वरीयता दी जाती थी। फिर भी यह

आवश्यक न था कि जिस पुरुष को स्त्री चुने, वह उसके साथ विवाह करने को बाध्य किया जाए। स्त्री के पसंद करने पर भी यदि पुरुष की इच्छा विवाह करने की नहीं होती तो पुरुष द्वारा विवाह करने से इनकार करना कोई नैतिक या सामाजिक अपराध नहीं माना जाता था, न अब माना जाता है। विवाह के लिए स्त्री और पुरुष दोनों को ही समान अधिकार है। यह नहीं कि पसंद आने के कारण पुरुष स्त्री के साथ और स्त्री पुरुष के साथ विवाह करने के लिए नीति या समाज की ओर से बाध्य हो। विवाह तभी हो सकता है, जब स्त्री-पुरुष एक-दूसरे को पसंद कर लें और एक-दूसरे के साथ विवाह करने के इच्छुक हों। इस विषय में जबरदस्ती को जरा भी स्थान नहीं है।

ग्रंथकारों ने विशेषतः तीन प्रकार के विवाह बताए हैं- देव विवाह, गंधर्व विवाह और राक्षस विवाह। ये तीनों विवाह इस प्रकार हैं- जो विवाह वर और कन्या दोनों की पसंद से हुआ हो, जिसमें वर ने वधू के और वधू ने वर के गुण-दोष पूर्ण रूप से देखकर एक-दूसरे को अपने उपयुक्त समझा हो तथा जिस विवाह के करने से वर और कन्या के माता-पिता आदि अभिभावक भी प्रसन्न हों, जो विवाह रूप, गुण, स्वभाव आदि की समानता से विधि और साक्षीपूर्वक हुआ हो और जिस विवाह में दांपत्य कलह का भय न हो और जो विवाह विषयभोग के ही उद्देश्य से नहीं, किंतु विश्वमैत्री के आदर्श तक पहुँचने के लक्ष्य से किया गया हो, उसे देव विवाह कहते हैं। यही विवाह सर्वोत्तम माना जाता है।

जिस विवाह में वर ने कन्या को और कन्या ने वर को पसंद कर लिया हो, एक-दूसरे पर मुग्ध हो गए हों, किंतु माता-पिता आदि अभिभावक की स्वीकृति के बिना ही एक-दूसरे को स्वीकार कर लिया हो एवं जिसमें देश प्रचलित विवाह विधि पूरी न की गई हो, उसे गंधर्व विवाह कहते हैं। यह विवाह देव विवाह की अपेक्षा मध्यम और राक्षस विवाह की अपेक्षा अच्छा माना जाता है।

राक्षस-विवाह उसे कहते हैं, जिसमें वर और कन्या एक-दूसरे को समान रूप से न चाहते हों, किंतु

एक ही व्यक्ति दूसरे को चाहता हो, जिसमें समानता का ध्यान न रखा गया हो, जो किसी एक की इच्छा और दूसरे की अनिच्छापूर्वक जबरदस्ती या अभिभावकों की स्वार्थलोलुपता से हुआ हो और जिसमें देश प्रचलित उत्तम विवाह की विधि को ठुकराया गया हो तथा वैवाहिक नियम भंग किए गए हों। यह विवाह उक्त दोनों विवाहों से निकृष्ट माना जाता है।

पहले बताया जा चुका है कि कम से कम आयु का चौथा भाग यानी पच्चीस और सोलह वर्ष की अवस्था तक के पुरुष-स्त्री को अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करना ही चाहिए। यह अवस्था सफल गृहस्थ जीवन के लिए शरीर और मन को पूर्ण विकसित करने

की है। इससे पूर्व मनुष्य की शारीरिक व मानसिक शक्तियों को बल नहीं मिलता।

बाल-विवाह के कुपरिणामों से भारतवर्ष अपरिचित नहीं है। इससे शारीरिक शक्तियों के ह्रास के साथ-साथ स्त्रियों की स्थिति पर बहुत फर्क पड़ता है। विधवाओं की बढ़ती हुई संख्या इसी का परिणाम है। कमजोर व अधिक संतानें कई विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देती हैं। शिक्षण तथा पोषण की समुचित व्यवस्था न होने से वे राष्ट्र की संपत्ति होने के बजाय भारभूत ही सिद्ध होती हैं। पूर्ण परिपक्व अवस्था को प्राप्त होने पर ही पुत्र-पुत्रियों का विवाह करना उचित है।

साधार- श्री जवाहर किरणावली-19 (नारी जीवन)



नव कीर्तिमान का सृजन : अभिमोक्षम्

चित्तौड़गढ़, 10 मई 2024 | जब कोई उच्च कोटि का कार्य प्रथम बार मूर्तरूप में आता है तो वह स्वयं इतिहास बन जाता है। ऐसा ही नव कीर्तिमान सृजित होने जा रहा है चित्तौड़गढ़ में ‘अभिमोक्षम्’ शिविर के रूप में।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में अभिमोक्षम् शिविर का शुभारंभ 10 मई 2024 को हुआ। इस शिविर हेतु प्रारंभ के कुछ ही दिनों में ही 1000 से अधिक जिज्ञासुजनों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवा लिया और शिविर प्रारंभ से एक दिवस पूर्व तक तो रिकॉर्ड कायम करते हुए राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु आदि क्षेत्रों से 3000 से अधिक रजिस्ट्रेशन हो चुके थे।

शिविर हेतु निर्धारित कठोर नियमों एवं बालक-बालिकाओं का उत्साह देखकर हर कोई सुखद आश्चर्य से चकित हो जाता है। इस शिविर में 9 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के अविवाहित युवक-युवतियों को ही प्रवेश दिया गया है, जिन्हें तीन वर्गों क्रमशः 9 से 13, 13 से 18 एवं 18 से 30 वर्ष में अध्ययन कराया जा रहा है। शिविर 25 मई 2024 तक चलेगा और इस दौरान बच्चों को आधुनिक संसाधनों से पूर्ण दूरी रखनी होगी। बच्चों को 16 दिनों तक मोबाइल, चार्जर, नकदी एवं इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से पूर्ण दूरी रखनी होगी। शिविरार्थी बच्चे 16 दिनों तक माता-पिता, दोस्तों एवं परिवार से दूर आध्यात्मिक वातावरण में अपना जीवन निखारेंगे। शिविर में 23 साधु एवं 43 साधियों सहित कुल 70 जैन दर्शन के विद्वत्तजनों का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

सभी शिविरार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ तथा आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की अतीव कृपा हेतु अहोभाव सहित....

-श्रमणोपासक टीम





ग्रंथियाँ

अमृत अमृत अमृत अमृत - विष विष विष विष

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

वासुपूज्य जिन द्विभुवन स्वामी घननामी परनामीरे....

परमात्मा की प्रार्थना भक्तजन करते ही रहते हैं। प्रार्थना का बाह्य रूप तो ठीक है, किंतु उसका वास्तविक मूल्यांकन उसके पीछे रहने वाली आंतरिक भावना के आधार पर ही किया जा सकता है। बाहर से प्रार्थना तो आप कर रहे हैं, किंतु उस समय उसके लक्ष्य के संबंध में आपका क्या विचार और क्या चिंतन चल रहा है, वही अधिक महत्वपूर्ण होता है।

वर्तमान जीवन में कई लोगों के लिए ऐसी कई परिस्थितियाँ सामने आती हैं, जिनसे उनके मन में आक्रोश और असंतोष उभरता रहता है। उस व्यथित अवस्था में जब परमात्मा की प्रार्थना की जाती है तो अनायास ही मन में ऐसी लालसा उठ सकती है कि प्रार्थना करने से उसे सुख-सुविधा की पूर्ण संतोषप्रद सामग्री सुलभ हो जाए। चारों ओर से घबराया हुआ व्यक्ति सोचता है कि परमात्मा सर्वदर्शी हैं तो उनकी प्रार्थना और भक्ति करने से उसकी सभी समस्याओं का सुखकारी समाधान निकल आएगा। ऐसी इच्छा रखते हुए इस प्रकार की मानसिकता वाले व्यक्ति परमात्मा की प्रार्थना और भक्ति करते हैं। क्या ऐसी इच्छा के साथ की जाने वाली प्रार्थना और भक्ति का सही स्वरूप माना जाएगा? क्या ऐसी प्रार्थना और भक्ति जीवन के वास्तविक लक्ष्यों की पूर्ति कर सकेगी? सांसारिक लालसाओं की पूर्ति का संबंध क्या परमात्मा से जोड़ना समुचित होता है? परमात्मा की प्रार्थना मूलतः क्या आत्मा को 'परम' बनाने की प्रेरणा के लिए ही नहीं होती है? अतः प्रार्थना एवं भक्ति के सही स्वरूप पर विचार करना आवश्यक है।

७ प्रार्थना और भक्ति का उद्देश्य

गीता में चार प्रकार के भक्तों का उल्लेख किया गया है - 1. **आर्त-** जो नानाविध कष्टों से पीड़ित एवं व्यथित बनकर परमात्मा की भक्ति करते हैं। 2. **अर्थर्थी-** जो धन, संपत्ति, पद या सुख सामग्री की लालसा को पूरा करने के उद्देश्य से परमात्मा की भक्ति करते हैं। 3. **जिज्ञासु-** जो परमात्मा की भक्ति इस जिज्ञासा और अभिलाषा के साथ करते हैं कि उन्हें नए-नए ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होगा। 4. **ज्ञानी-** जो ज्ञान एवं विवेक के साथ परमात्मा की भक्ति इस हेतु से करते हैं कि उनके स्वरूप को समझकर वे अपनी आत्मा को भी वैसे ही परम पद तक पहुँचा सकें। गीता के अनुसार पहले दो प्रकार के भक्त निम्न कोटि के होते हैं तथा पिछले दो प्रकार के उच्च कोटि के, क्योंकि जिज्ञासु सही विधि से भक्ति के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो ज्ञानी भक्त अपनी भक्ति को उच्च स्तरों तक पहुँचा कर भक्ति की दिव्य महिमा को प्रतिस्थापित करता है।

अभिप्राय यह है कि प्रार्थना और भक्ति का उच्च स्तर वही माना गया है जो लौकिकता से हटकर अलौकिकता की ओर गतिशील बनावे तथा मन को सांसारिक पदार्थों की आसक्ति से दूर ले जाकर आत्म-स्वरूप को समझने तथा उसे निर्मलतर बनाने की ओर आकृष्ट बनावे। सारपूर्ण बात यह है कि जो क्रिया-प्रक्रिया सांसारिक एवं शारीरिक सुखों की कामना से की जाती है, वह निम्न कोटि की कहलाती है और त्याज्य मानी जाती है। इसके विपरीत जिन क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं से आत्मा का स्वरूप ज्ञान जाग्रत हो तथा

जीवन में लोकहित की भावना प्रबल बने वैसी क्रियाएँ-प्रतिक्रियाएँ आदरणीय एवं आचरणीय होती हैं। दर्शन और धर्म के क्षेत्र में ऐसी क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं को ही उच्च कोटि का महत्व दिया जाता है। अतः प्रार्थना एवं भक्ति के उच्च स्तरीय होने की कसौटी भी यही होगी कि उनकी आराधना से आत्म-जागरण कैसा और कितना होता है तथा स्व-पर कल्याण की दिशा में अपना पुरुषार्थ कितने बेग और उत्साह से कार्यरत बनता है। परमात्मा की प्रार्थना और भक्ति करने वाला भक्त जितना अधिक अंतर्मुखी बनेगा, उतनी ही उसकी प्रार्थना और भक्ति को प्रभावशाली मानेंगे।

४ पहले अंतःकरण का संशोधन करें

संसार के समस्त प्राणियों में राजा रूप श्रेष्ठ प्राणी मानव होता है। मानव तन एवं जीवन में अपूर्व क्षमता ऐसी प्रभावशाली होती है, जैसी कि किसी भी अन्य प्राणी में नहीं होती। यदि मानव अपने तन तथा जीवन की गति को संशोधित करे और उसे सुव्यवस्थित बना ले तो वह उच्चतम विकास भी साध सकता है। लेकिन उसके तन और मन जब तक रोगी बने रहेंगे और स्वस्थ नहीं होंगे, तब तक वह आत्मिक विकास तो क्या कुछ उल्लेखनीय कार्य भी नहीं कर पाएगा। मानव चाहता तो यह अवश्य है कि वह मानसिक और शारीरिक रूप से तंदुरुस्त रहे और उसके लिए खाने, पीने, औषधि आदि का भी वह पूरा ध्यान रखता है, किंतु उसे उस विधि का ज्ञान नहीं होता जिसके प्रभाव से स्वस्थता भीतर से उत्पन्न हो। यही कारण है कि उसे रोग से छुटकारा नहीं मिलता है।

तन, मन, जीवन की अस्वस्थता को दूर करने के लिए अंतःकरण और भीतरी पक्ष का संशोधन आवश्यक है। संशोधन का यही आशय होगा कि वहाँ पहले से रोग के कीटाणु और विकार फैले हुए हैं। विकार-मुक्ति के बिना स्वस्थता आती नहीं, इस कारण आंतरिकता के विकारों को दूर करने के पुरुषार्थ को प्राथमिकता देनी होगी। अब जहाँ के विकार दूर करने हैं, उस स्थान को तो पहले देखना और जाँचना पड़ेगा, जिसका अर्थ हुआ कि उस स्थान तक पहुँचना होगा।

अब प्रश्न आ गया है कि उस स्थान यानी अपने ही अंतःकरण तक पहुँचा जाए। उसमें प्रविष्ट होकर वहाँ की अस्वच्छता की, दोषों और विकारों की जाँच की जाए तथा यह सोचा जाए कि किस प्रकार उस स्थल को स्वच्छ और स्वस्थ बना सकते हैं। यों यह सब आसान नहीं भी है और यों बहुत आसान भी है। केवल दृष्टि भेद की बात है। चित्त की एकाग्रता को थोड़ा-सा पैना बनावें और लगन लगा लें तो अपनी आंतरिकता में प्रवेश, अवलोकन तथा संशोधन सभी प्रक्रियाओं में कोई कठिनाई नहीं। हम अपने भीतर के शत्रुओं को सरलता से पहचान सकते हैं और यह जान सकते हैं कि वे किस प्रकार हमारी वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों को दूषित एवं विकृत बनाकर हमारे तन, मन, जीवन को अस्वस्थ एवं रुग्ण बनाए हुए हैं।

आइए, इस विषय पर थोड़ा चिंतन करें।

५ क्रोध से सर्वनाश

संसार के विषय-कषाय चक्र में भटकती हुई आत्मा नाना प्रकार के दूषणों एवं विकारों को अपने भीतर जमा करती रहती है और वे ही आत्म-स्वरूप को कलुषित बनाकर तन, मन, जीवन को रागी बना देते हैं। इस रूप में ये दूषण और विकार आत्मोन्नति के शत्रु बन जाते हैं। अतः इन्हीं शत्रुओं को जीतने की जरूरत पड़ती है।

सांसारिक आत्माओं के साथ यथार्थ स्थिति यह रहती है कि ये शत्रु प्रतिपल आत्मा को रौंदते रहते हैं और उनके दमन चक्र में पिसती हुई आत्मा संज्ञाहीन-सी बनी अपने वास्तविक विकास से वंचित रहती है। इन विकारों ने, जिन्होंने आज इस आत्मा को जीत रखा है, जब यह आत्मा जाग्रत बन जाए तो उसे इन्हीं विकारों को जीतना होगा। ये विकार ही यथार्थ में उस आत्मा के शत्रु हैं। आत्मा के शत्रुओं को पूर्णतः पराजित कर लेने के बाद ही तो अरिहंत पद प्राप्त होता है।

इन आत्म-शत्रुओं में एक महाबली शत्रु होता है क्रोध। इस क्रोध के विकार से सर्वनाश होता है। इस दृष्टि से इसके रूप और नुकसान पर विचार करें। क्रोध ही बड़ा दूषण, बड़ा विकार और बड़ा रोग है। जब तक मनुष्य के मन और वचन को दूषण देने वाला तथा तन का शोषण करने वाला यह शत्रु मनुष्य के भीतर बैठा

रहता है और रक्त पीता रहता है, तब तक मनुष्य को न आंतरिक स्वास्थ्य लाभ होता है और न ही उसका बाह्य शारीरिक स्वास्थ्य ही अच्छा रह सकता है। सच पूछें तो क्रोध की दशा में मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और शारीरिक स्थिति रुग्ण बन जाती है। बाहर के शत्रु का कुछ भी बिगड़े या न बिगड़े अथवा बाहर कोई शत्रु भी हो या नहीं, किंतु जो क्रोध के वशीभूत हो जाता है, उसके लिए तो यह क्रोध ही महाशत्रु साबित होता है। क्रोध करने वाले को उसका क्रोध ही पहले कुचल देता है। इतना ही नहीं, अगर क्रोध बहुत ही अनियंत्रित दशा में फैलता जाए तो वह मनुष्य के जीवन को ही खत्म कर देता है। अधिकांश आत्महत्याएँ अथवा अन्य अपराध क्रोध के आवेग में ही होते हैं, क्योंकि एक क्रोधी मनुष्य अपना सारा विवेक खोकर अंधे जैसा हो जाता है।

इसी क्रोध रूपी शत्रु को जीतकर साधक अरिहंत और वीतरागी बनता है। गीता में अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछते हैं कि हे प्रभो! मेरे न चाहने पर भी पाप की तरफ ले जाने वाला ऐसा कौनसा बलशाली शत्रु है जो निरंतर मुझे पाप की दिशा में खींचता रहता है? तब कर्मयोगी श्रीकृष्ण कहते हैं- क्रोध अपना बहुत बड़ा शत्रु होता है और ऐसा ही होता है काम, अतः इन्हें बलशाली शत्रु समझकर इनसे सदा बचते हुए चलना चाहिए।

क्रोध सर्वनाश करता है। बाहर का शत्रु तो मनुष्य के शरीर पर आघात पहुँचाता है, किंतु अंदर का शत्रु क्रोध शरीर का रक्त पीकर उसे जर्जर करता है, मन को पागल बनाकर दिशाहीन भटकाव में डाल देता है तो आत्म स्वरूप को कलंक-कालिमा से ढक देता है। यह तन, मन और जीवन का सभी प्रकार से नाश कर देता है। इसी कारण क्रोध को सर्वनाशी कहा गया है।

४ क्रोध पर नियंत्रण का महत्व

क्रोध की स्थिति मनुष्य को दुर्गति की ओर ले जाने वाली है क्योंकि उससे मनुष्य का वर्तमान भी बिगड़ता है तो भविष्य भी बिगड़ जाता है। इसलिए यदि क्रोध पर नियंत्रण करना है तथा धीरे-धीरे इसे अपने जीवन से नष्ट कर देना है तो वणिक बुद्धि के अनुसार लाभालाभ की दृष्टि से विचार करना होगा।

जब कोई व्यक्ति क्रोधावस्था में होता है तब उसके शरीर का रक्त काफी अधिक मात्रा में जल जाता है। वैज्ञानिकों ने भौतिक अनुसंधान के आधार पर एक व्यक्ति पर प्रयोग किए। उसकी प्रशांतावस्था में उसके रक्त का माप किया व रक्त के तत्त्वों की जाँच की। उसकी क्रोधावस्था में फिर से उसके रक्त का माप किया गया तथा रक्त के तत्त्वों की जाँच की गई। फिर दोनों अवस्थाओं की तुलना की तो पता चला कि एक बार के क्रोध में करीब एक पौंड रक्त कम हो गया। यही नहीं, क्रोध के बाद रक्त में एक प्रकार के विष का अस्तित्व भी पाया गया।

अब व्यक्ति क्रोध तो करता रहता है और समझता नहीं है कि उसकी मानसिक व शारीरिक शक्ति क्यों निरंतर क्षीण होती चली जा रही है। फिर डॉक्टर के पास जाता है और कमजोरी की शिकायत करता है। तब उसे ग्लूकोज दिया जाता है और दशा गंभीर हो तो खून भी दिया जाता है। कई बार फिर भी स्थिति संभलती नहीं है। यदि यह रहस्य पहले से जान लेते कि क्रोध किस प्रकार मानसिकता को असंतुलित बना देता है और शरीर के रक्त को कितना जला देता है। यदि पहले ही क्रोध पर नियंत्रण कर लेते तो तन-मन की ऐसी हानि को बचा सकते थे।

मैं पूछता हूँ कि क्या अब भी आप क्रोध का त्याग करने के लिए तैयार नहीं हैं? सर्वनाश करने वाले क्रोध का नाश करने के लिए तो तैयार हो जाइए! क्रोध कर-कर के आप अपना खून जला सकते हैं, किंतु किसी गरीब, असहाय के लिए ऑपरेशन के वक्त खून देना हो तो शायद तैयार नहीं होंगे। जरा विचारिए कि आप अपने ही शरीर में क्रोध कर-कर के मारक विष पैदा कर रहे हैं जो आपके लिए हानिकारक हो सकता है। विष से भी क्रोध अधिक मारक होता है, फिर भी मानव गाढ़ी नींद में सोया है और क्रोध पर नियंत्रण पाने के सफल पुरुषार्थ से कतराता है।

यदि कोई आपको कहे कि आप एक हजार सूपए ले लो और मेरे से एक जहर का इंजेक्शन लगवा लो जिससे एकदम मरोगे नहीं। शरीर की साधारण हानि ही होगी। क्या आप तैयार हो जाएँगे? कभी नहीं, तुरंत इनकार कर देंगे, बल्कि उसे अपने पास से भगा ही देंगे। इसी

प्रकार क्रोध की हानि से आपको सावचेत होना चाहिए। क्रोध उस जहर के इंजेक्शन से भी ज्यादा घातक होता है और इस क्रोध को आप धर्म के चिंतन से दूर कर सकते हैं, दबा सकते हैं और इस शत्रु को जीत सकते हैं।

क्रोध का नियंत्रण और दमन करने के लिए आपकी वैचारिकता जागनी चाहिए तथा मन का संकल्प मजबूत बनना चाहिए। जब क्रोध का मारक स्वरूप जान जाते हैं, फिर उससे बचने का उत्साह भी तो पैदा हो जाना चाहिए।

४ अमृत और विष की ग्रन्थियाँ

इस बीसवीं सदी में जहाँ भाँति-भाँति के भौतिक विज्ञानों का विकास हुआ है, वहाँ मनोविज्ञान की गहराई में भी उत्तरने का प्रयास किया जा रहा है। यह पता लगाया गया है कि शरीर में कई ग्रन्थियाँ ऐसी होती हैं जिनमें से मानसिकता के अनुसार रसस्राव होता है। इन्हें अमृत और विष की ग्रन्थियों का नाम दिया गया है।

जिस समय शरीर में क्रोध का आवेश चढ़ता है, सारे शरीर में प्रकंपन जैसी तीव्र गति होती है। उस समय अमृत-सा रसस्राव करने वाली ग्रन्थियाँ रुक जाती हैं तथा विष का रसस्राव करने वाली ग्रन्थियाँ अधिक सक्रिय हो जाती हैं। वे ग्रन्थियाँ तीव्र रूप से बहने लगती हैं। उनके ही असर से मुँह सूखने लगता है तथा विभिन्न अवयवों में ऐंठन शुरू हो जाती है। विष रस बढ़ने तथा अमृत रस बंद हो जाने का कुप्रभाव सारे शरीर पर तात्कालिक रूप से भी पड़ता है और स्थायी रूप से भी शरीर क्षय होता है।

वर्तमान जीवन में मनुष्य का शरीर और मन क्रोध के कारण रुग्ण बन जाता है। चाहे वह कितना ही सोचे कि मेरा सर्वांगीण विकास हो रहा है, किंतु क्रोध के कारण सारा विकास ही नष्ट नहीं हो जाता है बल्कि विकास के साधन शरीर व माध्यम द्रव्य मन का भी क्षय होता चला जाता है। शारीरिक सुरक्षा मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर होती है। इसलिए अगर आपको अपना मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य प्रिय है तो क्रोध को नष्ट करने के पुरुषार्थ में जुट जाओ। हर वक्त सतर्कता बरतो कि विष की ग्रन्थियों से रसस्राव न हो और रक्त में विकृति न फैले। अमृत की ग्रन्थियाँ रसस्राव करती रहेंगी तो वे स्वास्थ्य को भी बनाए रखेंगी।

४ संतुलन-विधि अपनाइए!

प्रभु महावीर ने अपने आंतरिक शत्रुओं को नष्ट करके आत्मा पर संपूर्ण विजय प्राप्त की तथा परमात्मा बन गए। तब उन्होंने सारे जगत् को भी यही उपदेश दिया कि अपने आत्म-शत्रुओं को नष्ट कीजिए। उस समय उन्होंने भव्यजनों के लिए अपनी प्रथम देशना के रूप में गुफित आचारांग सूत्र में फरमाया कि ‘जो क्रोध को देखता है, वह अभिमान को देखता है, जो अभिमान को देखता है, वह माया को देखता है तथा जो माया को देखता है, वह लोभ को देखता है।’

क्या आशय है इस देशना का? क्रोध, मान, माया और लोभ कषाय की कड़ियाँ हैं। जो एक कड़ी को देखता और जानता है वह दूसरी कड़ियों को भी देख और जान लेता है। जो क्रोध करता है, वह मान की चपेट में भी आता है और जो माया का प्रयोग करता है वह लोभ की लालसा में भी फँसता है। इस कारण जहाँ क्रोध से बचने की सावधानी लानी है, वहाँ मान, माया, लोभ और कषाय के सभी विकारों से बचने की भी सावधानी लानी होगी। यह सावधानी कैसे आएगी? इसके लिए संतुलन-विधि को अपनाने की सलाह दी गई है।

यह संसार विविधताओं से भरा पड़ा है। अच्छाई भी है, बुराई भी है, नदियों के उपजाऊ मैदान भी हैं तो सूखे रेगिस्तान भी हैं। सद्गुणों के अनुपालक व्यक्ति भी हैं तो दुर्गुणों में लिप्त अपराधी भी हैं। साधारण-सी बात से ही समझिए कि सड़क समतल सपाट भी होती है तो सड़क पर चढ़ाव और उतार भी आते हैं। संतुलन की स्थिति को समझने के लिए एक साइकिल चालक का उदाहरण लीजिए। यों साइकिल चलाना पूरी तरह से सही संतुलन पर ही निर्भर करता है। यह हकीकत साइकिल चलाने वाले भली-भाँति समझते होंगे। साइकिल के दोनों पहिए बिना सहारे खड़े नहीं होते, लेकिन जब चलते हैं तो पैडल की मार के मुताबिक वेग से भी चलते हैं, किंतु वे चलते हैं सिर्फ संतुलन पर। यदि चालक का संतुलन जरा-सा भी दाँड़-बाँड़ बिगड़ जाए तो साइकिल और चालक दोनों जमीन पर गिर पड़ेंगे। अतः एक साइकिल चा लक को सदा सावधान

स्थिति में चलना होता है। वहाँ तनिक भी असंतुलन या असावधानी को कोई स्थान नहीं होता।

साइकिल चालक जैसी ही सावधानी को संतुलन-विधि मान सकते हैं। प्रतिपल सावधान रहकर अपने संतुलन का निर्वाह करते हुए वह साइकिल चालक सुरक्षित रूप से मीलों चला जाता है।

४ संतुलन, सावधानी, सफलता

किसी को कहीं भी कोई गति करनी हो या किसी तरह का संघर्ष करना हो तो इन तीन अवस्थाओं पर ध्यान को केंद्रित करना होगा। चाहे वह गति और संघर्ष तन का हो, मन का हो या जीवन का हो। यह गति विचारों की दुनिया में चल रही हो या सामने दिखने वाली सड़क पर। यदि बिना गिरे गंतव्य पर पहुँचना है तो सबसे पहले चाल में संतुलन की जरूरत होगी। इधर या उधर अधिक झुके तो वहीं गिर पड़ेंगे फिर गति या तो अवरुद्ध हो जाएगी या पथभ्रष्ट हो जाएगी। संतुलन तभी बना रह सकेगा जब प्रतिक्षण सावधानी बरती जाएगी तथा संतुलन एवं सावधानी के तालमेल से ही सफलता प्राप्त की जा सकेगी। ये ही तीनों अवस्थाएँ एक सफल संघर्ष के लिए भी आवश्यक होती हैं। चाहे वह संघर्ष बाहर के शत्रुओं के साथ हो या कि आंतरिक शत्रुओं के साथ।

हम यहाँ आंतरिक शत्रुओं के साथ संघर्ष की बात कर रहे हैं। क्रोध आदि विकारों को जीतने के लिए भी संतुलन, सावधानी व सफलता के संयोग की आवश्यकता होती है। समझिए कि यह संतुलन कैसे रखा जाएगा? इसकी विधि क्या होगी?

क्रोध आदि विकार पहले मन से भड़कते हैं, फिर उनका बाहर प्रकटीकरण होता है। तब सामने वाले को समझ में आता है कि आपने क्रोध किया है। तदनंतर क्रोध के दुष्परिणाम अनुभव में आते हैं, जैसे कि सामने वाले पर प्रतिक्रिया होना और घात-प्रतिघात की स्थिति का प्रकटीकरण, अपनी मानसिकता में उत्तेजना से विश्रृंखलता आना, शरीर में प्रकंपन और रक्ताल्पता होना, विष ग्रंथियों का बहना आदि।

संतुलन-विधि का प्रयोग इस रूप में किया जाएगा कि क्रोध के भड़कते ही शीघ्रातिशीघ्र उस पर नियंत्रण पा-

लिया जाए तथा भविष्य के लिए सावधानी कड़ी कर दी जाए। समझिए कि किसी ने आपके साथ ऐसा ही व्यवहार कर दिया, जिससे आप अपने क्रोध को रोक ही नहीं पाए। किंतु पहले से आपने क्रोध के घातक स्वरूप को समझा हुआ है और उसे नियंत्रित रखने का संकल्प भी लिया हुआ है। अतः मन में क्रोध के भड़कते ही आप संतुलन का कोड़ा हाथ में उठा लेंगे और उसे इस तरह मारने लगेंगे कि वह बाहर कर्तव्य प्रकट न हो सके। थोड़ी देर में आप अपनी सावधानी से और वैचारिकता से क्रोध को मन के भीतर ही में दबोच देंगे। उसके बाद अपनी सावधानी का इस प्रकार विकास करते चले जाएँगे कि क्रोध मन में उत्तेजना पैदा न कर सके। संतुलन और सावधानी का यह लाभ होगा कि आपको क्रोध आया है यह सामने वाला जान नहीं सकेगा। इसलिए अपने बुरे व्यवहार पर उसे ही लज्जा आएगी। इसके सिवाय क्रोध के घातक परिणामों के अनुभव से आप भी बच जाएँगे और सामने वाले को भी बचा लेंगे। अपने शरीर को भी पूरी तरह सुरक्षित रखेंगे और धीरे-धीरे मन की क्षति को बचाना भी सीख जाएँगे।

इस प्रकार यह संतुलन-विधि एक सावधान साइकिल चालक की तरह आपके जीवन की गति को भी निर्बाध एवं गतिशील बना देगी।

५ ज्ञान के शक्ति केंद्र की सक्रियता

संतुलन से

क्रोध की उत्तेजना हो या अन्य किसी विकार की उत्तेजना उसका पहला आक्रमण ज्ञान के शक्ति केंद्र पर होता है। विकार के आवेश से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट और नष्ट हो जाती है। तब वह आवेश हिंसापूर्ण भी हो सकता है। क्रोध से कौपता हुआ मनुष्य कब सामने वाले पर किसी घातक शस्त्र का वार कर देता है इसका पता ही नहीं चलता। मेवाड़ की एक सत्य घटना है कि एक पत्थर की शिला को लेकर दो भाइयों में विवाद छिड़ गया। वह शिला भी मंदिर की थी, किंतु दोनों के सिर पर क्रोध का भूत ऐसा चढ़ा कि वहीं एक-दूसरे की जीवन लीला समाप्त करके शांत हो गए।

किसी भी समस्या का समाधान कभी क्रोध से

तो निकलता ही नहीं है, समाधान सदा शांत बुद्धि से निकलता है और क्रोध की उत्तेजना में बुद्धि कभी शांत रहती नहीं। इस कारण विकारों की उत्तेजना के समय यदि सही संतुलन-विधि का संकल्पपूर्वक प्रयोग किया जाए तो ज्ञान के शक्ति केंद्रों की सक्रियता को बनाए रखा जा सकता है एवं समष्टिगत समस्या का शांत बुद्धि से सुंदर समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है।

चाहे गृहस्थावस्था का कोई कार्य हो या आत्मिक साधना का कार्य, वह विकारग्रस्त हो जाने पर कभी नहीं सुधरता। क्रोध किया तो क्या ग्राहक व्यापारी के पास आएगा और बीमार डॉक्टर के पास? और आत्मिक साधना के कार्य में तो विकार का कोई स्थान ही नहीं है, ध्यान रखिए कि आग से आग कभी नहीं बुझती है,

वह पानी से बुझती है। क्रोध से क्रोध नष्ट नहीं होगा, उसके लिए क्षमा का शीतल जल चाहिए और क्षमा आएगी संतुलन-विधि से।

संतुलन व सावधानी के साथ चाहे सामने अनीति हो, क्रोध हो या कोई भी अन्य विकार उसका प्रतिकार शांतिपूर्वक किया जा सकता है, वह भी बिना तन, मन और जीवन को किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचाए। इसलिए यदि आपको परमात्मा की प्रार्थना और भक्ति जिजासु व ज्ञानी भक्त की तरह करनी है तो आप अमृत एवं विष ग्रंथियों की संतुलन-विधि को अपनाइए तथा क्रोध आदि विकारों का दमन कीजिए ताकि आप अपने मानसिक एवं शारीरिक सुस्वास्थ्य के साथ धर्माराधन कर सकें।

साभार- नानेशवाणी-50 (आध्यात्म का कुआँ)



प्रश्नोत्तरी

ज्ञान से चिलता जीवन

प्रश्न 1. आस है, विश्वास है, तृप्ति है, प्यास है। कौन?

उत्तर

प्रश्न 2. जब राजा सत्य नहीं समझा, तब उसे दया आई। यह कौनसे सूत्र में वर्णित है?

उत्तर

प्रश्न 3. हर बात का उलटा मतलब कौन निकालते हैं?

उत्तर

प्रश्न 4. चंपानगरी के राजा और मंत्री का नाम लिखिए।

उत्तर

प्रश्न 5. जो जैसे लोगों के बीच पला, बढ़ा, वैसी ही प्रवृत्तियाँ करने का क्या कारण है?

उत्तर

प्रश्न 6. प्राकृतिक रूप से मानव कौनसा प्राणी है?

उत्तर

प्रश्न 7. वर्षातप की शुरुआत किससे हुई?

उत्तर

प्रश्न 8. किनका दिमाग जल्दी गरम होता है?

उत्तर

प्रश्न 9. समझाने से पहले क्या सीखना चाहिए?

उत्तर

प्रश्न 10. कुव्यसन कितने हैं? नाम लिखिए।

उत्तर

पेज सं.:

नोट :-

- सभी प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखने हैं।
- उत्तर इसी अंक में से लिखने हैं।
- उत्तर के साथ कोष्ठक में पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।

दिनांक 03 से 05 जून 2024 के बीच WhatsApp
9314055390 पर प्राप्त प्रत्युत्तर ही स्वीकार्य होंगे।



लक्ष्य-संधान

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

जय जय जय जय भगवान्!

तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ, ऐसा हो संधान।

सिद्ध भगवान की स्तुति भव्य आत्माओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सिद्ध स्वरूप ही आत्मा का, मूल आत्मा का शुद्ध स्वरूप है। वही रूप जब उसी के सामने उजागर होता है और जब वह उससे अपनी तुलना करता है तब उसे बोध हो जाता है कि वस्तुतः मेरा स्वरूप इस कर्म और काया से नहीं है, मोह और माया की वीथियों में नहीं है। राग-द्वेष के गली-कूचों में भी नहीं है। मेरा स्वभाव निरंजन-निराकार है।

पर आज हीं तो यह स्तुति नहीं की। प्रतिदिन ऐसा प्रसंग बनता है। अनेक भाई भक्तामर स्तोत्र का पाठ करते हैं। प्रार्थना में तीर्थकर देवों, सिद्ध भगवान आदि की स्तुति का प्रसंग बनता है। फिर क्या कारण है कि हम कसौटी पर खरे उतर नहीं पाए? साबुन रगड़ते चले गए, रगड़ते चले गए, फिर भी कपड़ा साफ नहीं हुआ?

यह भी विचार आएगा कि पूरा टब पानी खत्म हो गया पर मैल नहीं निकला, जबकि विज्ञापन में पढ़ा था और सुना भी था कि एक बार में मैल साफ हो जाएगा। पर अभी तक क्यों नहीं हुआ? जबकि साबुन और पाउडर पर इतना पैसा खर्च किया था। तब स्थिति पर विचार करें कि क्या कारण है कि मन का मैल साफ नहीं हो पा रहा है। प्रार्थनाएँ रटते रहने से या साबुन रगड़ते रहने से तो मन या कपड़े की सफाई नहीं हो रही है।

यदि एक बालक-आपकी ही संतान मान लीजिए, एक, दो, तीन वर्ष तक एक ही कक्षा में पढ़ता रहे, उत्तीर्ण न हो तो क्या उसका कारण आप तलाश नहीं करोगे, क्यों वह उत्तीर्ण नहीं होता, इसकी खोज तो चालू करोगे ही?

इसी प्रकार शक्कर की कीमत चुकाकर जो पदार्थ घर में लाए, उसे चाय में या शरबत में डाला, पर मिठास नहीं आई तो क्या दुकानदार के पास नहीं जाओगे कि यह क्या दे दिया? बोरे में यदि अवशेष पदार्थ है तो हाथ में लेकर चखोगे भी और यदि बोरी के पदार्थ में स्वाद आ गया तो उसी से संतोष मानोगे या कुछ कहोगे भी?

तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ, ऐसा हो वरदान

'तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ' के भाव को समझकर खोज करो कि क्या कारण है कि हमारा परमात्म-स्वरूप उजागर नहीं हो रहा है? जब बाहर की खोज बहुत कर ली, पर अंतर को नहीं खोजा तब फिर भले प्रार्थना भक्ति करते चले जाएँ तो क्या उनसे हमारे मन के कपड़े पर आया मैल धुल जाएगा?

पहले मैंने कहीं साबुन रगड़ने की बात, अब कह रहा हूँ अलमारी में कपड़े के साथ साबुन रख दिया या रातभर साबुन को मलिन कपड़े में लपेट कर रख दिया तो कपड़ा साफ हो जाएगा क्या? मान लीजिए बहन या घर में काम करने वाले नौकर ऐसा करें और कपड़ा साफ न हो तो क्या विचार नहीं आएगा कि अरे! सारी रात कपड़े में साबुन लपेट कर रखा फिर भी कपड़ा साफ नहीं हुआ? वह भी आश्चर्य करेगा। और ऐसी बात यदि आपसे वह कहता है

तो आप क्या उससे नहीं कहेंगे कि तू भी बुद्धिमान निकला, कपड़े में साबुन लपेटने मात्र से क्या वह साफ हो जाएगा?

हमारे साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। हम भी सिद्ध की स्तुति करते चले आ रहे हैं, धर्म की साधना-आराधना करते चले जा रहे हैं, किंतु हमारी आत्मा साफ नहीं हो रही है। क्यों, इस पर कभी चिंतन किया? जैसे साबुन लपेट कर रखा कपड़ा या साबुन पास में रखा तो कपड़ा साफ नहीं होगा वैसे ही धर्म को लपेटकर रख लिया तो भीतरी शुद्धि नहीं होगी। कहा गया है- ‘धर्मो मुद्रस्य चिठ्ठिः’ जहाँ शुद्ध अवस्था होती है वहाँ धर्म टिकता है। गंदगी के स्थान पर अथवा जहाँ अशुचि हो वहाँ भक्तामर करने बैठो तो मन मानेगा क्या? जब गंदगी में भक्तामर का उच्चारण करना भी नहीं चाहते हो, तब वहाँ धर्म का निवास कैसे हो सकता है? इसलिए पहले हृदय की शुद्धि करो। जहाँ वक्रता है, टेढ़ापन है, वहाँ धर्म की साधना, आराधना न भूतो न भविष्यति। जब तक शुद्धि न हो, धर्म टिक नहीं पाएगा।

आप झुर्रियाँ छिपाने के लिए मेकअप करते हैं, चेहरे पर रनो पाउडर खूब मलते हैं, उससे थोड़ी देर के लिए भले चेहरा सुंदर दिखने लगे, पर क्या वास्तव में सुंदरता आ जाती है? आजकल ऐसे पदार्थ खूब चले हैं जिनसे सफेद बाल काले हो जाते हैं। पर क्या उससे शरीर में जवानी आ जाएगी? इस प्रकार रूप संवारकर क्या दिखाना चाहते हैं हम दुनिया को? कितनी देर टिकेगी यह कृत्रिमता? पाउडर का स्थायी प्रभाव नहीं होता। ऊपरी शृंगार अधिक देर नहीं टिकता।

इसमें पानी भरा है यह दिखलाने के लिए मिट्टी का एक घड़ा थोड़ी देर पानी में डूबो दिया जाए तो उसका गीलापन कब तक रहेगा? तभी तक जब तक धूप या हवा न लगे। किंतु यदि वह घड़ा भरा हो तो क्या आवश्यकता है उसे नदी में ले जाने की? वह रिसने से या टपकने से अपने आप बता देगा कि मैं भरा हूँ।

एक किसान सोचता है- पड़ोसी की तरह मैं भी बराबर खेती करता हूँ। हल-बैल चलाना आदि सारी क्रियाएँ करता हूँ तो पड़ोसी का खेत तो अंकुरित हो गया, पर मैंने भी हल जोता था, खाद-पानी दिया था, फिर मेरा खेत खाली क्यों? पड़ोसी को उसने अपना

हाल बताया। पड़ोसी ने पूछा- भाई! तुमने सब कुछ मेरे जैसा किया, पर इसमें बीज डाले थे या नहीं? वह कहता है- बीज तो मैंने नहीं डाले। इस पर पड़ोसी किसान कहता है- तब तुम्हारा खेत अंकुरित कैसे होगा?

बंधुओ! अब मैं आप से पूछ लूँ कि इतने दिनों आपने सिद्ध-स्तुति की, पर हरापन क्यों नहीं आया? तब समझ लीजिए कि कठपुतली के खेल के समान कुछ क्षण किसी को राजा-प्रजा बना दिया तो क्या हो जाएगा कल्याण? बच्चों को समझाने के लिए वह खेल है, पर उसी खेल के समान सामायिक आदि के उपकरण धारण कर लिए तो क्या वह कठपुतली का खेल नहीं हो जाएगा? आपके लिए क्या, अपने लिए भी कहता हूँ कि विचार करें कि यह वेश पहनकर हम कोई ड्रामा तो नहीं कर रहे हैं? कठपुतली का खेल तो नहीं कर रहे हैं? समभावों का प्रवेश हमारे भीतर हुआ या नहीं?

पूज्य गुरुदेव एक दृष्टांत दिया करते हैं- एक मोतीलाल सेठ थे, जिनके दो पत्नियाँ थीं। बड़ी जी प्रतिदिन एक सौ आठ मणियों में मोतीलाल सेठ, मोतीलाल सेठ मणियाँ गुड़काती थीं। एक बार मोतीलाल सेठ गाँव गए। पुनः लैटे तो दोपहर के 12 बज रहे थे। जेठ की दुपहरी में दरवाजे के पास बड़ी जी माला फेर रही थीं। थके-हारे मोतीलाल सेठ दरवाजे पर दस्तक दे रहे थे। आवाज सुनकर बड़ी जी बोली- ठहरो, पहले मैं आपके नाम की माला पूरी कर लूँ, फिर दरवाजा खोलूँगी। विचार कीजिए कि क्या वह सेठ जी की कृपापात्र बन सकती थी? इधर लौड़ी जी घर में काम कर रही थी। वह हाथ का काम छोड़कर आई, दरवाजा खोला, हाथ से सामान लिया, कुछ देर बाद ठंडे जल की ज्ञारी भर लाई और सेठ जी की सेवा शुश्रूषा में जुट गई। उसे सुबह से शाम तक काम से फुरसत नहीं थी। अतः वह एक माला भी नहीं फेर सकती थी, पर सेठ जी की सेवा में सदा हाजिर रहती थी। सोचिए कि मोतीलाल जी किस पर राजी होंगे? सेवा करने वाले के प्रति राग-भाव और सेवा न करने वाले के प्रति संवेदना भी उत्पन्न न हो, ऐसा हो सकता है। कुछ ऐसी ही स्थिति हमारी भी है। हम भी नाम स्मरण करते चले जाते हैं, पर अरिहंत तत्त्व का सार क्या है, यह समझने का प्रयास नहीं करते। इस पर

चिंतन नहीं करेंगे तो जीवन व्यर्थ चला जाएगा। अब तो बहुत गई, थोड़ी रही है। उसमें भी सुध-बुध ले ली, सावधान हो गए, सजग हो गए तो जीवन सुधर जाएगा, अन्यथा ये भव करते ही रह जाएँगे।

कपड़े में साबुन रखने के समान नाम लिया, पर नाम का रसायन भीतर नहीं पहुँचा तो जो हम कहते हैं- ‘**एसो पंचवमोतकारो, सत्पावप्पणासणो**’ तो क्या हमारे पापों का नाश हो जाएगा? नहीं, उच्चारण मात्र से पापों का नाश नहीं होगा, उसे तो शरीर रूपी कपड़े में रगड़ना, रमाना होगा। किंतु हो रहा है विपरीत, हम तो उन्हीं राग-द्वेष की ग्रथियों में उलझते चले जा रहे हैं, जिनसे मुक्त होना आवश्यक है। ईर्ष्या और डाह से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं। समझ लेने की बात यह है कि आप किस मानसिकता में जी रहे हैं और क्या कर रहे हैं, इसकी कसौटी तो आपके ही पास है। दूसरा कसकर निर्णय नहीं कर सकता कि आपकी भावना क्या रही है। यह निर्णय तो आपको ही अपने हृदय की कसौटी पर कसकर करना होगा। हम जानते हैं कि थर्मामीटर जिसके लगाया जाएगा उसी का ताप मालूम होगा और वह तो फिर भी दूसरे अनुभव कर सकते हैं, किंतु भावना की बात तो यह मन का थर्मामीटर ही जान पाएगा, इसका अनुमान कोई अन्य कर भी नहीं पाएगा।

शास्त्र वचन है- ‘**सत्वेसि जीवियं पियं**’, सभी को जीवन प्रिय है। यदि राग, द्वेष, कुटिल व्यवहार लेकर चलने वाले को भी अच्छा मानकर चलेंगे तो ऐसी मानसिकता का कभी-भी अच्छा प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। इसके परिणाम तो स्वयं के लिए भी अहितकर होंगे।

बंधुओ! क्या कहूँ इस नाम को? रसायन को मुँह में रखकर चल रहे हैं, साबुन लपेटने के समान। रूटिन से सामायिक, सांत्वत्सरिक प्रतिक्रिया आदि यदि दिनचर्या की तरह करते चले जा रहे हैं तो भीतरी गंदगी साफ होने वाली नहीं है। जैसे रुई लपेटी आग ज्यादा देर शांत रहने वाली नहीं होती। जैसे ही हवा-आँधी चलती है वह प्रज्वलित हो जाती है, वैसा ही विषय वासनाओं के साथ भी होता है। कुछ देर अग्नि पर राख डाल दें, पर इससे वह शांत नहीं होगी। यही स्थिति भावना की है। उसका परिणाम तो मिलता ही है।

युगद्रष्टा, युगपुरुष आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. फरमाया करते थे- एक बहन पड़ोसी के घर जाती है। किसी विशिष्ट नाम के संबोधन से नाराज हो जाती और उलाहना देती कि इस नाम से मुझे संबोधित क्यों किया जाता है? उस बहन के पति का नाम था ठनठनपाल। अतः इस संबोधन से वह नाराज हो जाती थी। ह्यालांकि सामायिक क्रिया करती थी, पर भीतर समभाव नहीं आया था। भाव आता कि ये लोग मुझे ऐसा क्यों कहते हैं? घर आई, पति से कहा- ‘नाम बदलिए।’ पति ने कहा- ‘क्या फर्क पड़ता है नाम से? तुम्हें किस बात की कर्मी पड़ रही है?’ पत्नी ने कहा- ‘कुछ भी हो, मुझे यह नाम अच्छा नहीं लग रहा है, बदलिए।’ पति- ‘कैसे बदल लूँ, सारी फर्में इसी नाम से चल रही हैं।’ दोनों में काफी विवाद हो गया। पत्नी ने क्रोध में कह दिया- ‘नाम नहीं बदलते तो मैं आपके साथ नहीं रहती।’ पति को बुरा लगा, उसने भी पलट कर कह दिया- ‘मत रह, यह तो कोई कारण नहीं है। बिना कारण तुनक मिजाजी घर छोड़ने का कारण नहीं है। आज कहती है नाम बदलो नहीं तो घर छोड़ दँगी। कभी कहेंगी दुकान बदलो, फर्म बदलो। ऐसी तुनक मिजाजी का कोई कारण नहीं होता।’

श्रीमती ठनठनपाल जी के समान यदि जीवन में समभाव के रसायन का प्रवेश नहीं हो तो यहीं दशा होती है। ठनठनपाल जी के बहुत समझाने, खूब मनाने पर भी वह नहीं मानी और घर छोड़कर जाने लगी। जाते-जाते विचार किया- ‘क्या करूँ, कहाँ जाऊँ?’ पीहर याद आया। घर में न चले तो औरत की दौड़ कहाँ तक होती है? पीहर तक और आपकी दौड़ ? स्थानक तक। मियां की दौड़ मस्जिद तक।

मन में कथा रच ही रही थी पीहर वालों से कहने के लिए। क्योंकि नाम तो कोई कारण नहीं होता तुनक मिजाजी का। कथा गढ़ती चल रही थी और राह में मुर्दा ले जाया जाता मिला। राम नाम सत् है.... सभी रूटिन से बोल रहे थे। वस्तुतः इस तथ्य पर ही यदि चिंतन बन जाए तो भी आँखें खुल सकती हैं, क्योंकि इसी में सारभूत बात रही है। आप किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर मत समझना। कभी-कभी व्यक्ति के नाम से पकड़ लेते हैं कि महाराज का नाम राम है तो ये अपनी बात कह रहे हैं। ‘**रमते योगिबां यस्मिन् इति रामः**’

जिसमें योगी लोग रमण करते हैं, वह राम है। योगी किसमें रमण करते हैं? आत्मा में। आत्मा का नाम राम है। वही सत् है और उसी सत् से मुगत है। केवल मुँह से बोलते चले जाते हैं, वे तत्त्व नहीं समझते। यही हो रहा था, लोग राम नाम लेते चले जा रहे थे और पीछे परिजन मृतक अमरचंद जी का नाम लेकर रो रहे थे। विचार चला अमर भी मरता है क्या? पीहर का मार्ग भूली। दूसरे राहगीर को देखा- उसका नाम था धनपाल। धन की रक्षा सुरक्षा करे, पर इसके पास मात्र फटी लंगोटी, हाथ में लकड़ी, ढोर चरा रहा है! और आगे चली तो कंडे बीनती बहन लक्ष्मी बाई को देखा। चिंतन बना- क्या बात है? अमर भी मर रहा है, धनपाल ढोर चरा रहा है, लक्ष्मी कंडे बीन रही है....। यह संसार की क्या स्थिति है? उसके मन में सहज ही कविता के ये बोल उठे -

**अमर मरता मैंबे देखा, ढोर चरावे धनपाल।
छाणा बीणती लक्ष्मीदेवी, धन-धन ठगठनपाल॥**

म्हरा मदन गोपाल-2॥

बंगला में एक कहावत है- ‘ठेकला बुद्धि काज दे’ केवल ग्रंथ पढ़ लेने से बुद्धि की बुद्धि नहीं होती, ठोकर लगने पर होती है। वह सोचने लगी- नाम ही तो ठनठनपाल है, बाकी तो सब कुछ ठीक है। सद्बुद्धि आ गई और वह पुनः घर लौट आई।

बंधुओ! जब तक व्यक्ति उस अनुभूति से न गुजरे और किसी के कहने पर तुनक मिजाजी बन जाए तो उसका हित नहीं हो सकता। किसी ने पत्थर फेंका और तुनक गए तो समझ लीजिए वह रसायन भीतर में पैदा नहीं हुआ। अभी तक तो ऐसी ही स्थिति है जैसे कपड़े में साबुन लपेटना या धर्म के बीज नहीं बोकर केवल जमीन पोली करना। इस स्थिति में न तो कपड़ा साफ होगा न ही खेत में अंकुर आ पाएँगो। तो बंधुओ! सिद्ध-स्तुति करते हुए कहा गया है- ‘तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ।’

तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ, एक यही संधान। यह मार्ग यदि हम अपना लें और इसी पर निरंतर आगे बढ़ते चले जाएँ तो हमारा सहज ही उद्धार हो जाए।

कोई भी वैज्ञानिक अपनी माता की कुक्षी से वैज्ञानिक पैदा नहीं हुआ है। ऐसे-ऐसे वैज्ञानिक भी हुए हैं जो एक-एक क्लास में 2-3 बार फेल हो गए। मास्टर

ने उनकी माँ को हिदायत भी दे दी- ‘तुम्हारा बेटा पढ़ नहीं पाएगा....।’ माँ की आँखों के दो आँसुओं ने जिसके जीवन को इतना परिवर्तित किया, ये बल्ब उसी वैज्ञानिक की प्रथम देन है। ऐसे वैज्ञानिकों का पूर्व इतिहास पढ़ो तो पता चले कि कैसे-कैसे उनके जीवन में परिवर्तन आए। कहते हैं- ‘जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ’। समुद्र को रत्नाकर कहते हैं क्योंकि उसमें रत्न मिलते हैं। पर कोई व्यक्ति रत्नाकर के ऊपर-ऊपर ही तैरता रहे तो मछलियाँ ही हाथ में आ सकती हैं, रत्न नहीं। वे तो गहराई में पहुँचने पर ही हाथ आएँगे। हम भी इस स्तुति की गहराई में उतरें -

तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ, ऐसा हो संधान।

हम में सिद्ध भगवान समाए हुए हैं। उनकी स्तुति में कहा है- कर्म नहीं, काया नहीं, मोह और माया नहीं। हम हैं कि कर्म-काया तथा मोह-माया में रचे-पचे हैं। यही सिद्ध भगवान और हम में अंतर है। अंतर का कारण है राग-द्रेष। इनके ही कारण ईर्ष्या और अहं पैदा होते हैं। उन्हीं से हम जन्म-मरण की शृंखला बढ़ाते चल रहे हैं।

जैन कुल में जन्म लेने मात्र से निर्वाण (मोक्ष) का टिकट मिलने वाला नहीं है। कल भी मैंने कहा था कि टिकट मिलेगा ईर्ष्या-डाह को छोड़ने से, आचरण जैनत्व के अनुकूल बनाने से। तभी हमारा नाम वैटिंग लिस्ट में आएगा और तभी भावों को सीमित करने की स्थिति आएगी। जहाँ दो बर्तन हो वहाँ आवाज होती है। मारवाड़ में कहावत है- बर्तन होते हैं तो खड़खड़ाते हैं। वैसे ही जहाँ दो भाई होते हैं वहाँ ऊँची-नीची बात भी होती है। ध्यान यह रहना चाहिए कि भीतर गाँठ नहीं बने। भीतर तुनक मिजाजी न बने तभी संधान बुद्धि बन सकती है, जिसकी बात स्तुति में कही गई है। अतः आवश्यक है कि भाई किसी प्रकार की गाँठ हों तो निकाल दें। ठेकला बुद्धि बनेगी, जगेगी तभी जैनत्व के संस्कार जाग्रत होंगे और हमारी चारित्र की खेती लहलहाती चली जाएगी। यही वह स्थिति होगी जिसमें हम सफल संधान कर पाएँगे। ऐसे ही संधान की सिद्धि हमें उस अभेद की स्थिति में पहुँचा देगी, जिसमें सिद्ध भगवान के साथ हम एकाकार हो सकेंगे।

साभार- श्री राम उवाच-6 (मन शुद्धि-परम सिद्धि) ❤️❤️❤️



ऐसी वाणी बोलिए

मधुक वचन

15-16 अप्रैल 2024 अंक से आगे....

‘ऐसी वाणी बोलिए’

धारावाहिक

वाणी पर संयम, नियंत्रण
एवं संतुलन का संदेश देता
है। इस धारावाहिक के
कई शीर्षक भाषा सुधार
हेतु प्रस्तुत किए जा
चुके हैं। ‘मित वचन’
पूर्ण होने के पश्चात्

‘मधुर वचन’

प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप
सभी इन वचनों को जीवन
में उतारेंगे तो निश्चय ही
व्यवहार संतुलन की नई
दिशा प्राप्त करेंगे।
आगे प्रस्तुत है....

मुख्य बातें

- (v) चेक करें कि सामने वाला हमारी बात सुनना चाहता है या नहीं :

कुछ लोगों को हमारी बात में कोई रुचि ही नहीं होती। वे हमारी बात को अनमने ढंग से सुनते हैं। हम बोलते रहते हैं, पर वे इधर-उधर देखते रहते हैं। उनके चेहरे का रंग फीका पड़ जाता है। ऐसी स्थिति में भी यदि हम बोलते ही रहें, तो क्या मतलब ? उन्हें देखकर समझ जाएँ कि वे बोर हो रहे हैं तो Subject बदल दें या अपना तरीका बदल दें या फिर Short में अपनी बात कह दें।

- (vi) पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर बात न करें :

पहले कौन कैसा था, उसने क्या किया था आदि बातों का कचरा दिमाग में रखकर बात न करें। पहले का समय अलग था, माहौल अलग था। उस समय किसी ने गलत कर दिया, तो वो हमेशा ही गलत करेगा जरूरी नहीं है। वो बदल भी तो सकता है। मन में शंका रखकर व्यवहार करने वाला कुछ न कुछ गलत बोल जाता है और उससे सामने वाला पुनः बिगड़ जाता है। अतः शंकालु व्यक्ति की तरह व्यवहार न करें।

- ★ (जाता धर्म कथांग सूत्र में बताया गया है कि दो मित्र मोरनी का अंडा उठाकर लाए। एक को शंका थी कि इसमें मोर है या नहीं, अतः वो उसे बार-बार छेड़ता। परिणामस्वरूप अंडा नष्ट हो गया, जबकि दूसरे ने विश्वास रखा, उसके साथ उचित व्यवहार किया, तो उसे एक सुंदर मोर प्राप्त हुआ।)

‘शंकालु व्यक्ति बार-बार छेड़ता है, इसलिए लोग उससे छिड़ जाते हैं।’

- (vii) समझें :

- ★ ‘अधिकतर लोग समझते कम और समझाते ज्यादा हैं। इसलिए वे सुलझते कम, उलझते ज्यादा हैं।’ इसलिए समझाने से पहले समझना सीखें।

प्रश्न यह है कि समझना क्या है ?

- (A) पहले समझें कि सामने वाले व्यक्ति का स्वभाव कैसा है और वो किस तरीके से बात सुनना पसंद करता है ?

एक ही चाबी से सारे ताले नहीं खुलते, वैसे ही एक ही तरीके से सारे लोग नहीं समझते।

- किसी की सहनशक्ति और धैर्य कम होता है। छोटी-सी बात में ही उनका रोना-धोना चालू हो जाता है। उनके साथ Politely ही बात करें तो ज्यादा अच्छा है।
- कुछ लोग शंकालु होते हैं। हर बात का उलटा मतलब निकालते हैं। इनकी बातों को Seriously लेना उचित नहीं है। इनके साथ मुस्कुराकर सहज रहना और बीच-बीच में इनका समाधान करते रहना ही एक उपाय है।
- कुछ लोग इर्ष्यालु और मान-सम्मान के भ्रष्टे होते हैं। इनका ध्यान इस पर ज्यादा रहता है कि उसे पूछ लिया, मुझे नहीं पूछा। यदि इन्हें जोड़कर रखना है, तो बीच-बीच में पूछ लेना और इनसे मुस्कुराकर बोलना आवश्यक है।
- कुछ लोग हीन भावना से ग्रसित होते हैं। जल्दी हतोत्साहित हो जाते हैं। अतः उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित करना आवश्यक है।
- कुछ लोगों को बात जल्दी समझ में नहीं आती, अतः उन्हें डिटेल में और सरलतापूर्वक समझाना आवश्यक है। इनसे काम कराना है तो झुँझलाने से काम नहीं चलेगा।
- कुछ हठीले होते हैं, जल्दी से नहीं मानते। कई बार ज्यादा समझाने से ये और नहीं मानते। अतः इनके पीछे पढ़ना उचित नहीं है, इन्हें Option देकर इन पर छोड़ देना चाहिए।
- आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार **पित्त प्रकृति** वालों का दिमाग गरम जल्दी होता है। इनका दिमाग ठंडा रहे तो ही बात करना उचित है।

बात प्रकृति वाले किसी चीज को याद भी जल्दी करते हैं और भूल भी जल्दी जाते हैं। इन्हें बड़ी जल्दबाजी रहती है। ये हडबड़ाहट से छटपटाते हैं। इनमें धैर्य कम होता है। अतः इनकी हरकतों को देखकर सहज रहना उचित है। ये अपनी प्रकृति की वजह से वैसा करेंगे।

ऋण प्रकृति वाले हर काम धीरे करते हैं। इन्हें आसानी से गुस्सा नहीं आता। पर जब आता है, तब तेज गुस्सा आता है। उनसे कोई काम कराना है तो पहले से ही मन को समझा लेना आवश्यक है कि जल्दबाजी होगी नहीं, जल्दी सीधेंगे नहीं, जल्दी करेंगे नहीं।

Note - इसी प्रकार से हम लोगों की प्रकृति को समझाकर वे जैसे कंफर्टबल रहते हैं, वैसा व्यवहार करेंगे तो कम समय में अधिक काम कर पाएंगे और हमारी ऊर्जा भी कम खर्च होगी। जिस व्यक्ति को जो तरीका पसंद नहीं है, उससे वैसे बोलेंगे तो वह नाशाज हो जाएगा। फिर उसके पीछे हमारा कितना समय खराब होगा। इससे अच्छा पहले ही शांति रख लें तो बहुत से झंझटों से बच सकते हैं।

(कई बार हमारा Formula Flop भी हो सकता है। Chemist जैसे Formula बदल-बदलकर प्रयोग करता है, वैसे ही हम व्यवहार करते हुए एक-दूसरे को Adjust करने के लिए Formula बदल-बदलकर प्रयोग करते हैं।)

(B) दूसरी बात यह समझें कि उपरोक्त में से हमारा स्वभाव कैसा है?

हमें उसमें परिवर्तन करने का प्रयास करना चाहिए। हो सकता है, हमारी आदत की वजह से हमारे संबंध खराब हो रहे हैं।

Note - इस तरह की मानसिकता अपरिपक्वता का घोतक है, इससे भिन्न परिपक्व व्यक्ति कमज़ोरियों से दूर होता है, वो Adjustable होता है, दो बात सुनकर भी समर्पित रहता है। शंका हो तो खुद समाधान कर लेता है। बातों को दिमाग में बैठाकर नहीं रखता। किसी की बात से उसका आत्मविश्वास डांवाडोल नहीं होता और उसकी खुशी दूसरों पर निर्भर नहीं करती। हम अपनी अपरिपक्वता को जितना दूर करेंगे उतना ही अपने वचन व्यवहार को श्रेष्ठ बना पाएंगे।

- (C) तीसरी बात ये समझें कि जिसे हम हमारा अच्छा व्यवहार (+) समझते हैं, वो आमने वाले को बुरा (-) भी लग सकता है।

उदाहरण - एक माँ अपने बेटे के पीछे-पीछे धूमती है। उसका हर काम कर देती है। उसे कुछ भी करने नहीं देती। दूसरों को गौण करके वो सबसे पहले अपने बेटे का ध्यान रखती है। पर बेटा बात-बात में चिढ़ता है। माँ से दूर भागता है। माँ बेचारी दुःखी होती है कि मैं इसके लिए इतना करती हूँ पर ये विपरीत व्यवहार करता है। इसका कारण यह है कि बेटे का स्वभाव अलग है। वो Self-dependent बनना चाहता है। माँ पीछा नहीं छोड़ती। वह चाहता है कि मेरा ध्यान मत रखे, दूसरों का ध्यान रखे। पर माँ उससे उलटा करती है। इसलिए वह नाराज हो जाता है।

इसी प्रकार हमारा पॉजिटिव (+) व्यवहार किसी को नेगेटिव (-) लग सकता है। ऐसे में दुःखी होकर प्रतिक्रिया करने के बजाय समझने की कोशिश करें कि मेरा कौनसा व्यवहार इसके लिए नेगेटिव (-) हो रहा है।

- (D) चौथी बात ये समझें कि व्यक्ति वर्तमान में जैसा है, आखिर वैसा क्यों है?

विचित्र स्वभाव वाले लोगों को देखकर कई बार मन विचलित हो जाता है। मन में विचार आते हैं कि यह इनसान इतना अजीब क्यों है? कोई बात समझता क्यों नहीं है? आदि....। परेशान होकर हम कई बार उलटा-सीधा बोल देते हैं। फिर पछताते हैं और आश्चर्य तो तब होता है, जब हम ये देखते हैं कि इतना बोलने के बाद भी उसमें रक्तीभर का भी परिवर्तन नहीं आता। वह 1-2 दिन ठीक रहता है, फिर वैसा ही हो जाता है। ऐसा क्यों होता है? हर व्यक्ति की वर्तमान दशा के पीछे 6 कारण होते हैं -

1. **पूर्वजन्म के संस्कार** - जो आत्मा जैसी योनि से आती है, उसके संस्कारों का असर उसमें रहता है।
2. **परिवार के संस्कार** - परिवारिक संस्कार भी सबके अलग होते हैं। जिसने जैसा सीखा, वह वैसा करता है।
3. **संगति के संस्कार** - जो जैसे लोगों के बीच पला-बढ़ा, वह वैसी प्रवृत्तियाँ करता है।
4. **परिस्थिति से उत्पन्न हुए संस्कार** - जिसके साथ जीवन में जैसा बीता होता है, वह उसके अनुसार वैसा बनता है। कुछ परिस्थिति झेलकर अनुभवी हो जाते हैं, कुछ दुःखी होकर थक जाते हैं। जैसे- किसी के साथ बहुत धोखा हुआ, उसकी वजह से या तो वह लोगों को परखना सीख सकता है या सबके प्रति शंकालु बन सकता है।
5. **साधना से प्रकट किए गए संस्कार** - कुछ लोग अपने संकल्प से अनेकानेक गुणों को प्रकट कर लेते हैं, परंतु ऐसे लोग विरले होते हैं।
6. **कर्मों का उदय (औदियिक भाव)** - किसी के शुभ कर्मों का उदय होता है, किसी के अशुभ कर्मों का, किसी का मंद क्षयोपशम होता है, किसी का तीव्र, किसी का किसी समय मन-शरीर स्वस्थ होता है, किसी समय अस्वस्थ, उसके अनुसार भिन्न-भिन्न जीव भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति करते हैं।

Note - उपर्युक्त 6 संस्कार प्रायः सभी के भिन्न होते हैं। अतः सब एक समान समझदार हो जाएँ, बहुत मुश्किल है। हम इस बात को समझने का प्रयास करें और जीवों के प्रति अपने शरण-द्वेष को कम करें। यदि हम ऐसा करेंगे तो उनके साथ हमारा वचन-व्यवहार स्वतः श्रेष्ठ हो जाएगा। हम उनसे आग्रह नहीं करेंगे, हम उनकी निंदा नहीं करेंगे, हम उनसे घृणा नहीं करेंगे, बल्कि हम उन्हें समझेंगे, उनके प्रति दया और करुणा का भाव रखेंगे।

जितशत्रु राजा और सुबुद्धि प्रधान

चंपा नगरी के राजा जितशत्रु और उनका मंत्री सुबुद्धि प्रधान (एक श्रमणोपासक) एक दिन भोजन के लिए साथ बैठे। भोजन के बाद राजा ने भोजन की खूब प्रशंसा की। पास मैं बैठे सभी ने उनकी बात का समर्थन

करते हुए कहा- “‘स्वामिन्! आप ठीक कहते हैं। बात वैसी ही है।’” सुबुद्धि ने भी भोजन किया था, परंतु वह मौन रहा। राजा ने उन्हें मौन देखकर बार-बार पूछा, तब उसे बोलना ही पड़ा। परंतु वह सम्यक् दृष्टि श्रावक था। अतएव उसकी विचारणा अन्य जनों से भिन्न थी। वह तत्त्व का जानकार था। अतः उसने राजा के कथन का अनुमोदन नहीं किया, बल्कि साहसपूर्वक सच्चाई का कथन किया कि “‘स्वामिन्! इस स्वादिष्ट भोजन के विषय में मेरे मन में किंचित् भी विस्मय (आश्चर्य) नहीं है। पुद्गलों के परिणमन अनेक प्रकार के होते रहते हैं। शुभ प्रतीत होने वाले पुद्गल निमित्त पाकर अशुभ प्रतीत होने लगते हैं और अशुभ पुद्गल शुभ रूप में परिणत हो जाते हैं। पुद्गल तो पुद्गल ही है, उसमें शुभत्व-अशुभत्व का आरोप हमारी राग-द्वेषमयी बुद्धि करती है। अतएव मुझे इस प्रकार के परिणमन आश्चर्यजनक प्रतीत नहीं होते।’” राजा ने सुबुद्धि के कथन का आदर नहीं किया और वो चुप रहा।

कुछ दिन बाद राजा और सुबुद्धि एक खाई के पास से गुजरे, जिसका पानी सड़े-गले मृत कलेवरों की दुर्गंध से भी अधिक दुर्गंध वाला था। राजा ने अपना नाक, मुँह ढक लिया और नाले की दुर्गंध का वर्णन करने लगा। साथियों ने भी उनका समर्थन किया, परंतु सुबुद्धि ने पूर्व के समान मौन धारण कर लिया। जब उसे राजा ने पुनः-पुनः पूछा, तब भी उसने पूर्व की तरह ही सत्य कथन किया। परंतु राजा के कथन का समर्थन नहीं किया। इस पर राजा बोला- “‘देवानुप्रिय! तुम दुराग्रह करके अपने को और दूसरे को भ्रम में मत डालो।’” ऐसा सुनकर सुबुद्धि ने राजा को कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि उसके मन में राजा के प्रति दया आई। उसने विचार किया- “‘अहो! राजा सत्य को, तत्त्व के स्वरूप को, भगवान के द्वारा प्ररूपित भावों को नहीं जानता, नहीं मानता। अतएव मेरे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि मैं राजा को सत्य तत्त्व समझाऊँ और इस बात को अंगीकार करवाऊँ।’” फिर सुबुद्धि ने उसी खाई के पानी को मंगवाकर उसे अनेकानेक विधियों के द्वारा एकदम स्वच्छ सुगंधित किया और फिर उसी को राजा को पिलाया। पीने के बाद सुबुद्धि ने स्पष्ट किया कि स्वामिन्! यह खाई का पानी है, जो आपको अत्यंत अमनोज्ञ प्रतीत हुआ था। राजा ने पुनः Practical करके देखा और जब उन्हें विश्वास हुआ तब राजा बोला- “‘तुम्हारी बात बिलकुल सही है, पर यह तुमने कहाँ से जाना?’” सुबुद्धि ने कहा- “‘भगवान की वाणी से’” और फिर जितशत्रु राजा ने धर्म को सुना, सुनकर वह भी श्रावक बन गया। कुछ सालों बाद उन दोनों ने संयम अंगीकार किया और उसी भव में सिद्ध हो गए। एक श्रावक के वचनों से, आचरण से प्रभावित होकर राजा का जीवन धन्य हो गया। सुबुद्धि ने राजा को खुश करने के लिए पुद्गल प्रशंसा, निंदा के विषय में हाँ मैं हाँ नहीं मिलाया, न उसे स्वीकार किया। लेकिन उनका तरीका सभ्य और शालीन था। वह उग्र नहीं हुआ, उसने बहस नहीं की। वह शांत रहा और Practical करके समझा भी दिया। यह कला श्रावक में होनी चाहिए।

Note - अधिक विक्षतार के लिए देखें - श्री ज्ञाता धर्मकथांग सूत्र 12वाँ अध्ययन।

(जब राजा सत्य नहीं समझा, तब सुबुद्धि उस पर दया आई)

‘When we develop understanding towards others we become more tolerant less demanding and more caring.’

(E) पांचवीं बात ये समझें कि व्यक्ति कैसा भी हो, परंतु वह चाहता है कि उसे श्वीकार कर लिया जाए।

कोई भी यह नहीं चाहता कि उसे दुक्कारा जाए। इससे वह बहुत दुःखी होता है। परंतु यदि उसे स्वीकार करके उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाए, तो वह इतना प्रसन्न होता है कि स्वतः परिवर्तन के लिए तैयार हो जाता है।

‘Accept and respect every person as they are.’

(F) छठी बात ये समझें कि हमारी कर्मों की दशा के अनुकूल हमें परिणाम मिलता है।

हमने अच्छा व्यवहार किया, हमारी तरफ से कोई कर्मी नहीं रही, फिर भी हमारे साथ दुर्व्यवहार किया गया, हमें धोखा दिया गया। क्यों? क्योंकि उस समय हमारे पाप कर्मों का उदय था। हमको जो कुछ भी मिलता है, हमारा ही किया हुआ मिलता है। न एक पैसा कम मिलता है, न एक पैसा ज्यादा। ऐसा समझकर हम अपनी शिकायतों को मिटाने का प्रयास करेंगे, तो हमारा वचन बिगड़ने से बच सकता है।

-क्रमशः ❤️❤️❤️

ज्ञान का खजाना, इसी में है पाना

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. शास्त्रों में अस्थि शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 2. देवों के पूज्य सभी साधुओं में प्रधान कौन?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 3. विश्व का सबसे कठिन कार्य किसे माना गया है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 4. “आठों ही दिशा उगावे तारा, पण सूरज पूरक दरसायो” इसमें पूरब शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 5. ऐसा ज्ञानी कौन, जो ज्ञान का केवल भार ढोता है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 6. एक बगला कहावत लिखिए।

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 7. दुनिया की ऐसी संपदा जो जीव को कृत्य-कृत्य बना देती है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 8. चिलचिलाती धूप से तपती भूमि शीतल कब लगती है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 9. तिलपट्ठी का उदाहरण किसके लिए दिया गया है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 10. भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल में कौनसे तीर्थकर हुए हैं?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 11. मनुष्य जन्म, उत्तम कुल, पाँचों इंद्रियों मिलने पर भी सब किसके बिना अधूरा है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 12. सब वृक्षों में श्रेष्ठ कौनसा वृक्ष होता है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 13. 1700 किमी. का विहार करके गुरुचरणों में पथारने वाले एक साधी जी?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 14. पर्वक किसे कहा गया है?

उत्तर पेज सं.:

प्रश्न 15. “हम स्वयं आश्रयदाता हैं, स्वयं शरणदाता हैं” यह किसने फरमाया?

उत्तर पेज सं.:

नोट :- 1. सभी प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखने हैं।

2. उत्तर इसी अंक में से लिखने हैं।

3. उत्तर के साथ कोष्ठक में पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।

दिनांक 03 से 05 जून 2024 के बीच WhatsApp 9314055390 पर प्राप्त प्रत्युत्तर ही स्वीकार्य होंगे।



•••••••••••••

15-16 अप्रैल 2024
अंक से आगे....

•••••••••••••

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला



•••••••••••••

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

•••••••••••••

प्रश्न 48. बादर तेजस्कायिक जीव किस प्रकार के हैं?

उत्तर अंगार, ज्वाला, अग्निकण, शुद्ध अग्नि (लोहे के गोले की अग्नि), विद्युत (आकाशीय बिजली चमकना), अरणि आदि की रगड़ से उत्पन्न अग्नि, निर्धात (वैक्रिय संबंधित विद्युत्पात) आदि अनेक प्रकार के बादर तेजस्कायिक जीव हैं।

प्रश्न 49. बादर वायुकायिक जीव किस प्रकार के हैं?

उत्तर पूर्व आदि छहों दिशाओं एवं विदिशाओं से बहती हुई वायु, ऊर्ध्व, अधो, तिर्यग्वायु, समुद्र के समान प्रचंड गति से बहती हुई वायु, गूँजती हुई वायु, गोल-गोल चक्राकार हवाएँ, आँधी, तूफान, संवर्तक (प्रलयकाल में चलने वाली) वायु, घनवात, तनुवात, शुद्धवात (धीमी-धीमी बहने वाली वायु) आदि अनेक प्रकार के बादर वायुकायिक जीव कहे गए हैं।

प्रश्न 50. बादर वनस्पतिकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर बादर वनस्पतिकायिक जीव 2 प्रकार के हैं। यथा - प्रत्येक शरीरी (एक शरीर में एक जीव) और साधारण शरीरी (एक शरीर में अनंत जीव)।

प्रत्येक शरीरी वनस्पतिकायिक की प्रज्ञापना

प्रश्न 51. प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकायिक जीव 12 प्रकार के एवं अनेक आकार-प्रकार के कहे गए हैं। यथा - 1) वृक्ष, 2) गुच्छ (इसमें टहनियाँ पतली होती हैं), 3) गुल्म, 4) लताएँ, 5) बेलें, 6) पर्वक (झक्खु आदि), 7) तृण (दूब आदि हरी धास), 8) वल्य, 9) हरित, 10) औषधि (गेहूँ आदि धान्य), 11) जलस्वरूप और 12) कुहण।

नोट - 12 प्रकारों का विस्तृत वर्णन निम्नोक्त प्रश्नोत्तरों में है।

प्रश्न 52. वृक्ष कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर वृक्ष दो प्रकार के होते हैं। यथा -

1) एकास्थिक वृक्ष - जिन वृक्षों के प्रत्येक फल में एक गुठली या एक बीज होता है, वे एकास्थिक वृक्ष कहलाते हैं। जैसे - आम, जामुन, नीम, नारियल आदि।

- 2) बहुबीजक वृक्ष - जिनके प्रत्येक फल में बहुत बीज हों, वे वृक्ष बहुबीजक वृक्ष कहलाते हैं। जैसे - बिजौरा, अनार आदि।
नोट - शास्त्र में कई स्थानों पर बीज के लिए 'अस्थि' शब्द का प्रयोग किया गया है।
- प्रश्न 53** एकास्थिक वृक्षों के विषय में आगम में क्या उल्लेख है?
- उत्तर** एकास्थिक वृक्ष के 10 भेद होते हैं (ये 10 अवस्थाएँ क्रमशः होती हैं)। यथा -
- 1) एकास्थिक वृक्षों के मूल, कंद, स्कंध, त्वचा, शाखा और प्रवाल असंख्ये जीवों वाले होते हैं।
 - 2) पत्ते (नारियल आदि के पत्ते) प्रत्येक जीव वाले होते हैं।
 - 3) पुष्प अनेक जीव वाले एवं फल में एक बीज होता है और एक अस्थि (बीज) में एक जीव होता है।
- प्रश्न 54** मूल, कंद, स्कंध आदि असंख्ये जीवों/शरीरों वाले हैं तो वे एक शरीराकार जैसे क्यों दिखाई देते हैं?
- उत्तर** अनेक तिलों से बनी हुई तिलपपड़ी एक दिखती है, उसी प्रकार मूल, कंद आदि में अनेक शरीर होते हुए भी एक शरीराकार दिखाई देते हैं। तथास्वभाव से समान वर्ण, गंध, रस, स्पर्श के उदय वाले जीव एक स्थान पर उत्पन्न होकर एक शरीराकार दिखाई देते हैं।
- प्रश्न 55** बहुबीजक वृक्षों के 10 भेदों में जीवों की संख्या का वर्णन कीजिए।
- उत्तर**
- 1) बहुबीजक वृक्षों के प्रथम 6 भेद असंख्ये जीवों वाले होते हैं।
 - 2) पत्ते प्रत्येक जीव वाले,
 - 3) फूल बहुत जीव रूप और
 - 4) फल बहुत बीज (जीव) वाले होते हैं।
- नोट - आगम में एकास्थिक और बहुबीजक वृक्षों के नाम 3-3 गाथाओं में कहे गए हैं। जिज्ञासु आगम में देखें।
- प्रश्न 56** गुच्छ कितने प्रकार के होते हैं?
- उत्तर** गुच्छ (पौधे) अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे - कच्चुरी, नीली, तुलसी, केतकी, गंज, पाटल (गुलाब) बैंगन, दासी आदि। शास्त्र में गुच्छ के 53 नाम 5 गाथाओं में कहे गए हैं तथा इसी प्रकार की अन्य वनस्पतियों को भी गुच्छ कहना चाहिए।
- प्रश्न 57** गुल्म कितने प्रकार के होते हैं?
- उत्तर** गुल्म अनेक प्रकार के एवं अनेक आकार के होते हैं। यथा - पान, कुनेर, मोगरा, जूही, बंधुजीवक आदि। शास्त्र में गुल्म के प्रकारों के 25 नाम 3 गाथाओं में कहे गए हैं तथा इसी प्रकार की अन्य वनस्पतियों को भी गुल्म कहना चाहिए।
- प्रश्न 58** लताएँ कितने प्रकार की होती हैं?
- उत्तर** लताएँ अनेक प्रकार कहीं गई हैं। यथा - पद्मलता, नागलता, अशोकलता, चंपकलता आदि 10 नाम कहे गए हैं तथा इसी प्रकार की जो अन्य लताएँ हैं उन्हें भी इनके साथ समझ लेना चाहिए।
- प्रश्न 59** वल्लियाँ कितने प्रकार की होती हैं?
- उत्तर** वल्लियाँ (बेलें) अनेक प्रकार की होती हैं। यथा - पूसफली, कालिंगी, तुंबी आदि 45 नाम 5 गाथाओं में कहे गए हैं तथा इनके समान अन्य वल्लियों को भी इसी के अंतर्गत समझ लेना चाहिए।

साभार- श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला
-क्रमशः ❤️❤️❤️



••••••••••••

15-16 अप्रैल 2024
अंक से आगे....

••••••••••••

संकलनकर्ता -
सरिता बैंगानी, कोलकाता

••••••••••••



पूर्व चित्रण

••••••••••••

बहुश्रुत की महिमा व श्रेष्ठता
को प्रकट करने के लिए
उन्हें शंख, अश्व, बलिष्ठ
हाथी, तीर्खे सिंगों वाला
बलिष्ठ वृषभ, चक्रवर्ती के
वैभव एवं देवराज शकेंद्र
जैसी उपमाओं से अलंकृत
किया है।

भगवान महावीर स्वामी बहुश्रुत की विशेषताओं को सूर्य, चंद्र, कोठार जंबूवृक्ष की उपमा से सुशोभित करते हुए इस प्रकार फरमाते हैं -

जहा से तिमि-विद्धसे, उच्चिट्ठंते दिवायरे।

जलते इव तेण, एवं हवङ्ग बहुसुए॥24॥

भावार्थ – जिस प्रकार अंधकार को नाश करने वाला बाल सूर्य उदय होता हुआ और सौम्य होता है। फिर आकाश में अग्नि के समान तपता हुआ अत्यंत तेजस्विता को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार बहुश्रुत भी विशुद्धतर अध्यवसाय के वश संयम एवं ज्ञान तप के तेज से विशेष रूप में दैदीप्यमान होते हैं।

जहा से उड्डर्वङ्ग चंदे, नक्खत-परिवारिए।

पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवङ्ग बहुसुए॥25॥

भावार्थ – जिस प्रकार पूर्णिमा के दिन नक्षत्र (ग्रह, तारा) के परिवार से परिवृत्त घिरा हुआ चंद्रमा प्रतिपूर्ण होता है, इसी प्रकार साधुओं के परिवार से परिवृत्त बहुश्रुत भी आत्मिक शीतलता से परिपूर्ण होते हैं। उनका दर्शन सौम्य भाव से युक्त होता है।

जहा से सामाइयाणं, कोट्ठगारे सुरक्षिणं।

नाणा-धन्न-पडिपुन्ने, एवं हवङ्ग बहुसुए॥26॥

भावार्थ – जिस प्रकार सामाजिकों अर्थात् संचय करने वाले लोगों के अन्न भंडार सुरक्षित एवं अनेक प्रकार के धान्यों से परिपूर्ण होते हैं, वैसे ही बहुश्रुत होते हैं।

इसका भाव इस प्रकार है – जिस प्रकार धान्य के कोठे परिपूर्ण रहते हैं, इसी प्रकार बहुश्रुत भी गच्छ के लिए विविध उपयोगी अंग, उपांग आदि प्रचुर श्रुतज्ञान से परिपूर्ण होते हैं। बहुश्रुत अनेक लब्धियों से संपन्न होते हैं। प्रवचन (शास्त्रों) के आधार होने से चतुर्विध संघ उनकी सेवा, सुश्रूषा, सत्कार, सम्मान आदि द्वारा सदा रक्षा करने में कटिबद्ध रहता है।

जहा सा दुमाण पवरा, जंबू नाम सुदंसणा अणाडियस्स देवस्स, एवं हवङ्ग बहुस्सुए॥२७॥

भावार्थ – जिस प्रकार अनादृत देव का ‘सुदर्शन’ नामक जंबूवृक्ष सब वृक्षों में श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत सब साधुओं में श्रेष्ठ होते हैं।

इसका भाव इस प्रकार है – जंबूद्वीप के अधिपति अनादृत नाम के व्यंतर जाति के देव हैं। वे जंबूद्वीप के ठीक बीच में एक सुदर्शन नामक जंबूवृक्ष पर निवास करते हैं। यह शाश्वत वृक्ष रत्नमय है, पृथ्वीकायिक है एवं आठ योजन ऊँचा है। यह 108 दूसरे जंबूवृक्षों तथा 12 उत्तमोत्तम वेदिकाओं एवं विविध फलों-पुष्पों से समन्वित (शामिल) है तथा 300 वनखंडों से सदा परिवृत्त रहता है। जंबूद्वीप के अधिपति के आश्रय में रहने से यह समस्त वृक्षों में प्रधान माना जाता है। इसके फल अमृत तुल्य होते हैं। इसी तरह बहुश्रुत भी श्रुतज्ञानरूपी विविध रत्नों से परिपूर्ण रहते हैं। शाश्वत द्वादशांग के धारक होने से ये शाश्वत मोक्ष सुख के अधिकारी माने जाते हैं। अष्ट प्रवचन माता में अपने आपको नियोजित करने, पंचपरमेष्ठी के 108 गुणरूप से समन्वित, 12 भावनारूपी परिवृत्त, विनय आदि गुणरूप पुष्पों-फलों से समन्वित होते हैं। बहुश्रुत, देवों के पूज्य होते हैं और सभी साधुओं में प्रधान होते हैं।

-क्रमशः ❤️❤️❤️

15-16 अप्रैल 2024 अंक में प्रकाशित ज्ञान का खजाना इसी में है याना प्रश्नोत्तरी का परिणाम एवं सही हल

1. समयं गोयम्! मा पमायए	(पेज नं. 14)	8. भविष्य काल	(पेज सं. 9)
2. अवसर का	(पेज नं. 21)	9. अरिहंत	(पेज सं. 16)
3. पुंडरीक कमल	(पेज सं. 9)	10. सर्वानुभूति अणगार को	(पेज सं. 22)
4. श्री अमरचंद जी म.सा. ने	(पेज सं. 37)	11. जलाशय से	(पेज सं. 19)
5. आनंद कुमारी, गणेशमल जी	(पेज सं. 27)	12. आगमधर	(पेज सं. 16)
6. बलिष्ठ हाथी, वृषभ, चक्रवर्ती, देवराज इंद्र, सूर्य	(पेज सं. 25)	13. साध्की श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा.	(पेज सं. 5)
7. पृथ्वीकायिक, वनस्पतिकायिक	(पेज सं. 24)	14. अंधकार, प्रकाश	(पेज सं. 49)
		15. महत्तम व्यक्तित्व	(पेज सं. 37)

::::: परिणाम :::::

1. ममता जी कोठारी, कानोड़, 2. सोना जी सुराना, मुंबई,
3. सपना जी कोठारी, उदयपुर, 4. हजारीमल जी सुराना, गंगाशहर,
5. ज्योति जी जैन, लुधियाना



धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

साध्वी दीक्षा

15-16 अप्रैल 2024 अंक से आगे....

पृ

थ्वी सर्व सहा (सब कुछ सहन करने वाली)

कहलाती है। वृष्टि होने से पहले पृथ्वी की क्या दशा होती है? सूर्य उसे तवे के समान तपा देता है। बादल भी गर्ज-गर्जकर उसे डॉट-फटकारकर बताते हैं और चंचल बिजली उसे आँखें दिखाती हुई कड़कड़ाती है, कभी उस पर गिर भी जाती है। आँधियाँ अपना सारा बल लगाकर पृथ्वी कणों को उड़ाकर नाश कर देना चाहती हैं। वे वृष्टि को अपने शरीर से रोकना चाहती हैं, पर पृथ्वी इन सबके उपद्रवों को शांत भाव से सहती है। बदले में कुछ भी प्रतिकार नहीं करती। इसी कारण इसे पानी की तेज धाराएँ मिलती हैं और वह थोड़े ही दिनों में हरियाली की हरी साढ़ी ओढ़ लेती है। उसे कष्ट देने वाले सूर्य, बिजली, बादल, आँधी आदि सब अपने आप शांत हो जाते हैं और वृष्टि बरसाने में सहायक बन जाते हैं।

यही बात आनंद कुमारी जी के संबंध में है। वह तपाने वालों, गर्जने वालों, लाल आँखें दिखाकर क्रोध करने वालों और मारने-पीटने वालों के सभी उपद्रव शांतभाव से सहती रही। किसी प्रकार का प्रतिकार नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि सभी लोग आप पर प्रेमवृष्टि बरसाने में सहायक हो गए। आपको वैराग्य-जल की तीव्र धाराएँ मिली और थोड़े ही दिनों में आप दीक्षा की चादर ओढ़ने वाली थीं।

आपके पीहर वाले और ससुराल वाले सब आपकी वैराग्य-वृत्ति देखकर प्रसन्न हो रहे थे। सबके मुख से संतोष के शब्द सुनकर आपके मन में भी ऐसी प्रसन्नता हो रही थी जैसे किसी परीक्षार्थी को परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर होती है। परीक्षार्थी को पास होने पर प्रमाण-पत्र (सर्टिफिकेट) मिलता है तभी वह आगे की कक्षा में प्रवेश कर सकता है। आपको उच्च-साधु-जीवन की कक्षा में प्रवेश करना था, उसके लिए कुटुंबीजनों का मौखिक आज्ञा-पत्र प्राप्त करना था। आज्ञा-पत्र के लिए आपके काका जी, पिता जी वैगैरह सब लोगों ने आपके जेठ जी के पास जाकर कहा- “हम सबको अब अपनी लड़की पर संतोष है। वह महाप्रतीं के भार को उठाने में समर्थ है। हमें तो ऐसा लगता है, वह साध्वी जगत् में एक अपूर्व-रत्न निकलेगी। उसकी वर्तमान समय की प्रसन्नमुद्रा साधुता का गुण पा जाने पर सोने में सुहागा का काम देगी। अब आप उसे आज्ञा देने में ज्यादा विलंब न करें।”

जेठ जी फतहचंद जी बड़े विचारशील व्यक्ति थे। उन्होंने कहा- “ठीक है, अब मैं जल्दी ही इसके लिए निर्णय कर दूँगा।” एक दिन वह शुभ अवसर आया और फतहचंद जी ने अपने सभी कुटुंबियों के सामने स्नेह भरे शब्दों में आज्ञा दी और कहा- “बेटी! अब तुम

अपनी संयम-यात्रा के लिए तैयारी करो। हमारी तरफ से हमने बहुत दिनों तक रोके रखा। अब हम तुम्हें रोक नहीं सकते। अब हम दीक्षा की आज्ञा देते हैं। अपने धर्म में दृढ़ रहना। अपने पवित्र कुल पर किसी प्रकार का भी कलंक न लगाना। भगवान् राम, तुम्हें वह शक्ति दे, जिससे तुम अपने कर्तव्य-मार्ग में आदर्श-सफलता प्राप्त कर सको। ‘शिवास्ते सन्तु पन्थानः’ (तुम्हारा मार्ग कल्याणकारी हो)।”

आज्ञा प्राप्त होने पर आपकी प्रसन्नता का पार न रहा। आपने अपनी संयम-यात्रा का कार्य पहले से ही प्रारंभ कर दिया था। आपके दीक्षा लेने के विचारों का पता सोजत संघ को पहले ही लग चुका था। सोजत संघ उस समय काफी बड़ा था। आपको आज्ञा दिलाने के लिए भी उनका विचार शलराज जी व फतहचंद जी को प्रेरणा करने का हुआ था, परंतु बाद में सोचा कि वे बड़े आदमी हैं। रामस्नेही संप्रदाय के भक्त हैं। ऐसी दशा में हमारे कहने से शायद वे रुष्ट होकर आज्ञा न दें। इसलिए आज्ञा तक हम प्रतीक्षा कर लें, बाद में संघ की तरफ से दीक्षा की व्यवस्था करने का प्रयत्न करेंगे।

महासती बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. उस समय ‘बगड़ी’ में विराज रही थीं। वहाँ के श्रावक-श्राविकाएँ आपकी अमृतवाणी का पान कर जीवन धन्य बना रहे थे। वैरागिन आनंद कुमारी जी के ससुराल वालों ने महासती जी को सोजत पथारने के हेतु विनती करते हुए कहलवाया—‘यद्यपि आप सोजत चातुर्मास कर चुकी हैं और आपकी साधु मर्यादा के अनुसार आप पुनः यहाँ नहीं ठहर सकतीं, फिर भी विशेष उपकार के लिए तो आप पथार ही सकती हैं। हमारी विनती मानकर सोजत पथारने की कृपा करें। हमें आपको शिष्या की भिक्षा देनी है। वह दीक्षा लेने के योग्य है। अतः उसे स्वीकार करने में कालक्षेप न करें।’

महासती जी ने उन लोगों की विनती मानकर यथा समाधि सोजत की ओर विहार करने का आश्वासन दिया।

बगड़ी संघ के अग्रगण्य लोगों को जब इस बात का पता चला कि वैरागिन बाई की आज्ञा हो चुकी है और दीक्षा प्रदान करने के लिए सोजत से लोग विनती

करने आए हैं तो उन लोगों में भी काफी जागरूकता आई और उन्होंने वैरागिन आनंद कुमारी जी के ससुराल वालों के पास आकर निवेदन किया—‘वैरागिन बाई की जो दीक्षा होने वाली है, उसमें हमारी भी सेवा ली जाए। दीक्षा का सारा खर्च हम लोग उठाना चाहते हैं। आप जानते हैं यह तो धार्मिक कार्य है, उत्तम अनुष्ठान है। इसमें हमें भी हाथ बँटाने दें।’

फतहचंद जी ने कहा—“यह तो आप लोगों की भलमनसाहत है, जो आप खर्च उठाना चाहते हैं। परंतु इस समय तो आप क्षमा करें। हम इस पवित्र कार्य को अपने ही हाथों से संपन्न करना चाहते हैं। आप लोग इसके लिए ज्यादा आग्रह न करें।” बगड़ी के लोगों ने यह प्रत्युत्तर सुनकर ज्यादा आग्रह नहीं किया और मन ही मन समझ गए कि “वीर परिजन स्वयं ही इस कार्य को संपन्न करना चाहते हैं। इनका उत्साह काफी है तो हम लोग क्यों अंतराय दें।”

इधर खेरापा के रामस्नेही साधुओं ने जब यह सुना कि राम-राम वाले शलराज जी मूथा की पुत्रवधू जैन दीक्षा ले रही है तो वे बड़े ही प्रसन्न हुए और शुभ संदेश कहलाया कि “यह बड़ा पवित्र कार्य है। इस कार्य में देरी मत होने दो। बाई की इच्छानुसार उसे अपना पवित्र धर्मानुष्ठान करने दो।”

सोजत के जैन संघ में हृष की लहर दौड़ गई। वहाँ के श्रावक फतहचंद जी मूथा से दीक्षा की व्यवस्था के लिए कहने लगे, परंतु फतहचंद जी ने किसी की नहीं सुनी। उन्हें यह अभीष्ट न था। वे खुद संपन्न व्यक्ति थे। अतः सबको लाचार होकर वापिस लौटना पड़ा।

महासती बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा., केशर कुमारी जी म.सा. एवं लक्ष्मी कुमारी जी म.सा. आदि ठाणा-3 बगड़ी से विहार कर सोजत पथार गई। सब लोगों में भरपूर उल्लास एवं धर्म-ध्यान का ठाठ लग रहा था। उस समय महासती श्री केशर कुमारी जी म.सा. के सांसारिक पक्ष के भतीजे आनंदीलाल जी जयपुर से दर्शनार्थ आए हुए थे। उनसे वैरागिन बहन आनंद कुमारी जी की दीक्षा का मुहूर्त दिखाया गया। उन्होंने पंचांग

देखकर पौष शुक्ल 13 का दिवस ठीक बताया। वैरागिन आनंद कुमारी जी को इतना लंबा समय पहाड़ जैसा लग रहा था, उनके मन में दीक्षा लेने की प्रबल उत्कंठा थी। आपका तो विचार था कि अभी ही दीक्षा ग्रहण कर लूँ पर लौकिक बातों के कारण आप लाचार थीं। मारवाड़ में तारा (संक्रांति काल) लगने के समय कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता। तदनुसार ‘यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं नादरणीयं’ की नीति आपको भी अपनानी पड़ी, परंतु तारा उतरने के बाद तो ऐसी कोई अड़चन नहीं थी। अतः आपने पौष बढ़ी 13 को जैन भागवती दीक्षा दिलाने का आग्रह किया। ‘शुभस्य शीघ्रं’ वाली उक्ति के अनुसार आपने कहा- “शुभ कार्य के लिए ज्यादा मुहूर्त वैरह देखने की क्या आवश्यकता है? धर्मकार्य के लिए सभी दिन अच्छे होते हैं। तुम शुभ कार्य में दिशाशूल, पृष्ठचंद्र आदि क्यों देखते हो? क्या चातुर्मास उत्तरने के बाद विहार करने का मुहूर्त देखा जाता है? संवत्सरी के दिन व्रत करने का मुहूर्त देखते हो? वह तो भगवान की आज्ञा है। शुभकार्य के लिए कौनसा दिन या रात्रि बुरी है?” उत्तराध्ययन सूत्र की एक गाथा इस विषय में सुंदर संकेत कर रही है -

**जा जा वच्चइ रयणी, न सा यडिनियतर्द्ध।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राङ्गओ॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा यडिनियतर्द्ध।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राङ्गओ॥**

अर्थात् जो दिन-रात्रि व्यतीत हो जाते हैं वे फिर लौटकर नहीं आते। तब ऐसे छोटे समय वाले जीवन में सद्धर्म का आचरण करने वाले के वे रात्रि व दिवस सफल जाते हैं और अर्धमास करने वाले का वह समय निष्फल चला जाता है।

तात्पर्य यह है कि अमूल्य घड़ियाँ बारबार नहीं मिलती। समय चला जाता है और कुछ भी धर्म-कार्य नहीं करने वालों को पश्चात्ताप ही रह जाता है कि हाय! समय चला गया और हम कुछ भी नहीं कर पाए। समय का सदुपयोग करने वाला ही अपना जीवन ऊँचा बनाता है।

हाँ, तो आनंद कुमारी जी अपनी कहती रहीं और

ससुराल वाले अपनी। हुआ वही जो अभीष्ट था।

बात यह हुई कि फतहचंद जी ने आपकी दीक्षा का मुहूर्त सोजत के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी से भी दिखलाया। ज्योतिषी विद्वान् थे। उन्होंने गणित करके कहा- “आपने जो पौष शुक्ल 13 का मुहूर्त कहा था, उससे तो पौष कृष्ण 13 का मुहूर्त श्रेयस्कर है।” फतहचंद जी ने कहा- “हमारी वैरागिन ने तो पहले ही अपनी दीक्षा के लिए यह दिन ठीक बताया था। अब आपकी मोहर और लग गई। अब हमें पूरा विश्वास हो गया कि पौष कृष्ण (बढ़ी) 13 का मुहूर्त श्रेष्ठ है।” फतहचंद जी आए और आपको अपना ही निश्चित किया हुआ मुहूर्त सुनाया। जैसे अपने ही हाथ से बनाए हुए किसी सुंदर चित्र को देखकर चित्रकार के मन में प्रसन्नता होती है वैसी ही प्रसन्नता आनंद कुमारी जी को स्वनिर्णीत मुहूर्त सुनकर हुई। महासती जी को भी दीक्षा का मुहूर्त बता दिया गया। संघ ने भी इस मुहूर्त के लिए खुशियाँ मनाईं।

धूमधाम से दीक्षा महोत्सव की तैयारियाँ होने लगीं। जगह-जगह आमंत्रण पत्रिकाएँ भेजी गईं। सैकड़ों नर-नारी बाहर से आए। आनंद कुमारी जी के पीछे पक्ष के लोगों के मन में भी काफी उत्साह था। उन्होंने दीक्षा से कुछ दिन पूर्व आपको बुलाकर बिंदोली दी एवं काफी स्वागत किया। आपके पिता जी बड़ी ही कोमल प्रकृति के व्यक्ति थे। उन्होंने स्नेहभरे शब्दों में आपकी माता से कहा- “आनंद दीक्षा लेना चाहती है। आज तो यह हमारे पास है, लेकिन दो-चार दिनों में साध्वी जी के पास चली जाएगी। मेरी एकमात्र भावना यही है कि आनंद एक वक्त मुझे अपने हाथों से भोजन बनाकर खिला दे और मैं कुछ नहीं चाहता।” यह कहते पिता जी का गला सँध गया और वे ज्यादा कुछ न बोल सके।

आपकी माता जी ने आपसे इस विषय में कहा, पर आप तो पहले से ही दयाव्रत का पालन कर रही थीं। अतः आपने मधुर शब्दों में माता जी से कहा- “माँ! आप जानती हैं कि मैं इस समय दयाव्रत का पालन कर रही हूँ। दयाव्रत में अपने हाथ से आरंभ का कोई कार्य नहीं किया जा सकता। इसलिए पिता जी की इस बात का

पालन करने में मैं असमर्थ हूँ। मेरे योग्य और कोई कार्य हो तो कहें। मैं उनकी रुचि का पूर्णतः ध्यान रखूँगी।”

माता जी ने विचार किया कि यह ठीक कह रही है। उन्होंने थाली में भोजन परोस कर आप से कहा- “लो, अब तो तुम पिता जी को भोजन करा सकोगी! अब तो तुम्हारे कार्य में बाधा नहीं है। यह तो प्रासुक अन्न है।”

आपने पुनः विवेक बुद्धि से विचार कर जवाब दिया- “माँ! एक बात है। पिता जी अगर भोजन करते समय कच्चा पानी पीते हैं तो मुझे अपने हाथ से जिमाने में एतराज है। क्योंकि मैं किसी को कच्चा पानी पीने की प्रेरणा इस समय नहीं कर सकती।”

पिता जी इस बात पर राजी हो गए और कहा- “मैं अभी कच्चा पानी नहीं पीऊँगा। मुझे तो एक बार तुम्हारे हाथ का अमृत-भोजन लेना है।”

आप अब जिमाने को तैयार थीं। आपने बड़े प्रेम और श्रद्धापूर्वक अपने हाथ से पिता जी को जिमाया और उनकी इच्छा को पूर्ण किया। पिता जी भी भोजन कर बड़े प्रसन्न हुए।

आप सहसा हर एक कार्य में हाथ नहीं डालती थी। आप मैं सूक्ष्म रीति से सोचने और समझने की विशेष बुद्धि थी। इस बात का पता हमें इसी घटना से लग जाता है। वास्तव में धर्म का मार्ग विवेक के द्वारा ही ढूँढ़ा जा सकता है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है -

पन्ना समिक्ख्यए धर्मं

अर्थात् अपनी प्रज्ञा (सद्गुरु-विवेक शालिनी-बुद्धि) से धर्म का परीक्षण करें।

कल दीक्षा का दिन है। सोजत के सारे बाजारों में काफी चहल-पहल थी। लोग दीक्षा देखने के लिए आतुर हो रहे थे। दीक्षा राजपोल दरवाजे के बाहर माहेश्वरियों के रामद्वारे के विशाल मैदान में होने का समाचार सर्वत्र बिजली की तरह फैल गया था। आपके जेठ जी ने उस मैदान में चारों ओर कनातें बँधवा दीं, क्योंकि मारवाड़ में यह प्रथा है कि ओसवाल घराने की कोई लड़की दीक्षा लेती है तो दीक्षा का वेश पहनने से पहले तक उसका

पर्दा कायम रहता है। वह किसी के सामने अपना धूँघट उतार नहीं सकती। पर्दा प्रथा की बदौलत ही यह सारा प्रपञ्च करना पड़ा, फिर भी अभी तक मारवाड़ इस प्रथा को पालने-पोसने में लगा हुआ है। यह परतंत्रता की बेड़ी जिस दिन दूर होगी, वह दिन धन्य होगा।

प्रातःकाल की शुभ बेला में आपके पीहर पक्ष के लोगों ने रीति-रिवाज पूरे किए। पीहर से विदा होने से पूर्व आपने सबको प्रणाम कर अपराधों के लिए क्षमायाचना की। सब लोग आपकी कोमल और उदार प्रकृति को देखकर गद्गद हो गए। विशेषतः फूलकँवर बाई तो उस क्षण अनमनी-सी हो गई। वह कुछ कहना चाहती थी, पर कंठ अवरुद्ध हो गया। आपने हाथ से संकेतपूर्वक आपको समझा दिया और आशीर्वाद के साथ सबने विदा किया।

पीहर से आप अपनी ससुराल आई। वहाँ फतहचंद जी ने पहले से ही बड़ी बुद्धिमानी का काम कर रखा था। उन्होंने घर की तमाम औरतों को अलग-अलग कर्मों में भेज दिया ताकि दीक्षा के लिए घर से प्रस्थान करते समय कोई अश्रुधारा बहाकर अमंगल न कर दे। उन्होंने घर वालों को समझा भी रखा था कि कोई भी आज वैरागिन बाई के सामने आँसू न बहाए। आपके यथा समय पहुँचते ही सारी रस्में पूर्ण की गईं। आपने अपनी सासू जी, जेठानी जी, ननद बाई आदि सबके चरणों में पड़कर माफी माँगी और उनसे आशीर्वाद लिया। सबने प्रसन्नता के साथ आपको आशीर्वाद दिया। सासू जी आदि ने बड़े ही नम्र शब्दों में कहा- “बेटी! स्वर्ग की सीढ़ियाँ धीरे-धीरे चढ़ना। उत्तम कार्य करना। अपने कुल की प्रतिष्ठा का ध्यान रखना।” आपने सबको आश्वासन देते हुए प्रस्थान किया।

दीक्षा समारोह में सोजत जैन संघ के प्रायः समस्त सदस्य एवं जैनेतर लोग भी उपस्थित थे। साथ में नगाड़ा निशान एवं तमाम लवाजमा भी था।

महासतियाँ जी रामद्वारे में ठहरी हुई थीं। आनंद कुमारी जी के मन में भी अब गुरुणी जी के चरणों में पहुँचने की उमंग थी। दीक्षा स्थल अपार जनमेदिनी

से खचाखच भरा हुआ था। विक्रम संवत् 1950, पौष कृष्ण त्रयोदशी का सूर्य ऊँचा उठ रहा था। प्रकृति शांत और सुंदर बनी हुई थी।

आप ठीक समय गुरुणी जी के चरणों में पहुँची। सबको विधिवत् वंदन किया। सारे आभूषण व रंग-बिरंगे कपड़े उतारे। मस्तक का मुंडन कराया और फिर चंद्रमा की शुक्ल किरणों के समान श्वेत-वस्त्र पहनकर गुरुणी जी के सामने उपस्थित हुईं। महासती जी ने समस्त जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा—“श्रोतागण! आज यह बहन मेरे पास दीक्षा ले रही है। जैन दीक्षा एक-दो दिन या वर्ष-दो वर्ष का सौदा नहीं है। यह जीवनभर का सौदा है। जैन दीक्षा कोई सरल साधना भी नहीं, यह तो महान् कठोर साधना है। भारतवर्ष के दूसरे धर्मों की दीक्षा और जैन दीक्षा में आकाश-पाताल का अंतर है। इसमें साधक को पाँच महाब्रतों का पूर्णतः पालन करना पड़ता है। केशों का लुंचन करना पड़ता है। नँगे पैरों चलना पड़ता है। कड़ी से कड़ी सर्दी और गर्मी का भी परिमित वस्त्रों से सामना करना पड़ता है। वे भी सीधे-सादे वस्त्र, जो इस समय पहने हुए हैं। भिक्षाचरी की विधि भी बड़ी कठिन है। यह वैरागिन करीब 3 साल से अपनी साधना करती आ रही है। अभी इसकी उम्र 16 वर्ष है। मेरे पास इसने काफी ज्ञानाभ्यास किया है और अब यह दीक्षा लेना चाहती है। इसकी आज्ञा इसके जेठ जी श्री फतहचंद जी ने दे दी है। अच्छी तरह सोच-समझकर होशोहवास के साथ दीक्षा ले रही है। क्या मैं इसे जैन भागवती दीक्षा दूँ?” समस्त संघ ने कहा—“हाँ, महाराज! दीक्षा प्रदान करने की कृपा कीजिए।” वैरागिन आनंद कुमारी जी ने भी पूछने पर अपनी स्वीकृति दी।

महासती श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ने उसी समय दीक्षा की विधि करवाकर ‘करेमि भंते’ पाठ का उच्चारण करके आपको दीक्षा प्रदान की। दीक्षा पश्चात् आपको महासती श्री लक्ष्मी कुमारी जी म.सा. की शिष्या बनाया गया, क्योंकि महासती श्री आनंद कुमारी जी इतनी निःस्पृह थी कि अपनी नेश्राय में शिष्या बनाने का उन्होंने

त्याग किया हुआ था। दीक्षा विधि सानंद संपन्न होने के पश्चात् आप उपस्थित अन्य साध्वियों के बीच में विराजमान हुईं। सब लोग धन्य-धन्य कहते हुए घर लौट गए।

इस प्रकार वैरागिन आनंद कुमारी जी की चिरकालीन अभिलाषा पूर्ण हुई। वैराग्य पथ अंगीकार कर आपने अपने को कृतकृत्य समझा। आपके लिए मानव-जीवन की सफलता का द्वार खुल गया। आनंद कुमारी जी खुद ही आनंद थी और अब आनंद कुमारी जी महासती रूप आनंद में मिल गई। आपको संयम क्या मिला, आपको ऐसे लगा जैसे रंक को नवनिधियाँ मिल गईं। सिर पर लंबे अर्से से जो बोझ लदा था, वह हल्का हो गया। आपका हृदय संतुष्ट हुआ। अब आप महासती श्री आनंद कुमारी जी के रूप में शासन सेवा में संलग्न हुईं। यहाँ से आनंद कुमारी जी के नए जीवन का प्रभात शुरू होता है।

साभार- धर्ममूर्ति आनंद कुमारी
-क्रमशः 

अक्षय तृतीया

-पायल वया, बंबोरा

आख्यातीज आई है, करनी है कुछ तो आशाधना।
जग में अनुपम है ये वर्षतिप की साधना॥

ऋषभ प्रभु से हुई शुक्रआत, पूर्वभवों का फल आया।
13 महिनों तक प्रभु ने निर्दोष आहार न पाया॥

शिक्षा लेनी है हमें, प्रतिशिक्षण कर्मों का बंधन हो रहा।
ज्ञानी वही जो समय रहते जग रहा॥

त्याग के प्रति कुछ तो जगाओ अपनी भावना।
आख्यातीज आई है, करनी है कुछ तो आशाधना॥

इक्षुरस से कराएँ सभी तपश्चियों को पारणा।
व्यर्थ न जाए इसकी, पूरी रखना जयणा (यतना)॥

गुरुवाणी मिल जाए तो आज सोने पे सुहागा।
एक बार बाँध लो गुरुवर से धर्म प्रेम का धागा॥

यह पावन पर्व जीवन में, प्रकाश लेकर आए।
मिली है जितनी भी श्वासों वो सार्थक हो जाएँ।

आया है ये पावन अवसर, पुण्य कमाई करने का।
आख्यातीज आई है, करनी है कुछ तो आशाधना॥



बालमन में

उपजे ज्ञान



-मोनिका जय ओस्तवाल, व्याकर

‘बालमन में उपजे ज्ञान’ धारावाहिक अपने शीर्षक को सार्थक करता हुआ नजर आ रहा है। बच्चों की जिज्ञासाएँ व सौरभ की माता जी के सरल समाधान बच्चों के लिए एक सुनहरे आध्यात्मिक भविष्य का निर्माण कर रहा है। बच्चों को यदि बचपन से धर्म के संस्कार देते हुए सत्संगत में रखा जाए तो भविष्य में उनका गलत राह पर जाने का डर हमेशा के लिए खत्म हो जाता है।

आइए! देखते हैं कि सौरभ की माता जी बच्चों को धर्म की अंगुली पकड़ाकर कितना आगे तक ले जाती हैं।

सौरभ की माता जी- जय जिनेंद्र बच्चो! भगवान महावीर का जन्मकल्याणक आप सभी ने अच्छे से मनाया। (सभी बच्चों ने एक र्घर में ‘हाँ’ कहते हुए युशी व्यक्त की)

पंकज- हमने पहले कभी भी ऐसा उत्सव नहीं देखा। सभी पुरुष सफेद कुर्ता-पायजामा पहने एवं महिलाएँ भी एक जैसी वेशभूषा में नारे लगाते हुए बहुत ही अच्छे लग रहे थे।

सौरभ की माता जी- सही कहा पंकज! भगवान महावीर हमें धर्म का मार्ग बताकर गए हैं। उन्होंने फरमाया है कि “मैं तुम्हारे लिए कोई चमत्कार नहीं कर सकता, परंतु वह मार्ग बता सकता हूँ जिस पर मैं स्वयं चला हूँ।”

नीलिमा- आज हम सब तर्स्स उत्तरी तक के सभी पाठ अच्छे से याद करके आए हैं।

सौरभ- अब तक तो सब पाठ याद कर लिए, आगे का पाठ बहुत बड़ा है और कठिन भी। वह आसानी से याद नहीं होगा। (सौरभ रघ्यं हङ्सकर अन्य बच्चों को डराते हुए)

नितिन- आंटी! क्या सचमुच आगे का पाठ बहुत मुश्किल है?

नीलिमा-

इतना बड़ा पाठ हम कैसे याद करेंगे ?

पंकज-

अगर याद नहीं हुआ तो फिर हमारा सामायिक सूत्र बीच में ही छूट जाएगा क्या ? (मायूस होते हुए)

सौरभ की माता जी-

बच्चो ! ऐसा कुछ भी नहीं है। पाठ जरूर बड़ा

है, परंतु हम उसे दो भाग में याद करेंगे तो आसानी से याद हो जाएगा। आगे

का पाठ है लोगस्स का पाठ

जिसे 'चतुर्विंशतिस्तव' भी कहा जाता है। इस पाठ के

द्वारा 24 तीर्थकर

भगवान की स्तुति की

जाती है, क्योंकि

तीर्थकरों ने ही सत्य

और अहिंसा का

मार्ग बताया है

और वही मार्ग

सर्वश्रेष्ठ है।

जब हम लोगस्स याद

करेंगे तो पाएँगे कि उसमें

सभी 24 तीर्थकरों के नाम

समाहित हैं, जो

हमें ज्ञान का मार्ग

दिखाने वाले हैं।

आओ ! लोगस्स

का पाठ पढ़ते हैं।

सौरभ की माता

जी सभी बच्चों

को लोगस्स पाठ

का उच्चारण

कराते हुए।

चतुर्विंशतिस्तव सूत्र (लोगस्स का पाठ)

लोगस्सुज्जोयगरे धम्म -

तित्थयरे जिणे। *

अस्तिहंते कि तडस्सं,

चउवीसंपि केवली॥1॥

उसभमजियं च वंदे,

संभवमभिणंदणं च सुइं च।

पउमप्पहं सुपासं,

जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥2॥

सुविहिं च पुष्कदंतं,

सीयल-सिजंस-वासुपुज्जं च।

विमल-मणतं च जिणं,

धम्मं संति च वंदामि ॥3॥

कुंथुं अरं च मल्लिं,

वंदे मुणिसुव्ययं नमिजिणं च।

वंदामि रिहुनेमिं,

पासं तह वद्वमाणं च ॥4॥

एवं मट-अभिथुआ,

विहुय-स्यमला पहीण-जस-मरणा।

चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयन्तु ॥5॥

कित्तिय-वंदिय-महिया,

जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा

आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवस्मुत्तमं दिन्तु ॥6॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।

सागरवर्गंभीरा, सिद्धासिद्धिं मम दिसंतु ॥7॥

(हास्मिन्द्रीयावश्यक पृष्ठ 493-509)

* प्राचीन प्रतियों के अनुसार लोगस्सुज्जोयगरे प्रामाणिक है।

::: खड़े होकर ध्यान करने की विधि :::

- (1) दोनों पैरों के अग्रभाग में चार अंगुल एवं पीछे के भाग में उससे कुछ कम अंतर रखते हुए घुटनों को बिना मोड़े सीधी खड़े रहना।
- (2) आँखों को बंद करना या थोड़ी-सी खुली रखकर नासिकाग्र पर टिकाना।
- (3) गर्दन हलकी-सी झुकी हुई रखना।
- (4) हथेलियों को बिना तनाव के खुली रखते हुए हाथों को नीचे लटकाए रखना।
- (5) उत्तरीकरण सूत्र बोलते हुए ध्यान की मुद्रा बनाना। ‘अप्पाण वोसिरामि’ बोलने से पहले काया को स्थिर कर कायोत्सर्व करना चाहिए।

::: बैठकर ध्यान करने की विधि :::

सुखासन में बैठकर रीढ़ की हड्डी को सीधी रखकर नाभि के पास बाँई हथेली पर दाँई हथेली (Right Palm on the left palm) रखकर कायोत्सर्व करना चाहिए।

नोट:- पुरुषों को खड़े होकर ही ध्यान करना चाहिए। शारीरिक अनुकूलता न होने आदि कारणों से जो खड़े-खड़े ध्यान न कर सकें तो वे बैठकर भी कर सकते हैं। बहनों को बैठकर ही ध्यान करना चाहिए।

लोगस्युज्ज्ञोयगरे	- लोक में प्रकाश करने वाले	वासुपुज्जं च	- श्री वासुपूज्य स्वामी को और
धर्मतित्थयरे	- धर्म रूपी तीर्थ को स्थापित करने वाले	विमलं च	- श्री विमलनाथ स्वामी को और
जिणे	- जिनेंद्र (राग, द्वेष को जीतने वाले)	अणंतं	- श्री अनंतनाथ स्वामी को
अरिहंते	- अरिहंत भगवान्, कर्म रूप शत्रु का नाश करने वाले	जिणं	- जिन-रागद्वेष को जीतने वाले
चउवीसंपि	- चौबीसों	धम्मं च	- श्री धर्मनाथ स्वामी को और
केवली	- केवलज्ञानी तीर्थकरों की	संतिं	- श्री शांतिनाथ स्वामी को
कित्तइस्सं	- मैं स्तुति करूँगा	वंदामि	- वंदना करता/करती हूँ
उसभं च	- श्री ऋषभदेव स्वामी को और	कुंथुं	- श्री कुंथुनाथ स्वामी को
अजियं	- श्री अजितनाथ स्वामी को	अरं च	- श्री अरनाथ स्वामी को और
वंदे	- वंदन करता/करती हूँ	मलिलं	- श्री मलिलनाथ स्वामी को
संभवं च	- श्री संभवनाथ स्वामी को और	वंदे	- वंदना करता/करती हूँ
अभिनंदणं	- श्री अभिनंदननाथ स्वामी को	मुणिसुव्यं	- श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी को
सुइं च	- श्री सुमतिनाथ स्वामी को और	नमिजिणं च	- श्री नमिनाथ जिनेश्वर को और
पउमप्पहं	- श्री पद्मप्रभ स्वामी को	रिष्टनेमिं	- श्री अरिष्टनेमि (श्री नेमिनाथ) स्वामी को
सुपासं	- श्री सुपाश्वर्नाथ स्वामी को और	पासं	- श्री पाश्वर्नाथ स्वामी को
चंदप्पहं	- श्री चंद्रप्रभ	तह	- तथा
जिणं	- जिनेश्वर को	वद्धमाणं च	- श्री वद्धमान (महावीर) स्वामी को
वंदे	- वंदना करता/करती हूँ	वंदामि	- मैं वंदना करता हूँ
सुविहिं च	- श्री सुविधिनाथ स्वामी को और	एवं	- इस प्रकार
पुफ्फदंतं	- श्री पुष्पदंत (सुविधिनाथ का दूसरा नाम) स्वामी को	म ए	- मेरे द्वारा
सीअल	- श्री शीतलनाथ स्वामी को	अभिथुआ	- स्तुति किए हुए
सिज्जंस	- श्री श्रेयांसनाथ स्वामी को	विहूय-रयमला	- पाप रज के मल से रहित
		पहीणजरमरणा	- बुढ़ापे तथा मरण से मुक्त

तित्थयरा	- तीर्थ की स्थापना करने वाले	समाहिकरमुत्तमं	- सर्वोत्कृष्टभाव समाधि को
चउबीसंपि	- चौबीसों	दिंतु	- देवे
जिणवरा	- जिनेश्वर देव	चंदेसु	- चंद्रमाओं से भी
मे	- मुझ पर	निम्मलयरा	- विशेष निर्मल
पसीयंतु	- प्रसन्न हों	आइच्चेसु	- सूर्यों से भी
कितिय	- वाणी से कीर्तन किए हुए	अहिंयं	- अधिक
वंदिय	- काया से वन्दन किए हुए	पयासयरा	- प्रकाश करने वाले
महिया	- मन से पूजन किए हुए	सागरवरगंभीरा	- महासमुद्र के समान गंभीर
जे	- जो	सिद्धा	- सिद्ध भगवान
लोगस्स	- लोक में	मम	- मुझको
उत्तमा	- उत्तम	सिद्धिं	- सिद्धि (मोक्ष)
सिद्धा	- सिद्ध भगवान हैं	दिसंतु	- देवें।
ए	- वे		
आरुग्गबोहिलाभं	- आरोग्य अर्थात् मोक्ष के लिए परभव में सम्यक्त्व का लाभ और		

भावार्थ

(तीर्थकरों की स्तुति) तीनों लोकों में धर्म का उद्योत

करने वाले, धर्म तीर्थ की स्थापना करने वाले, राग-द्वेष आदि अंतरंग

शत्रुओं पर विजय पाने वाले चौबीस केवलज्ञानी तीर्थकरों की मैं स्तुति करँगा / करँगी।

सर्वश्री ऋषभदेव जी, अजितनाथ जी, संभवनाथ जी, अभिनंदन जी, सुमतिनाथ जी, पद्मप्रभ जी, सुपार्श्वनाथ जी, चंद्रप्रभ जी, सुविधिनाथ जी, शीतलनाथ जी, श्रेयांसनाथ जी, वासुपूज्य जी, विमलनाथ जी, अनंतनाथ जी, धर्मनाथ जी, शांतिनाथ जी, कुथुनाथ जी, अरनाथ जी, मल्लिनाथ जी, मुनिसुव्रत जी, नमिनाथ जी, अरिष्टनेमि जी, (नेमिनाथ जी), पार्श्वनाथ जी और महावीर स्वामी जी इन चौबीस जिनेश्वरों की मैं स्तुति करता हूँ और उन्हें नमस्कार करता / करती हूँ।

उपरोक्त प्रकार से मैंने जिनकी स्तुति की है जो कर्म मल से रहित हैं, जो जरा और मरण से मुक्त हैं और जो तीर्थ के प्रवर्तक हैं, वे चौबीसों जिनेश्वर देव मुझ पर प्रसन्न हों। जिनका वाणी से कीर्तन, काया से वंदन और मन से भावपूजन किया गया है, जो संपूर्ण लोक में उत्तम हैं और जो सिद्धि (मोक्ष) को प्राप्त हुए हैं, वे भगवान मुझको मोक्ष प्राप्ति के लिए बोधि लाभ दें, अर्थात् जिनधर्म की प्राप्ति करावें तथा सर्वोत्कृष्टभाव समाधि प्रदान करें।

जो चंद्रमाओं से भी निर्मल हैं, सूर्यों से भी विशेष प्रकाशमान हैं, और स्वयंभूरमण नामक महासमुद्र के समान गंभीर हैं, ऐसे सिद्ध भगवान मुझको सिद्धि (मोक्ष) देवें। यद्यपि राग-द्वेष रहित होने से भगवान न किसी पर प्रसन्न होते हैं, न कुछ देते ही हैं, पर उनका ध्यान करने से चित्त शुद्धि द्वारा अभिलाषित फल की प्राप्ति होती है। जिस तरह चितामणि रत्न जड़ होने पर भी उससे वांछित फल की प्राप्ति होती है।

सौरभ की माता जी- सभी बच्चे कल 4

गाथा तक याद करने की कोशिश करेंगे और नितिन, नीलिमा व पंकज आप तीनों को 24 तीर्थकरों के नाम भी बताऊँगी।

प्रतिज्ञा

1. अपने यास के धर्मस्थानक में जाकर चारिन्नात्माओं से एक नया याठ सीखें या घर में बड़ों से सीखें।
2. पाँच लोगस्स का ध्यान करें।





खुशियों का उपवन

व्यस्तुमुक्त जीवन

-राजस्थानश्री डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर
(पूर्व निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन केंद्र)

जैन धर्म मानव धर्म है। जैनाचार्यों ने किसी भी व्यक्ति को जैन धर्म की शिक्षाएँ देने से पूर्व मानव धर्म की शिक्षाएँ प्रदान करना अधिक उचित समझा और वैसा ही किया। भला जो व्यक्ति एक सच्चा-अच्छा मनुष्य नहीं बन सकता वह जैन अथवा किसी भी धर्म का सच्चा अनुयायी कैसे बन पाएगा? जैन धर्म ने मानव मात्र को सप्त व्यसनों के त्याग की प्रबल प्रेरणा दी है। सप्त व्यसनों के बारे में कहा-सुना बहुत जाता है, किंतु अनेक व्यक्ति इन व्यसनों की हानियों से अपरिचित हैं। यहाँ सात व्यसनों के परिचय के साथ उनके नुकसान के बारे में बताया जा रहा है।

1. मांसाहार

सब जानते हैं कि मांस मानव का आहार नहीं है। वैज्ञानिक शोधों व प्रयोगों से यह स्पष्टतः सिद्ध हो चुका है कि प्राकृतिक रूप से मानव शाकाहारी प्राणी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की बुलेटिन संख्या 637 के अनुसार मांसाहार से शरीर में लगभग 160 प्रकार की बीमारियाँ प्रविष्ट होती हैं, जिनमें से कई दुःसाध्य तथा कई असाध्य हैं। भगवान् महावीर ने मांसाहार तथा पर्चेद्रिय वथ को नरक गति के मुख्य कारणों में परिगणित किया है। मांसाहार से मानवता, करुणा, परदुःख कातरता, संवेदनशीलता आदि सद्गुण नष्ट हो जाते हैं। मांसाहार तामसिक होता है, इसलिए वह मानव में निर्दयता, पशुता,

असहिष्णुता, उत्तेजना आदि पैदा करता है। देश-दुनिया में बढ़ रही हिंसा, हत्या, अत्याचार, अपराध, आतंकवाद जैसी घटनाओं का एक मुख्य कारण मांसाहार है।

शाकाहार न सिर्फ आहार, अपितु एक सुविकसित संपूर्ण जीवन शैली है। अब तो पर्यावरण संकट से उबरने के लिए भी मांसाहार छोड़ने की सलाह दी जाने लगी है। अतः न सिर्फ धर्म-दृष्टि, अपितु मनुष्यता और दुनिया को बचाने के लिए भी मांसाहार त्याग देना चाहिए। स्मरण रहे, अंडा और मत्स्य आहार भी स्पष्टतः मांसाहार ही है।

2. मध्यान

मदिरापान से तन, मन और मस्तिष्क पर अत्यंत विपरीत असर होता है। व्यभिचार, महिलाओं पर अत्याचार, सड़क दुर्घटनाएँ, पारिवारिक कलह, आर्थिक तंगी, गरीबी, अपराध, मानसिक तनाव आदि अनेक समस्याओं का कारण मदापान और नशा है। इनके अलावा शराब से हृदय रोग, कैंसर, अल्सर, मधुमेह, नपुंसकता, जोड़ों में दर्द, गुर्दों की कार्यशीलता में कमी आदि कई भयंकर रोग भी होते हैं। शराब स्वास्थ्य, सामाजिकता, सुख और समृद्धि की भयंकर शत्रु है।

हम एक उदाहरण लें। दूध से पात्र आधा भरा है। पात्र को अग्नि पर रखने से दूध उफनता है। लगता है पूरा भर गया। जब अग्नि पर से उसे उतारा जाता है तो

दूध पहले से कम हो जाता है। यही होता है नशे में। लगता है शक्ति आ गई, किंतु नशा उतरने के बाद पता चलता है कि अपार शक्ति का व्यर्थ ही क्षय हो चुका है। इस प्रकार नशा करने वाला धीरे-धीरे अवसाद और थकान से घिरता चला जाता है। नशे से स्नायु तंत्र, बौद्धिक क्षमता और विचार-शक्ति क्षीण हो जाती है। यह जानकर कि 'शराब खराब है' और 'नशा नाश का द्वार है'; मद्यपान का परित्याग कर देना चाहिए।

3. परस्त्री गमन या परपुरुष गमन :::::::::::::

विज्ञान, कथित सभ्यता और मूल्यहीन शिक्षा के विकास के साथ-साथ परंपरागत मान-मर्यादाएँ तथा लज्जा-संकोच में कमी आई है। स्वतंत्रता अच्छी बात है और समय की जरूरत भी, लेकिन स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता और स्वच्छंदाचार बढ़ता है तो खतरा है। किसी व्यक्ति को कोई ऐसा कदम कभी नहीं उठाना चाहिए, जिससे उसके कुल-गौरव और सामाजिक श्रेष्ठता पर कोई आँच आए। बदलते परिवेश में भारतीय विवाह परंपरा का महत्व अप्रत्याशित रूप से बढ़ गया है। दुनियाभर में इसकी सराहना होने लगी है। लोगों को चाहिए कि दूषित हवा के प्रवाह में न बहकर अपने पवित्र आचरण और सुदृढ़ मनोबल से इस उज्ज्वल परंपरा को जीवंत रखें।

परस्त्री गमन (पुरुष के लिए) और परपुरुष गमन (स्त्री के लिए) अत्यंत निम्न स्तर का कार्य है। इससे एक या दो व्यक्ति ही नहीं, अपितु दो या दो से अधिक परिवार कलंकित और तहस-नहस हो जाते हैं। सामाजिक व मानवीय दृष्टि से तो यह दुष्कृत्य हेय (घृणित) है ही, एड्स जैसी महामारी के चलते चिकित्सक और शरीर-शास्त्री भी वैवाहिक सीमा पार न करने की चेतावनी देने लगे हैं।

4. वेश्यागमन :::::::::::::

बुराई तो बुराई है ही, लेकिन बुराई को बुराई नहीं मानना भयंकर बुराई है। पर्यटन और व्यवसाय की आड़ में वेश्यागमन के तरह-तरह के असभ्य और भद्रे रूप सामने आए हैं। देश-विदेश में देह-व्यापार के लिए व्यवस्थित-अव्यवस्थित, वैध-अवैध अनेक लॉबियाँ कार्य कर रही हैं। अब तो स्त्री और पुरुष दोनों ही 'सेक्स वर्कर' (भ्रामक

शब्द) के रूप में कार्य करने लगे हैं। बाल यौन शोषण और बाल वेश्याओं की घटनाएँ दिल दहला देने वाली हैं। इस वासना की धधकती भट्टी में न जाने कितने-कितने व्यक्ति अपना तथा औरौं का जीवन झोंक-झोंककर जीते जी मर रहे हैं, नरक की यंत्रणा भोग रहे हैं तथा इस सुंदर संसार को भी नरक तुल्य बना रहे हैं।

पर स्त्री-पुरुष गमन व वेश्यागमन, दोनों व्यसन वासना की उच्छृंखलता के दुष्परिणाम हैं एवं सामाजिकता और सदाचार के कट्टर दुश्मन हैं। जिस देश में पूर्ण ब्रह्मचर्य की बात कही गई हो और हर काल, हर समय में अनेक ब्रह्मचारी स्त्री-पुरुष होते हों, वहाँ शील-सदाचार का तेज फीका पड़ने लगे तो चिंता होने लगती है। हम हमारी सत्य-निष्ठा और शील-साधना से सदाचार के सूर्य को सदा तेजस्वी और प्रकाशमान बनाए रखें।

5. शिकार :::::::::::::

अपने स्वार्थ, शौक और स्वाद की पूर्ति के लिए मानव ने न जाने क्या-क्या क्रूर तरीके इजाद कर लिए। शिकार मनुष्य की कायरता और मूर्खता को दर्शाने वाला क्रूर कृत्य है। शिकार कोई राजा-महाराजा करे या बनवासी या कोई अन्य, इसमें कोई निरीह प्राणी महज मनोरंजन, शौक, स्वार्थ या स्वाद के लिए कथित बहादुरी के साथ कायरतापूर्ण तरीके से छिपकर या धोखे से मार दिया जाता है। जिस जानवर या पशु को मारा जाता है वह नितांत निर्दोष तो होता ही है, निःशस्त्र भी होता है।

आज पर्यावरण के लिए वन्य जीव संरक्षण के कानून बने हैं, अभ्यारण्य बने हैं और कई प्रकार के उपाय किए जा रहे हैं। जैन धर्म के अहिंसा अभियान के क्रम में जैनाचार्यों व संतों ने लाखों-करोड़ों व्यक्तियों को शिकार के व्यसन से मुक्त किया है, जिससे अगणित वन्य जीवों व दुर्लभ प्रजातियों की रक्षा हुई। प्रकृति, पर्यावरण और निखिल मानवता के हित में शिकार या आखेटवृत्ति का परित्याग कर देना चाहिए।

6. चोरी :::::::::::::

चोरी, लूट, डैकैती, आक्रमण या कपट से किसी का धन या अन्य माल-ताल हरण कर लेना भी व्यसन है। चौर्यकर्म आर्य (उत्तम) मानव का कार्य नहीं है। भगवान्

महावीर ने पाँच व्रतों में अचौर्य या अस्तेय को स्थान दिया है। धन व साधन जीवन के लिए आवश्यक होते हैं, इसलिए स्वभावतः सबको प्रिय होते हैं। इन्हें छीनकर किसी को प्रताड़ित करना या धोखा देना बहुत बुरा है। चोरी सामाजिक शांति और राष्ट्रीय प्रगति में बाधक है तथा दंडनीय अपराध है। आर्थिक जगत् में होने वाले घोटाले तथा भ्रष्टाचार आदि चौर्यकर्म के विविध रूप हैं।

जीवन में प्रामाणिकता होने से विश्वसनीयता बढ़ती है और विश्वास से सफलताएँ मिलती हैं। सदा सर्वत्र विश्वसनीय बने रहने के लिए दूसरों के धन साधन को नाहक प्राप्त करने की मन से चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

7. जुआ

जुआ कभी किसी का नहीं हुआ। श्रमहीनता, निष्क्रियता, आलस्य, कोरी भाग्यवादिता और रातों-रात धनपति बनने की मिथ्या लालसा में आदमी जुआ और दूत-क्रीड़ा की बुरी लत में बुरी तरह फँस जाता है। जुआ एक नितांत अनुत्पादक कर्म है। इसलिए यह राष्ट्र के लिए अहिंतक और गरीबी का जनक है। आर्थिक उन्नति और समाजोत्थान में यह बड़ा अवरोधक है।

मेहनत और कर्तव्य भावना से धनोपार्जन करने का आनंद कुछ और ही होता है। जुआरी उस आनंद से वंचित रहता है। जुए से स्थायी सुख समृद्धि नष्ट हो जाती है। जुआ की लत ने कई व्यक्तियों और परिवारों को कंगाल कर दिया। यहाँ तक कि जुए से बड़ी-बड़ी सत्ताएँ और जागीरें भी समाप्त हुई हैं। शौक से जुआ

खेलना भी अच्छी बात नहीं है। ऐसा करने से जीवन के अनमोल क्षण तो नष्ट होते ही हैं, एक गलत आदत को भी प्रोत्साहन मिलता है। पुरुषार्थ में विश्वास करने वाले को जुआ जैसे व्यसन से सदैव बचना चाहिए।

इन सात कुव्यसनों के अलावा भी वर्तमान में कई प्रकार के अन्य व्यसनों से आदमी जकड़ता जा रहा है। धूम्रपान, तंबाकू, गुटका, भांग, गांजा, चरस, अफीम आदि व्यसन स्वास्थ्य, सुख व समृद्धि को नष्ट कर रहे हैं। शौक, कुसंग, व्यावसायिक बहाना या अज्ञानवश आदमी कोई व्यसन शुरू कर बैठता है और धीरे-धीरे उस व्यसन का वह गुलाम हो जाता है।

सप्त व्यसनों तथा अन्य व्यसनों का त्याग करके एक मानव सही मायने में श्रेष्ठ मानव बन सकता है। व्यक्ति-निर्माण, समाज-कल्याण तथा राष्ट्र-विकास के लिए व्यसनमुक्त जीवन जीना बहुत आवश्यक है। वर्तमान में कई समाजों, संगठनों व संस्थाओं से व्यसनमुक्ति आंदोलन के स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। आचार्य श्री नानेश ने समता दर्शन के अंतर्गत भी व्यसनमुक्त जीवन की राह बताई। वर्तमान आचार्य श्री रामेश भी व्यसनमुक्ति का आह्वान बार-बार कर रहे हैं। हमारा यह पुनीत कर्तव्य होना चाहिए कि हम स्वयं व्यसनमुक्त बनें और दूसरों को भी व्यसनमुक्ति की मंगल प्रेरणा दें। ऐसा करके हम एक स्वस्थ व समतामय समाज के निर्माण में सहभागी बनेंगे और देश की युवा पीढ़ी को अधिक तेजस्वी और ऊर्जावान बनाए रख सकेंगे।



रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुख्यपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक 'महत्तम उद्देश्य' विषय पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीत्रातिशीत्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com पर हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।



-श्रमणोपासक टीम



कैसे करें व्यक्तित्व निर्माण ?

-पदमचंद गाँधी, जयपुर

स्व यं को गढ़ने की प्रक्रिया का नाम है- व्यक्तित्व। व्यक्तित्व के गुणों के द्वारा ही व्यक्ति की पहचान होती है। व्यक्तित्व में केवल शारीरिक गठन, रूप, पोशाक आदि बाह्य प्रभावक तत्त्व का ही समावेश नहीं होता, अपितु उसमें व्यक्ति के चिंतन, अभिव्यक्ति एवं आचरण का भी समावेश होता है। व्यक्तित्व ही व्यक्ति की समग्र योग्यताओं-अयोग्यताओं एवं क्रियाकलापों का प्रतिबिंब होता है। व्यक्ति की बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक क्षमताएँ ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करती है। व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है भीतर से भव्य बनना। बाहर से प्रदर्शन करने वाला व्यक्ति भले ही वह कितना आकर्षक क्यों न हो, उसका व्यक्तित्व श्रेष्ठ एवं विकसित नहीं हो सकता, जब तक वह भीतर से भव्य न हो। व्यक्तित्व वह सुंदर होता है जो ग्रंथि रहित हो, जिसके भीतर गाँठ या दुराभाव न हो। ग्रंथि रहित होने के कारण ही जैन श्रमणों को निर्ग्रंथ कहा जाता है। आज हम हमारे व्यक्तित्व को भीतर से नहीं, बाहर से सुंदर एवं आकर्षक बनाने में जुटे हुए हैं। इसके लिए हम उचित-अनुचित सभी तरह के साधन जुटाने के लिए तत्पर रहते हैं। आकर्षक, सुंदर और अच्छा व्यक्तित्व व्यक्ति के सद्गुणों से, आध्यात्मिक गुणों से परिष्कृत होता है जिससे व्यक्तित्व में निखार आता है। व्यक्तित्व

निर्माण के लिए निम्न आवश्यक गुणों को अंगीकार करना जरूरी है -

1. व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम पाठशाला घर-परिवार

व्यक्तित्व निर्माण में घर-परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब बालक कोरा कागज होता है उस उम्र में परिवारजन एवं माता-पिता की सही परवरिश करना बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। बालमन को समझकर उसके प्रति किया जाने वाला व्यवहार ही कालांतर में उसके व्यक्तित्व को संवारता है। परिवार के संस्कार से ही वह सुसंस्कारित होता है और विकास के आयामों को ढूँता है। घर कितना बड़ा हो, साधन कितने ही उपलब्ध हों, यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है घर के अंदर कितना प्यार, कितना विश्वास, कितना अपनत्व समेटे हुए हैं। उसके प्रति किया जाने वाला अच्छा व्यवहार ही उसके व्यक्तित्व को संवारता है। नेशनल स्टैटिस्टिक्स बोर्ड द्वारा किए गए शोध अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि जो बच्चे घर के अंदर अपने माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्यों से ढेरों बातें साझा करते हैं, वे बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में प्रसन्न एवं विकसित होते हैं। क्योंकि ग्रुप काउंसलिंग, ग्रुप डिस्कशन से समस्याओं का समाधान, विचारने की

शक्ति स्वतः प्राप्त हो जाती है। अतः व्यक्तित्व विकास के लिए बच्चों से दूरियाँ न बनाएँ, न ही बच्चों को उपेक्षित करें और न ही आवश्यकता से अधिक ममत्व भाव रखकर साधन जुटाएँ। उन्हें संतुलित एवं अनुकूल खुशहाल माहौल बनाकर देंवे। घर-परिवार में इतना प्यार मिले कि उन्हें लिए अन्यत्र कहीं भटकने की आवश्यकता न हो। उन्हें यह अहसास हो कि अभिभावक एवं परिजन सदैव उनके पास हैं, उनके साथ हैं। ऐसी स्थिति उन्हें विश्वास एवं संबल प्रदान करती है, जिससे वे आगे बढ़ते हैं।

2. व्यक्तित्व विकास का साधन है

आत्म-मूल्यांकन

जीवन की वास्तविक सफलता और सार्थकता के लिए स्वयं के भीतर ‘स्व’ की खोज जरूरी है। ‘स्व’ की खोज ही परम पुरुषार्थ है, परमज्ञान है। ‘स्व’ के ज्ञान का उद्घाटन सत्य के स्वरूप से होता है। अतः सत्य को स्वीकार करना जरूरी है। स्वयं का मूल्यांकन या आत्म-विश्लेषण एक ऐसा दृष्टिकोण होता है, जिससे व्यक्ति दूसरों की सहायता के बिना अपने आपको समझ सकता है। स्वयं के मूल्यांकन बिना व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता। स्वयं ही अपना विकास करता है। कहा भी गया है-

**तू ही मूर्तिकार स्वयं का, तू ही है पाषाण।
तू ही छेनी और हथौड़ा, कर खुद का खुद निर्माण॥**

स्वयं को गढ़ने की प्रक्रिया विश्व का सबसे कठिन कार्य माना जाता है, लेकिन इसका जुनून, इसका बोध व्यक्ति को आगे बढ़ा देता है और सभी आए अवरोध हट जाते हैं। इसके लिए आवश्यक है -

(क) आत्म-निरीक्षण : स्वयं की जाँच-पड़ताल, स्वयं का निरीक्षण स्वयं को करना है। मानसिक विकारों से बचने के लिए ‘स्व’ अवलोकन जरूरी है। इसके द्वारा मानसिक समस्याओं की पहचान की जा सकती है। स्वयं की आदतों से गहराई से चिंतन-मनन कर लिया जाता है, लेकिन स्वयं की दूसरों से तुलना, जलन, ईर्ष्या, चिढ़न, लालच जैसे भाव लगातार इनसान के चिंतन का हिस्सा बने रहने पर उसकी मनोदशा के



सहज हिस्से की तरह लगते हैं तथा उसे असंतुलित कर अवसाद, उन्माद, उद्दंडता की ओर धकेल देते हैं। व्यक्ति द्वारा ‘स्व’ के स्थान पर ‘पर’ मूल्यांकन करने से स्वयं के मौलिक गुणों की अभिवृद्धि नहीं हो पाती। अतः दूसरों से तुलना नहीं करके स्वयं पर ध्यान केंद्रित करें। इससे वह जान सकेगा- ‘मेरी दुर्बलता क्या है, क्षमता कितनी है, पात्रता कितनी है’। ऐसा करके वह अपनी दुर्बलताओं, कमजोरियों को दूर कर आदतों को सुधार सकता है।

(ख) आत्म-सुधार : व्यक्ति जब आत्म-निरीक्षण कर लेता है तो जो कमियाँ दिखती हैं उनसे जीवन की हताशा, निराशा दूर होती है। इसके अंतर्गत तन, मन और प्राण या आत्मा को साधना के साँचे में तपाया जाता है, जो व्यक्ति के धैर्य, जीवट एवं आस्था की परीक्षा करता है। जो व्यक्ति आत्मशोधन द्वारा स्वयं को शुद्ध बनाता है, सरल बनाता है, इस प्रक्रिया का नाम ही आत्म-सुधार है। ‘अप्प दीपो भव’ को चरितार्थ करता है।

(ग) आत्म-निर्माण : गहरी नींव पर भव्य इमारत का निर्माण होता है, लेकिन आज हम कँगरू की चमक को देखते हैं, उसकी साज-सज्जा को देखते हैं। नींव के पथर बोलते नहीं हैं, दिखते नहीं हैं, लेकिन इमारत को सुरक्षित रखते हैं। ऐसे ही आत्मिक सद्गुणों के अर्जन करने से उनमें अभिवृद्धि करने से आत्म-निर्माण संभव है। आध्यात्मिक व्यक्ति का व्यक्तित्व व्यापक एवं विस्तृत होता है। उसकी मानसिकता में ‘मैं’ व ‘मेरा’ नहीं, वरन् ‘हम’ व ‘हमारा’ होता है। उसका दायरा सामान्य व्यक्ति की तरह संकीर्ण, सँकरा और सीमित नहीं होता। उसके व्यक्तित्व की सर्वोपरि

विशेषता होती है उसका अनुभव। उसके अनुभव की गहराई एवं व्यापकता में ही उसका व्यक्तित्व परिभाषित होता है। इसी में उसके विकास की अनंतता छिपी हुई रहती है। इसी कारण यह एक सामान्य देह में होकर भी आकाश पुरुष बन जाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति का आंतरिक जीवन परिवर्तित, परिष्कृत एवं परिवर्द्धित होता है। वह देह में रहकर भी देहातीत होता है। उसका उद्देश्य देह नहीं, आत्मा होता है। 'मैं' और 'मेरा' का तात्पर्य है 'अहं' और 'स्वार्थ'। हमारे सारे सुख और दुःख इन्हीं स्वार्थ एवं अहंपूर्ति में लगे रहते हैं। इसलिए हमारी मानसिकता एवं अनुभव संकीर्ण व संकुचित हो जाते हैं। जबकि आध्यात्मिक व्यक्ति की सोच समग्र मानव जाति के लिए होती है, विश्वव्यापी होती है, जिसमें केवल समष्टिगत विकास एवं कल्याण निहित होता है। व्यक्तित्व के समग्र विकास में भावनात्मक संवेदन, अनुभव की व्यापकता व मानसिकता में रूपांतरण आवश्यक है। ऐसे व्यक्ति संसार से लेते कम हैं, लेकिन देते ज्यादा हैं। उनका व्यक्तित्व अद्भुत एवं अतुलनीय होता है। अतः व्यक्तित्व के विकास के लिए निर्माण के पथ का अनुसरण आवश्यक है।

(घ) आत्म-विकास : उपरोक्त तीनों स्थितियों की पात्रता ग्रहण करने के बाद शुरू होता है आत्म-विकास। व्यक्तित्व विकास के लिए अर्जित समय, श्रम, योग्यता, प्रतिभा, विभूति, धन, प्रभाव आदि का नियोजन लोकहित में, परमार्थ में किया जाए। यह विराट के हित संकीर्ण, स्वार्थ एवं क्षुद्र अहंकार के विसर्जन की प्रक्रिया है। निष्काम भाव के साथ निःस्वार्थ सेवाभाव के रूप में यह आत्म-विस्तार का परम पुरुषार्थ है। आत्म-विकास का दृष्टिकोण एकांतवादी होता है, व्यक्तिगत है, लेकिन विचार, लक्ष्य एवं परिणाम लोकगामी होते हैं। ऐसी प्रक्रिया ही विकास के मार्ग को आगे बढ़ाती है, जिससे व्यक्तित्व में वृद्धि होती है।

3. व्यक्तित्व का आधार है व्यवहार

हमारे जीवन के तीन महत्वपूर्ण आयाम हैं—**चिंतन, चरित्र और व्यवहार।** इन तीनों में भी व्यवहार

एक ऐसा विशिष्ट आयाम है जिसके माध्यम से हमारा चिंतन और चरित्र अर्थात् संपूर्ण व्यक्तित्व अभिव्यक्त होता है। मस्तिष्क में उठने वाली कल्पनाएँ, सोच-विचार हमारे चिंतन क्षेत्र का निर्माण करती हैं तथा हमारी भावनाओं में घुली-मिली आस्थाएँ, विश्वास, रुचियाँ, प्रवृत्तियाँ, संस्कार आदि मिलकर चरित्र को आकार देते हैं, लेकिन फिर भी इसके अभिव्यक्ति का आधार व्यवहार ही है और व्यवहार ही हमारे व्यक्तित्व को एक नई पहचान देता है। व्यवहार में कुशलता, सरलता, शालीनता और पवित्रता को सामाजिक दृष्टि से समस्त साधनाओं का मूलाधार माना गया है। कहा भी गया है— शालीनता बिना मोल मिलती है, परंतु उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है तथा व्यवहार की सौम्यता, सरलता और मधुरता से व्यक्ति मनोवांछित सफलता और कार्यसिद्धि प्राप्त कर सकता है। अच्छे संस्कारों, अच्छे चरित्र से युक्त व्यक्ति का व्यवहार ही हमारे जीवन व व्यक्तित्व को एक विशिष्ट पहचान देता है। व्यवहार की विशेषताएँ ही हमें औरें से अलग और विशिष्ट बनाती हैं, इसलिए सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में मानवीय व्यवहार प्रमुख अंग माना गया है। व्यवहार की मधुरता से प्रेम, मित्रता, सहानुभूति और आत्मीयता जैसे उच्च स्तरीय व्यक्तित्व के गुण जाग्रत और विकसित होते हैं। मधुरता का चयन जीवन के आचरण और व्यवहार में मधुरता लाता है तथा व्यक्तिगत जीवन और समाज में सामंजस्य, सर्वभाव, प्रेम, सहानुभूति और स्नेह उत्पन्न कर जीवन में सुख, शांति एवं प्रसन्नता प्रदान करता है। यदि व्यक्ति मधुर व्यवहार से युक्त होता है तो उसे समाज में स्नेह, आत्मीयता के साथ-साथ शौर्य, पराक्रम, ओजस्विता और वर्चस्विता जैसी उपलब्धियाँ भी सहज में प्राप्त हो जाती हैं। व्यक्ति में मधुरता का आकर्षण सर्वोपरि है। ऐसा व्यक्ति जहाँ पर भी रहता है, वहाँ निरंतर सद्भावना, प्रेम और सहानुभूति का संचार होने लगता है।

4. व्यक्तित्व का आभूषण है विकाय

विनप्रता हमारा आत्मीय गुण है, जो न केवल

हमारे व्यक्तित्व में निखार लाती है, बल्कि कई बार सफलता का कारण भी बनती है। विनम्रता के कारण जो सम्मान मिलता है उसका अलग ही महत्व है। मन की कोमलता और व्यवहार में विनम्रता एक बड़ी शक्ति है। कोमलता सदा जीवित रहती है, जबकि कर्कशता एवं कठोरता का शीघ्र ही विनाश हो जाता है। विनम्रता कायरता नहीं है। यह व्यक्ति को शांति, सहनशीलता, शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है। विनम्रता के सामने कितना ही कठोर व्यक्ति क्यों न हो, वह पिघल जाता है। विनम्रता से ही हम छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर अपने जीवन को खुशहाल बनाते हैं। जो विनम्र होता है, वह हर जगह सम्मान पाता है। विनम्रता व्यक्ति के भीतर सत्पात्रता जाग्रत करती है। विनम्रता व्यक्ति के जीवन को सँवारती है।

5. हमारे व्यक्तित्व का आईना है हमारी वाणी

वाणी, मनुष्य का दर्पण एवं व्यक्तित्व का आईना है। वाणी से ही इस बात का परिचय मिलता है कि व्यक्ति का मन कैसा है, उसका स्वभाव कैसा है, उसका स्तर कितना है। इन सबको ध्यान में रखकर ही व्यक्ति वाणी-संयम द्वारा अपना व्यक्तित्व निखारता है। वाणी में ही व्यक्ति की मनोभिव्यक्ति, भावाभिव्यक्ति, वैचारिक अभिव्यक्ति, काल्पनिक अभिव्यक्ति और अनुभवों की अभिव्यक्ति समाविष्ट होती है। हमारी वाणी, हमारे शब्द, हमारी भाषा अंतःकरण पर अमिट छाप छोड़ते हैं, जिससे स्वभाव और चरित्र का निर्माण होता है। वाणी का प्रयोग एक विशिष्ट कला है और आचार का प्रमुख अंग है। जो व्यक्ति मधुर हो, निपुण हो अर्थात् हितकारी हो, परिमित हो, प्रयोजन होने पर ही बोलता है, जो गर्व रहित हों, तुच्छ न हों, बुद्धि से विचार कर बोले और जो धर्ममय हों, ऐसे वचन बोलना ही वाणी-संयम है और साधक इन्हीं पर चलकर अपना व्यक्तित्व सँवारता है।

6. हमारा व्यक्तित्व परिधानों का मोहताज न हो

परिधान व्यक्तित्व की रुचि और रूझान का

प्रतीक है। वेशभूषा तन ढकने का और सौंदर्य बोध प्रदान करने का सुंदर माध्यम है। तन ढकना एक अपरिहार्य आवश्यकता है, लेकिन सुंदरता के लिए इसका चयन एक कलात्मकता है। यह कलात्मकता अपनी अलग पहचान बनाने के लिए की जाती है। जबकि पहचान व्यक्ति की अपनी होनी चाहिए, जिसमें परंपरा, प्रथा या शैलियों का अंधानुकरण नहीं हो। परिधानों का अंधानुकरण इस कदर हो रहा है, जिसमें हमारी नैतिकता एवं मौलिकता दाँव पर लग रही है। परिधान आधुनिकता के माप का पैमाना नहीं है। भारतीय परिधानों के लिए देह एक माध्यम है, वह सर्वोपरि नहीं है। यहाँ पर देह की पहले सुरक्षा, संरक्षण है, बाद में सौंदर्य। वेशभूषा हमारी देह के अनुकूल हो, न कि प्रतिकूल। ऐसे परिधान जो शरीर को कष्ट पहुँचाएँ, पीड़ादायी हों, जिन्हें थोड़ी देर बाद उतारने का मन करें, वे परिधान उपयुक्त नहीं हैं। केवल वेशभूषा ही सौंदर्य का प्रतीक नहीं है। सुंदरता परिधानों में नहीं वरन् आत्मीय गुणों से होती है। गुणविद्धी व्यक्ति कितना भी कीमती, अलंकृत परिधान क्यों न पहन ले, महत्व नहीं रखता। गाँधी जी आधी धोती में भी भव्यात्मा लगते थे। जैन साधु-साध्वियों की आभा मैले-कुचेले परिधानों में भी स्पष्ट झलकती है। मीरा को ब्युटी पार्लर की आवश्यकता नहीं पड़ी, बल्कि उनकी भक्ति उनका परिधान था। महावीर, बुद्ध, जैन आचार्यों का भव्य व्यक्तित्व परिधानों का मोहताज नहीं है, उनका व्यक्तित्व स्वतः चमकता है। अतः वेशभूषा ऐसी हो जो व्यक्तित्व को निखारने में मददगार बने। व्यक्ति परिधानों का मोहताज नहीं बनें तथा नायक, मॉडल आदि का अनुसरण नहीं करें।

इस प्रकार स्पष्ट व्यक्तित्व निर्माण कदम-कदम पर अपने दिव्य आत्मीय गुणों को दृष्टिगत रखकर करना चाहिए। ये सतत अभ्यास से विकसित होते हैं। ऐसे सभी दिव्य एवं अभीष्ट गुण स्वयं के भीतर ही विद्यमान हैं। आवश्यकता है उन्हें प्रकट करने की।





व्यक्तित्वः एक मीमांसा

-प्रो. सुमेरचंद जैन,
बीकानेर

विश्व में प्रायः लोग साधारण लक्ष्य और साधारण कार्य करते हुए अपने जीवन को पूरा कर देते हैं। लेकिन इसी भीड़ में कुछ लोग असाधारण ऊर्जा, असाधारण उल्लास, असाधारण आत्मविश्वास और असाधारण तेज से विश्वपटल पर आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं। वे अपने चारों ओर एक प्रभाव क्षेत्र का निर्माण कर लेते हैं। व्यक्ति की इसी आंतरिक शक्ति का नाम **व्यक्तित्व** है।

व्यक्तित्व निर्माण आज ज्वलंत चर्चा का विषय है। इस शब्द को यदि हम भारतीय दृष्टिकोण से समझें तो इसकी परिभाषा होगी व्यक्ति का त्व। उसकी मौलिकता, उसका आंतरिक स्वभाव और तेज जो बाहर व्यक्त होता है। व्यक्ति की अभिव्यक्ति, जो उसके गुण कर्म विशेष से निर्धारित है, वह व्यक्तित्व कहलाता है। इस अभिव्यक्ति का आशय केवल शारीरिक क्रियाओं अर्थात् बोलना, उठना, बैठना या कुछ करने से नहीं, बल्कि उस आंतरिक तत्त्व से है जो बाहरी वातावरण पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव छोड़ती है। व्यक्तित्व अंतर्मुखी प्रक्रिया है, जिसका परिणाम बाहर प्रकट होता है। अनेक बार देखा जाता है कि मौन रहकर या कुछ नहीं करके भी व्यक्ति दूसरों को प्रभावित करते हैं।

यह उनके आंतरिक व्यक्तित्व का ही असर है।

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले अनेक बाह्य और आंतरिक कारण होते हैं। आस-पास का वातावरण, पारिवारिक लोग और पास-पड़ोस की छाप भी व्यक्तित्व पर पड़ती है। माता-पिता आदि पारिवारिकजनों द्वारा दिए गए संस्कार तथा उनके आचरण से प्रत्येक शिशु बहुत कुछ सीखता है। विशेषकर बाल्यावस्था में प्रत्येक बालक अनुकरण-अनुसरण विधि से परिवार के हर सदस्य से कुछ न कुछ ग्रहण करता है। आगे जाकर वे ही क्रियाएँ और विचार उसके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग बन जाते हैं। किशोरावस्था में जब वह समुदाय अथवा समाज के संपर्क में आता है तो प्रचलित मान्यताओं और विचारों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। इसी प्रकार शिक्षा तंत्र, राजनीति, धर्म, सांस्कृतिक, पर्यावरण, आर्थिक ढाँचा और सामाजिक संरचना आदि समस्त इकाइयों का प्रभाव उसकी जीवन पद्धति पर पड़ता है और धीरे-धीरे उसका आंतरिक ढाँचा गठित होकर व्यक्तित्व का रूप ग्रहण कर लेता है। इन्हीं के आधार पर व्यक्ति की सभ्य या असभ्य वृत्तियाँ निर्मित होती हैं। यह प्रक्रिया गर्भावस्था से प्रारंभ होकर शैशव, किशोर, युवा, प्रौढ़ तथा वृद्ध आदि अवस्थाओं तक चलती है। नाड़ी तंत्र भी हमारे व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करता है।

संगति का भी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सकारात्मक या नकारात्मक असर होता है। ये सभी तत्त्व मानसिकता का निर्माण करके व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न होता है। यही उसकी निजता होती है। जो व्यक्ति अपनी भीतरी क्षमताओं का जितना अधिक उपयोग करते हैं, मूल्यों के साथ जीते हैं, संस्कृति की सुरक्षा करते हैं, उनका व्यक्तित्व उतना ही प्रभावी बन जाता है। जो इनकी अवहेलना करते हैं, उनका व्यक्तित्व उतना ही स्थूल अथवा सामान्य होता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि व्यक्तित्व का निर्माण और विकास अंतःपक्षीय होता है। जिसकी अभिव्यक्ति

बाहर दिखाई देती है। वर्तमान में व्यक्तित्व विकास का आधार शारीरिक सौंदर्य का विकास अथवा अभिव्यक्ति कौशल को मान लिया गया है। व्यक्तित्व की इसी भ्रमित अवधारणा के कारण लोगों ने इसका व्यावसायीकरण कर दिया है। व्यक्तित्व निर्माण के नाम पर आज शहरों, गाँवों और कस्बों में अनगिनत प्रपंच चल रहे हैं, अभिजात्य मुखौटे पहनाए जा रहे हैं। शरीर और शरीर से व्यक्त होने वाली क्रियाओं को सुंदर बनाया जा रहा है। जिसमें केवल यह सिखाया जाता है कि कैसे बोलें? कैसे चलें? कैसे उठें? कैसे बैठें? कैसे कपड़े पहनें? कैसा और कितना खाना खाएँ? आदि। यह माना जा रहा है कि इन सब चीजों को ठीक कर लेने से एक आकर्षक व्यक्तित्व बन जाएगा।

व्यक्तित्व निर्माण की इस प्रक्रिया से बाहर और

भीतर इतना अंतर्विरोध पैदा हो जाता है कि वास्तविक व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। जब अंतरंग और बहिरंग व्यक्तित्व साथ-साथ विकसित होते हैं तब **सत्यं शिवं सुंदरं** की समुन्नति हो जाती है अथवा एकपक्षीय व्यक्तित्व का विकास अधूरेपन की त्रासदी देता रहता है। मानसिक पक्ष को यदि सबल बना दिया जाए तो फिर किसी को दिखावे की जरूरत नहीं पड़ती।

कुछ व्यक्ति बाह्य रूप से सामान्य होते हुए भी आंतरिक दृष्टि से असामान्य व्यक्तित्व के धनी होते हैं। अष्टावक्र, चाणक्य, सुकरात और महात्मा गांधी का बाह्य व्यक्तित्व भले ही आकर्षक नहीं था, लेकिन उनका आंतरिक व्यक्तित्व ज्ञान, साधना और उच्च सोच की सुगंध से परिमंडित था। इसलिए वर्षों बीतने पर भी वे जनमानस के हृदय में अपना स्थान बनाए हुए हैं।



15-16 अप्रैल 2024 अंक में प्रकाशित

ज्ञान से खिलता जीवन प्रश्नोत्तरी का परिणाम एव सही हल

1. 2623वाँ	(पेज नं. 32)
2. बालमन में उपजे ज्ञान	(पेज नं. 31)
3. बच्चे संस्कारवान बनें	(पेज सं. 31)
4. अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह	(पेज सं. 32)
5. अनेक परीषह	(पेज सं. 32)
6. सौरभ की माता जी, सौरभ, नितिनि, नीलिमा, पंकज	(पेज सं. 31)
7. अंतिम (चौबीसवें)	(पेज सं. 31)
8. 30 वर्ष	(पेज सं. 32)
9. भगवान महावीर का	(पेज सं. 31)
10. भगवान महावीर जन्मकल्याणक का उत्साह	(पेज सं. 32)

::::: परिणाम :::::

1. दीपक बुच्चा, कोयंब्दूर,
2. गीता कोठारी, कानोड़,
3. तारा सेठिया, बीकानेर,
4. किरण जैन, कांकेर,
5. रानी पगारिया, रत्लाम।



दिखावे का चक्रव्यूह

-सुरेश बोरदिया, मुंबई

यह एक ऐसा चक्रव्यूह है, जिसमें व्यक्ति इस तरह फँस जाता है कि पुनः बाहर नहीं निकल पाता। पारिवारिक या सामाजिक किसी भी तरह का आयोजन हो, उसमें व्यक्ति अपनी क्षमता से अधिक व्यय करके झूठा दिखावा करना चाहता है। आवश्यकता या क्षमता से अधिक व्यय किसलिए? सिर्फ दिखावा और अपने आपको वास्तविकता से अधिक प्रदर्शित करने के लिए। अपनी झूठी शान के प्रदर्शन के कारण वह अपनी आर्थिक स्थिति को स्वयं अपने ही हाथों इतनी क्षति पहुँचा देता है कि जीवनभर उस परिस्थिति से उबर नहीं सकता। कई प्रसंग ऐसे भी सुनने में आते हैं कि प्रदर्शन के ऐसे चक्रव्यूह में फँसकर लोग अपनी पैतृक संपत्ति को भी खो देते हैं या नए कर्ज में उलझ जाते हैं।

ऐसे अत्यधिक व्यय का क्या उद्देश्य? सिर्फ दिखावा, प्रदर्शन, एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा। झूठी शान, आडंबर, आपसी स्पर्धा आदि दिखावे के अलग-अलग प्रकार हैं। प्रत्येक आयोजन में व्यक्ति की सोच रहती है कि मैं ज्यादा खर्च करूँ तो मेरा नाम होगा या अमुक व्यक्ति ने इतना खर्च किया है तो मैं उससे भी अधिक खर्च करूँ। ऐसी अंधी दौड़ तथा नित नए पनपते अनावश्यक रीति-रिवाजों ने ऐसे दिखावे को अत्यधिक बढ़ावा दिया है। जोश-जोश



में व्यक्ति अपनी क्षमता से कई गुना अधिक खर्च कर तो देता है, लेकिन उसका परिणाम न सिर्फ उसको बल्कि उसकी आने वाली पीढ़ी को भी भुगतना पड़ता है।

दिखावे ने समाज पर इतना आधिपत्य जमा रखा है कि अब तो धार्मिक आयोजन भी इसकी चपेट में आने लगे हैं। कोई तपस्या करता है तो उसका लक्ष्य कर्मनिर्जरा का होना चाहिए, लेकिन आजकल ऐसा प्रचलन बढ़ता जा रहा है जिसमें तपस्या के समापन पर कई तरह के आडंबर, अनावश्यक रीति-रिवाज देखे जा सकते हैं। तपस्या जैसे धार्मिक आयोजनों में ऐसे आडंबरों के बीच तपस्या का मुख्य लक्ष्य गौण होता जा रहा है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में कई तरह की कुरीतियाँ पनपती रहती हैं। जैसे कि कई तरह की बीमारियाँ, महामारियाँ कई बार होती रहती हैं, लेकिन कुशल वैद्य या डॉक्टर ऐसी बीमारियों का इलाज दूँढ़ ही लेते हैं। उसी तरह समाज में फैलती कुरीतियों के उन्मूलन के लिए भी कई समाज सुधारक समय-समय पर प्रयास कर चुके हैं।

दिखावा एक ऐसा महारोग है जो सदियों से चला आ रहा है और पिछले कुछ वर्षों में यह चरम पर पहुँच गया है। पिछली सदियों में जो समाज सुधारक हुए हैं,

उनके प्रयासों से कुरीतियाँ नियंत्रित अवश्य हुईं, लेकिन समाज इन कुरीतियों से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो सका। इसका कारण ऐसे दिखावों के सामने व्यक्ति स्वयं समर्पण करता गया और उसी समर्पण का परिणाम रहा कि आगे से आगे कुरीतियों की नई स्पर्धाएँ बढ़ती गईं।

कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी, विशिष्ट महापुरुष जो करुणा से ओत-प्रोत होते हैं, वे समाज की ऐसी दुर्दशा को देखकर द्रवित हो जाते हैं। उनकी करुणा समाज के लोगों का सुधार करने को अग्रसर होती है। उनकी कल्पना मात्र कल्पना नहीं रहकर संकल्प बन जाती है और वह संकल्प उनके लक्ष्य तक पहुँच भी जाता है।

:::::::::: व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर :::::::

ऐसे ही महापुरुष थे आचार्य श्री नानालाल जी म.सा।। अद्भुत विरल व्यक्तित्व से संपन्न। अपने जीवनकाल में उन्होंने सिर्फ जैन समाज के लिए ही नहीं अपितु मानवमात्र के लिए, जीवमात्र के लिए एक ऐसा संकल्प लिया जो आज समता दर्शन के रूप में विश्व में अपनी पहचान व प्रभुत्व जमा चुका है।

जीवमात्र के बीच परस्पर बढ़ती जा रही विषमता को उन्होंने अनुभव किया और उनके रचनात्मक व्यक्तित्व ने कुछ ऐसा करने का संकल्प लिया जिससे विषमता को दूर कर समता समाज की रचना हो। ऐसे निर्माणकारी व्यक्तित्व के पुरुषार्थ ने विशिष्ट समतामय समाज की रचना कर ही दी। एक ऐसे समता समाज की स्थापना जहाँ सभी जीवों के आत्म-धरातल पर समता का भाव हो। व्यक्तित्व जब कृतित्व की ओर अग्रसर होता है तब ऐसा कोई ठोस सुफल प्राप्त होता है। महापुरुषों का असाधारण व्यक्तित्व कुछ असाधारण कृतित्व निर्माण की मात्र कल्पना या संकल्प ही नहीं करता, बल्कि रचनात्मक, निर्माणकारी कार्य संपन्न कर उस संकल्प को साकार रूप में बदल देता है।

:::::::::: क्रांतिकारी व्यक्तित्व :::::::

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का मंगलमय सान्निध्य हमें निरंतर प्राप्त हो रहा है। अपार करुणा जिनके हृदय में भरी रहती है, जो स्व-कल्याण के साथ

पर-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं, तीर्थकर भगवंतों के जिनशासन को दीपाने वाले हैं, जिन नहीं पर जिन सरीखे, केवली नहीं पर केवली सरीखे, अहो ऐसे आचार्य भगवन्! प्राणीमात्र के दुःख को देखकर ही द्रवित हो जाते हैं ऐसे संवेदनशील महापुरुष!

आपश्री ने समाज में व्याप्त आडंबरों को देखा तो उन्हें समूल नष्ट करने के लिए सामाजिक उत्क्रांति के रूप में सार्थक उपाय दिया। दिखावे की अंधी, अंतहीन दौड़ में फँसा हुआ व्यक्ति क्षमता से अधिक व्यय करके तनाव में जीता है। तनावयुक्त मन से धर्म आराधना कैसे संभव होगी? धर्म आराधना के लिए स्वस्थ तन, मन की आवश्यकता रहती है। अस्थिर मन धर्म आराधना कैसे कर पाएगा?

आचार्य भगवन् के क्रांतिकारी व्यक्तित्व ने समाज से ऐसे दिखावे को दूर करने के लिए सामाजिक उत्क्रांति की जो सार्थक पहल की है वह निश्चित ही समाज को आडंबर और प्रदर्शन से मुक्त बना सकती है। आज कई परिवार, गाँव, संघ और पूरे जिले तक उत्क्रांति का संकल्प ग्रहण कर आडंबरमुक्त बन चुके हैं।

हमारे सभ्य समाज में विभिन्न आयोजनों पर होने वाले धन के दुरुपयोग से तन-मन भी विकृत होते जा रहे हैं। फैशन के नाम पर हमारा सभ्य समाज किस तरफ जा रहा है? ज्यादा अतीत में न जाकर कुछ वर्षों पहले की बात करें तो उस समय महिलाएँ घर के बाहर खुले मुँह नहीं जाती थीं और घर में भी बड़ों के सामने घूँघट रखती थीं। माना कि घूँघट प्रथा को अनुचित एवं अनावश्यक समझकर हमने बंद कर दिया, लेकिन इसके बाद फैशन के नाम पर पहनावे में जो स्वच्छंदता आई है, वह चिंताजनक व शर्मनाक है। आधुनिक युवतियों का पहनावा इस स्तर तक गिर चुका है कि अमर्यादित वेशभूषा के कारण उनको मंदिर जैसे पवित्र स्थलों पर प्रवेश से भी रोका जाने लगा है। कई बार तो धर्मस्थानकों में ऐसे पहनावों पर संत-सतियाँ जी द्वारा भी सावधान करते देखा गया है।

यह भी एक तरह का दिखावा ही है। ऐसी दौड़ में हम अपनी संस्कृति, संस्कारों को खोते जा रहे हैं। उन्हें

सुरक्षित रखने के लिए सामाजिक उत्क्रांति रूपी संजीवनी हमारे सामने खड़ी है। सामाजिक उत्क्रांति हमारे संस्कारों व संस्कृति को बचाए रखने के लिए पर्याप्त है। चिंतनीय विषय है कि अभी तक समाज का हर परिवार, हर व्यक्ति ऐसी संजीवनी को स्वीकार नहीं कर पाया है। क्यों हम उत्क्रांति को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं? आचार्य भगवन् इसके लिए जो प्रेरणा प्रदान करते हैं, वह सिर्फ और सिर्फ हमारे एवं समाज के लिए है। हम गुरुभक्त अभी तक गुरुदेव के नारों में ही लगे हुए हैं, इशारों में नहीं।

हनुमान जी ने भी जय श्री राम के नारे बहुत लगाए, लेकिन उसके साथ वे पुरुषार्थ में भी संलग्न रहे। जय श्री राम के नारे लगाए और साथ ही छलांग भी लगाई तो समुद्र पार लंका पहुँच गए। छलांग नहीं लगाते तो सिर्फ नारों से लंका पहुँच पाना असंभव था।

हम भी नारे लगा रहे हैं - ‘होगा गुरु का जिधर इशारा, उधर बढ़ेगा कदम हमारा’। यह नारा अभी तक अधूरा ही है। यदि इसे पूर्ण आत्मसात् कर लेते तो अब तक कोई भी परिवार उत्क्रांति से अद्भूता नहीं रहता। क्या हमारी समर्पणा में कमी है? निश्चित तौर पर कमी है। वरना भगवन् का एक इशारा, संकेत कम नहीं होता हमारे जीवन परिवर्तन के लिए।

समर्पणा कैसी होनी चाहिए इसे एक प्रसंग से समझ सकते हैं। धौम्य ऋषि के आश्रम में कई शिष्य अध्ययनरत थे। उनमें से एक शिष्य था आरुणि। एक बार भारी बरसात से आश्रम की चार दीवारी क्षतिग्रस्त हो गई। धौम्य ऋषि ने आरुणि से क्षतिग्रस्त दीवार से आते पानी को रोकने के लिए कहा। आरुणि गया तो देखा कि पानी पूरी रफ्तार से आश्रम के अंदर आ रहा था। आरुणि मिट्टी डालकर उस पानी को रोकने का प्रयास करने लगा, लेकिन पानी का बहाव मिट्टी को बहा ले जाता। आरुणि बार-बार प्रयास करता, लेकिन सफलता नहीं मिल रही थी। बहुत प्रयास के बाद वह पानी के बहाव वाले स्थान पर लेट गया। अब पानी का रास्ता बंद हो जाने से बाहर का पानी आश्रम में आने से रुक गया।

कुछ समय बाद बारिश रुक गई। धौम्य ऋषि ने सभी शिष्यों को आश्रम में देखा, लेकिन आरुणि दिखाई नहीं दिया। ऋषि ने आवाज दी तो आरुणि दूर से बोला- “गुरुदेव! मैं यहाँ हूँ” गुरुदेव ने आवाज की दिशा में जाकर देखा तो आरुणि क्षतिग्रस्त दीवार से आने वाले पानी के बीच दीवार बनकर लेटा हुआ था। गुरुदेव के पूछने पर आरुणि ने कहा- “गुरुदेव! आपने पानी रोकने का आदेश दिया था सो मैंने आपके आदेश का पालन किया।”

गुरुदेव ने कहा- “मैंने तुम्हें इस तरह पानी के बीच लेट जाने का आदेश तो नहीं दिया था, केवल पानी रोकने का दिया था।”

आरुणि- ‘गुरुदेव! आपने पानी रोकने का ही आदेश दिया था, लेकिन उसे किस तरह रोकना था यह मुझे ही सोचना था। आपके आदेश की पालना करना मेरा कर्तव्य था। मैं आपके आदेश का पालन किसी भी तरह करूँ, लेकिन आपका आदेश सर्वोपरि था।’ गुरुदेव ने आरुणि को उठाकर गले से लगा लिया। यह थी आरुणि की गुरुदेव के प्रति समर्पणा कि गुरुदेव के आदेश की पालना में कीचड़युक्त पानी में लेट गया और पानी का बहाव रोक दिया।

आचार्य भगवन् के प्रति हमारी समर्पणा कितनी है? आचार्य भगवन् कितने वर्षों से उत्क्रांति के लिए फरमा रहे हैं, लेकिन हमारी आरुणि जैसी समर्पणा बनी गुरु आज्ञा के प्रति? नहीं। अगर हर गुरुभक्त ऐसी समर्पणा से गुरु आज्ञा के प्रति समर्पित हो गया होता तो अब तक उत्क्रांति का प्रचार-प्रसार करने की जरूरत शेष नहीं रहती।

आवश्यकता है गुरु आज्ञा के प्रति अहोभाव से समर्पण की। महत्तम महोत्सव का हिस्सा बनने का सौभाग्य हमने पाया है। महत्तम शिखर जैसा शुभ मंगल पर्व भी अग्रसर है। हम आचार्य भगवन् के इशारों, आज्ञाओं के प्रति समर्पित होकर फिर ये नारा लगाएँ - ‘होगा गुरु का जिधर इशारा, उधर बढ़ेगा कदम हमारा’ तो हमारा नारा लगाना सार्थक होगा।





‘राम’ ‘गुण’ ‘गुण्ठा’

-नरेश मेहता, जावरा

राम साधक भी हैं, राम ही साध्य भी।
राम आदाना, राम आशय भी॥1॥
राम ‘नाना’ भी हैं और ‘जवाहर’ भी।
राम नायक भी हैं, राम पृथंदर भी॥2॥
राम ही धीर भी, राम गंभीर भी।
राम करुणा भी हैं, राम ही वीर भी॥3॥
राम शक्ति भी हैं, राम भक्ति भी।
राम युक्ति भी हैं, राम मुक्ति भी॥4॥
राम आश्रय भी हैं, राम ही हैं शरण।
राम जाग्रत भी हैं, राम ही जागरण॥5॥
राम यशस्वी भी हैं, राम मनस्वी भी।
राम तेजस्वी हैं, और तपस्वी भी॥6॥
राम भाषा में हैं, राम वचनों में भी।
राम गीतों में हैं, राम भजनों में भी॥7॥
राम मानव में हैं, राम देवों में भी।
राम प्राणों में हैं, राम ही रोम में भी॥8॥
राम जिन तो नहीं, जिन से कम भी नहीं।
राम हृदय में बरे, कोई गम फिर नहीं॥9॥
राम आगम भी हैं, राम ही शास्त्र भी।
राम सिद्धत्व पाने का, हैं शस्त्र भी॥10॥
राम युग-युग में हैं, राम क्षण-क्षण में भी।
राम जन-जन में हैं, राम कण-कण में भी॥11॥
राम धर्म भी हैं, राम यतना भी।
राम का अर्थ है, पार्ण से बचना भी॥12॥
राम में भव्यता, राम में दिव्यता।
राम अणगारता, राम वैराग्यता॥13॥
राम शासन भी हैं, राम ही संघ भी।
राम जीवन को जीने का, हैं ढंग भी॥14॥
राम ही आस हैं, राम विश्वास भी।
राम तृप्ति भी हैं, राम ही प्यास भी॥15॥
राम ध्यानी भी हैं, राम ही ध्येय भी।
राम श्रद्धा भी हैं, राम श्रद्धेय भी॥16॥
राम बाहर भी हैं, राम भीतर भी।
राम किनारा भी हैं, और समंदर भी॥17॥
राम शीतल भी हैं, राम में उष्णता भी।
राम में सादगी भी हैं, राम में सौम्यता भी॥18॥

राम ज्ञानी भी हैं, राम में विद्वता भी।
राम चेतन भी हैं, राम चैतन्यता भी॥19॥
राम प्रेरित भी हैं, राम ही प्रेरणा भी।
राम धारक भी हैं, राम ही धारणा भी॥20॥
राम ज्योति भी हैं, राम ही दीप भी।
राम ही प्रीत हैं, राम ही मीत भी॥21॥
राम एकांत हैं, राम अनेकांत भी।
राम का शोर है, राम ही शांति भी॥22॥
राम गुण हैं और गुणियों का संगम भी।
राम ही साज हैं, राम सरगम भी॥23॥
राम समता का पावन सरोवर हैं।
राम ही संघ की एक धरोहर भी॥24॥
राम तिरते भी हैं, और तिराते भी हैं।
राम गिरते हुओं को, उठाते भी हैं॥25॥
राम आचार्य भी हैं, राम ही संत भी।
राम सीमा भी हैं, राम अनंत भी॥26॥
राम जीवन को बदले, वो क्रांति भी है।
राम ही से मिटे, हर श्रांति भी है॥27॥
राम निर्माण हैं, राम निर्वाण भी।
सारे संकटों का, राम हैं समाधान भी॥28॥
राम निरपृह भी हैं, राम निर्घण्य भी।
राम ही में मिले, सारे ही ग्रंथ भी॥29॥
राम कर्ता भी हैं, राम कारण भी।
राम कथनी भी हैं, राम आचरण भी॥30॥
राम बरखा भी हैं, राम बादल भी।
राम ममता भी हैं, माँ का आँचल भी॥31॥
राम धड़कन भी हैं, राम ही दिल भी।
राम रक्षता भी हैं, राम मंजिल भी॥32॥
राम आनंद भी हैं, राम उमंग भी।
समझो सब कुछ मिला, जब राम हैं संग भी॥33॥
राम गुल भी हैं, राम गुलशन भी।
राम निर्मल भी हैं, राम पावन भी॥34॥
राम कीर्तन में हैं, राम ही प्रार्थना भी।
राम स्वरथ रहें, हैं यही याचना भी॥35॥
ओर हो राम से, साँझ भी राम से।
'नरेश' श्वासों का विश्राम भी राम से॥36॥





गुरु राम महत्तम गुणमाला

तर्ज : भक्तामर स्तोत्र

संकलन- गणेश द्वूगरवाल, चित्तौड़गढ़

राम चरण सूँ साधुमार्ग दी, थाती अर महिमा परकासे।
 'परम-पुरुष' का उण चरणाँ ने, सम्यक् वंदन पाप विनासे॥1॥

बहुशुत ज्ञानी ध्यानी मुनिवर, करे इस्तुति, भगति थांकी।
 वणी नानेश पट्टधर दी हूँ भी, कर्क इस्तुति, अपलक थांकी॥2॥

सकल संघ भी गणीं सके नी, थारां उजला गुण ने गुरुवर।
 कूण भुजाँ सूँ तरी सके है, प्रलैकाल रो उपड़यो सागर॥3॥

कारी रात रा अंधियाराँ ने, ज्यूँ मेटे किरणाँ सूरज दी।
 त्यूँ जनमाँ रा पाप ने गुरुवर, पल में मेटे इस्तुति थाकी॥4॥

ज्यूँ सूरज नी, पण उणकी आभा, दूराँ सूँ ही कमल खिलावेँ।
 वणी तराँ ही इस्तुति नी, पण राम-नाम ही पाप मिटावेँ॥5॥

राम थारा जिण कीधा दरक्षण, भावे न दरक्षण दूजाँ रा।
 खीर-नीर रा पीवणियाँ ज्यूँ पीवे पाणी खारा॥6॥

वी प्रशांत परमाणु वतरा ही हा, जिण सूँ धारी रचना वी है।
 इण खातर इण धरती माथे, राम जर्याँ नहीं कोई है॥7॥

डिगा सके नी महाब्रता सूँ, आ दुनियाँ शिथिलाचारी।
 हिला सके कद मेंक शिखर ने, पवन वेग प्रलयकारी॥8॥

जो आगम-रहस्य है थारा में, वो ज्ञान गेरों नी दूजाँ में।
 जा तेज किरण मणियाँ में, वा किरण कठे है कांचाँ में॥9॥

चलता प्रवचन दीक्षा धारे, अतिशयकारी या गुरुवाणी।
 जब-जब मन यो शंका धारे, सरल निवारण पावे प्राणी॥10॥

संयम रा इण श्वर्णकाल में, अद्भुत संयम-शतक बणे है।
 'सिद्धिम ग्लोबल' पाँव धरे है, उत्कांति भी चरम चढ़े है॥11॥

जिण रे नी जीवा दी आशा, हो गयो उण रे रोग भयंकर।
 थारे चरणाँ दी रज लेकर, कामदेव झो बणे वो सुंदर॥12॥

दुःख मेटे सगलाँ जीवाँ रो, नायक है थूँ तीरथ रो।
 जनम-मरण रो चक्कर मेटे, वंदू 'महत्तम-गुरुवर' को॥13॥

माँएं जणति पुतर घणा, पण राम जर्याँ गवराँ ही जायो।
 आठों ही दिशा उगावै तारा, पण सूरज पूरब दरक्षायो॥14॥

भगतिवश जो करे पाठ नित, इण 'महत्तम गुणमाला' रो।
 पावे आतम-सुख अणंत, अर बणे देवासी सिद्ध क्षेत्र रो॥15॥

आत्मा से महात्मा,
महात्मा से परमात्मा बनने
का लक्ष्य रखें
- आचार्य भगवन्
पैर गरम, पेट नरम एवं
सिर ठंडा होना चाहिए
- उपाध्याय प्रवर



भद्रेसर में मुमुक्षु
साचली जी बापाना व
मुमुक्षु दर्शना जी
कोटड़िया वीतराग
सर, आदर्श दीक्षा की
चर्चा, संथारा साधिका
कस्तूर श्री जी म.सा.
जगतापूर्वक गतिमान

आवरी माता, भद्रेसर, अचलपूरा, नाहरगढ़, कन्नौज, सावा।

धन्य हो रही मेवाड़ धरा, गुरु के पावन विचरण से।
श्रद्धा-भक्ति उमड़ रही, पूलकन छाई कण-कण में।

जिनकी उत्कृष्ट संयम साधना के अपूर्व तेज से अनेक भव्यात्माएँ स्व-पर कल्याण की साधना में समर्पित हो रही हैं, ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मर्सीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रान्ति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पद्मधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रब्द्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के विहार का क्रम अनवरत जारी है। वीर भूमि मेवाड़ क्षेत्र महापुरुषों की चरणरज से निरंतर पावन हो रही है। आपश्री जी मार्गवर्ती अनेक क्षेत्रों में धर्म की अलख जगा रहे हैं। चिलचिलाती धूप से तपती भूमि पर जब चारित्रात्माओं के पाँव पड़ते हैं तो ऐसा लगता है जैसे उस स्थान की भूमि एकदम शीतल हो गई हो।

आचार्य प्रवर की निर्मल संयम साधना से प्रभावित होकर **मुमुक्षु सायली जी बाफना** एवं **मुमुक्षु दर्शना जी कोटड़िया** ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। मुमुक्षु बहन दर्शना जी कोटड़िया, नंदुरबार की आडंबर रहित सादगीपूर्ण दीक्षा हर कहीं सुखद चर्चा का विषय बनी हुई है। न वरघोड़ा, न अभिनंदन, न चौबीसी और न किसी प्रकार का दिखावा। बस संयम लेने की एकमात्र धुन। भदेसर में संथारा साधिका **साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा.** का संथारा **53वें दिन** भी समभावों के साथ सजगता और समाधिपूर्वक अनवरत गतिमान रहा।

आचार्य भगवन् सहित कई चारित्रात्माओं ने संथारा साधिका साध्वीश्री जी को दर्शन एवं स्वाध्याय का लाभ प्रदान किया। गाँव-गाँव में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम निरंतर हो रहे हैं। 10 से 26 मई तक चित्तौड़गढ़ में अभिमोक्षम शिविर, अक्षय तृतीया का प्रसंग एवं 09 जून को बेंगु में पाँच दीक्षाएँ संभावित हैं।

16 अप्रैल
2024

धैर्य रखता है व्यक्ति को शांत

समता भवन, आवरी माता। प्रातः मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “गुरु धैर्य सिखाते हैं। धैर्य अर्थात् कष्टों के आने पर अडिग रहना और किसी भी समस्या में आकुल-व्याकुल नहीं होना। धैर्य यानी प्रतिज्ञा करना कि जैसा आज हूँ वैसा हमेशा रहूँगा। दशवैकालिक सूत्र में कथन है- एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि हम वर्तमान के आधार पर भविष्य की परिकल्पना करते हैं। कभी अच्छा हो जाए, बड़ी सफलता मिल जाए तो लगता है मैं सफल बना रहूँगा। धैर्य ऐसा गुण है जो व्यक्ति को शांत रखता है। कठिन से कठिन मोड़ पर पहुँचने के बाद भी उसके अंदर उत्साह, उमंग बना रहता है। आजकल की दुनिया में आत्महत्या साधारण बात हो गई है। बचाव का कोई रास्ता नहीं मिलता। यदि धैर्य हो तो आत्महत्या का विचार आएगा ही नहीं। जिसमें धैर्य है उसका दिमाग ठंडा रहता है। पैर गर्म, सिर ठंडा और पेट नरम होना चाहिए।”

श्री यन्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में हमेशा त्याग होना चाहिए। अपने भीतर में यदि सुधार चाहते हो तो मनुष्य जीवन में त्याग जरूरी है। साधना के लिए त्याग महत्वपूर्ण है। अपने भीतर के आत्मबल को मजबूत बनाओ।

17 अप्रैल
2024

हम अच्छे हैं तो सब अच्छा है

समता भवन, आसावरा। प्रातः कालीन मंगलमय प्रार्थना में गुरु एवं प्रभु गुणगान किया गया। प्रवचन सभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति हर्षित करने वाली थी। इसे संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “गुरु विचार का दर्शन सिखाते हैं। जीवन में जितनी अशांति है, दुःख है उसका कारण क्या है? शरीर की पीड़ा, परिवार में लड़ाई-झगड़ा होना, संतान आज्ञाकारी न होना, रहने का स्थान अच्छा न होना आदि अनेक कारण हैं। जो लोग बाहर की चीजों जैसे- तंत्र-मंत्र में विश्वास करना, बिल्ली द्वारा रास्ता काटने पर बुरे विचार लाना आदि पर विश्वास करते हैं, उनके मन पर चोट पड़ती है। अच्छा सपना देख लिया तो लगता है अच्छा होने वाला है और बुरा सपना देखते हैं तो लगता है बुरा होने वाला है। इसका कारण मन की प्रक्रिया पर नियंत्रण न होना है। यदि हमारा अंतःकरण सशक्त है तो वह हमें किसी भी तरह की घटना से बचा सकता है। भगवान महावीर परीष्ठहों में भी शांत रहते थे। मन की गणित में नुकसान है तो दुःखी हो जाते हैं और फायदा है तो खुश हो जाते हैं। मन कभी अशांत नहीं होना चाहिए। कल्पना करें कि जो कुछ होने वाला है वह अच्छा होने वाला है। दृष्टि का विकास हमारे मन की चंचलताओं पर प्रकाश डालता है। अगर हम अच्छे हैं तो सब अच्छा है। प्रभु का उपदेश अमूल्य उपदेश है। हम जितने वर्तमान से परेशान नहीं हैं उतने भविष्य भय से परेशान हैं। जिसका आत्मबल मजबूत है, उसका मन मजबूत है। तीर्थकर देवों ने अपनी आत्मा के बल को बहुत ही मजबूत बनाया है।”

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म मिला, उत्तम कुल मिला, पाँचों इंद्रियों मिलीं, लेकिन सम्यकत्व के बोध के बिना ये सब अधूरा है।

18 अप्रैल
2024

इच्छाओं पर करो विजय प्राप्त

समता भवन, आवरी माता। सूर्योदय पश्चात् भोर की पावन बेला में मंगलमय प्रार्थना द्वारा पंच परमेष्ठी का गुणानुवाद किया गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने

अपनी मधुर वाणी में फरमाया कि “गुरु के संबंध में शास्त्रकारों ने फरमाया है कि जिसके भीतर आकांक्षा है उसका भेदन आचार्य करते हैं। गुरु का कार्य इच्छाओं को दूर करना है। इच्छा पूर्ति करना सरल है, परंतु इच्छाओं को दूर करना बहुत ही कठिन है। जिसका विजन (नजरिया) विस्तृत होगा वह दुःख के बाद सुख की सोचेगा। इच्छाएँ अशांति की जड़ हैं। जीवन में जो दुःख हैं उनका मुख्य कारण इच्छाएँ हैं। इच्छाएँ असीमित हैं, जिनको पूरा करना कठिन है। पति-पत्नी के जीवन में भी शांति नहीं है। मूल में एक ही बात है कि अगर मेरी इच्छाएँ पूरी होती हैं तो मैं सुखी हूँ। किसी के मन में इच्छाओं को पूरी करने के लिए भावना हो तो अन्यों से सहयोग की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। दुनिया पर भरोसा करना मतलब खुद पर भरोसा नहीं होना। इच्छाओं को खत्म करने की विचारधारा दुःख को खत्म करने की विचारधारा है।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज हमारे भाव शुद्ध नहीं हैं तभी हमें सबका कहा सुनना पड़ता है। आचार्य भगवन् आपके नगर पथारे हैं, वैराग्य की भावना को जगाएँ। शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने भक्ति गीत के माध्यम से गुरु गुणगान किए। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

तीन दिवसीय शिविर का आगाज करते हुए श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने दस प्रत्याख्यान एवं उनके आगारों की विस्तृत व्याख्या फरमाई। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। सामूहिक एकासना कार्यक्रम में 60 एकासन हुए। अनेक स्थानों से आगत श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

19 अप्रैल
2024

गुरुवंदन से होता है हृदय पवित्र

आवरी माता। प्रातः मंगलमय प्रार्थना में ‘**मेरे व्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान्**’ की स्वर लहरियों से संपूर्ण माहौल धर्मभावना से ओत-प्रोत हो गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि “गुरु को वंदन हमारे हृदय को पवित्र और ऊर्जावान बनाता है। तीर्थकर देवों का दर्शन हम मन की कल्पनाओं में कर सकते हैं। धर्म का दर्शन भी अपने विचारों में कर सकते हैं और धर्म-जीवन का दर्शन हमारे गुरु के रूप में होता है। गुरु को की गई वंदना हमारे जीवन को उच्च बनाती है। किसी भी व्यक्ति के साथ हमारे संबंध सामान्य हैं, मधुर हैं या कढ़वे हैं, इस बात पर बहुत कुछ निर्भर करता है। किसी भी व्यक्ति ने कोई गलती की है तो उस पर क्या प्रतिक्रिया होगी यह पारस्परिक संबंध पर आधारित होता है। अगर गलती हमने की है तो हमको सुधारनी है और आगे भी हमें ही ध्यान रखना है। अच्छा जो भी करना है वह हमको करना है।”

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम किसी को शारीरिक तौर पर नहीं चिढ़ाएँ। ऐसा व्यक्ति मूर्ख होता है, जो जहर तो खुद पीता है, पर सोचता है कि सामने वाला मरेगा। जलेगा तो खुद ही, पर सोचता है कि सामने वाला जलेगा। छोटी-मोटी बातें जीवन में आए दिन घटित होती रहती हैं। बेकार बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देनी चाहिए।

20 अप्रैल
2024

मैं सब कुछ कर सकता हूँ

समता भवन, आवरी माता। पंच परमेष्ठी एवं गुरुभक्ति प्रार्थना के साथ भोर का मंगलमय आगाज हुआ। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान करते हुए उपस्थित थीं। धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने

अपनी दिव्यदेशना में जन-जन का मन पावन करते हुए फरमाया कि ‘‘एक प्रश्न है कि मैं क्या नहीं कर सकता? उत्तर है कि मैं सब कुछ कर सकता हूँ।’’

जिसके मन मे घबराहट होगी वो कुछ नहीं कर पाएगा। जिसको छलांग लगानी होगी वो छलांग लगा लेगा। मौत कभी भी आ सकती है। इसलिए जो मौका मिला है उसका लाभ उठाना है। मौका हर यल हर क्षण मिलता है। हम क्षण चूक जाते हैं, फिर रोते हैं। भगवान महावीर अगर सोचते कि मैं कुछ नहीं कर सकता तो क्या तीर्थकर बन पाते? मोक्ष जा पाते? जिसको धर्म के नाम से डर लग रहा हो उसको सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है? भगवान महावीर की तरह वीरता रखनी पड़ेगी। मोह की बेड़ियों से मुक्त होना है। वीरता हमारे भीतर रही हुई है। वीरता को जाग्रत करने की आवश्यकता है। इससे सफलता तुरंत मिलेगी। सफलता कायरों को नहीं, वीरों को मिलती है। जब तक आत्मा के हित को नहीं जाना तब तक सब व्यर्थ है।’’

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान् बनता है। भगवान महावीर के सिद्धांतों को आत्मसात् करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि ठाणा बैंगलुरु से 1700 किमी. का विहार कर गुरुचरणों में पधारे। दोपहर में आगम वाचनी आदि विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम महापुरुषों के सान्निध्य में हुए।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने त्रिदिवसीय शिविर में स्वाध्याय कब-कब नहीं करना विषय पर विस्तार से मार्गदर्शन प्रदान किया। पूर्व न्यायाधीश जैनेंद्र जी रांका, जयपुर ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए अहोभाव व्यक्त किए।

त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की

21 अप्रैल
2024

भगवान महावीर के सिद्धांत जीवन में उतारें

समता भवन, आवरी माता। आज का दिन अपने साथ दो विशेष प्रसंग लेकर उपस्थित हुआ। प्रातःकाल से ही स्थानक की ओर जैन-जैनेतर जनों के पाँव गतिमान होने लगे, क्योंकि आज भगवान महावीर का जन्मकल्याणक दिवस एवं आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त विशिष्ट आयाम रविवारीय समता शाखा का आयोजन भव्य रूप से होने जा रहा था। प्रातःकाल प्रार्थना में श्रावक-श्राविकाओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति में हर किसी ने अपना जीवन समता शाखा की आराधना से धन्य बनाया। तत्पश्चात् सत्य एवं अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर विशाल धर्मसभा में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ नश्वरता को दरकिनार कर मोक्ष की आराधना में संलग्न होने लगा। आज के विशिष्ट प्रसंग पर भगवान महावीर के 82वें पट्टूधर शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतमय वाणी में भगवान महावीर के संदेश को जन-जन तक पहुँचाते हुए धर्मसभा में फरमाया कि ‘‘भगवान महावीर इस अवसरिणी काल में अंतिम तीर्थकर नहीं, अपितु अपरिच्यम तीर्थकर हुए। भगवान महावीर को हम मानते हैं, उनकी आराधना करते हैं, भक्षित करते हैं। कब तक हमारे मन के अनुकूल सारी अवस्थाएँ मिलती रहेगी? मन के अनुकूल काम होते रहें तो हम खुश रहते हैं, परंतु विपरीत हो जाएँ तो नाखुश हो जाते हैं। यह बात भक्षित से मेल नहीं खाती है। भगवान महावीर ने अनुकूलता-प्रतिकूलता को नहीं देखा, फलस्वरूप वे अपनी मंजिल यर यहुँच गए। भगवान महावीर को मानते हैं, उनकी प्रवचन वाणी को मानते हैं, यह तो आसान है, परंतु हमें अहंकार का त्याग करना चाहिए। गौतम झुक गए, भगवान में लीन हो गए तो वे भगवान बन गए और गौशालक प्रतिकूल चलते गए तो वे भगवान में साथ

लीन नहीं हो पाए। गुरु का मौन संशयों को छिन्न करने वाला होता है। उनकी हर क्रिया उपदेश देने वाली होती है और वह उपदेश शिष्यों के संशय को छिन्न करने वाला होता है। राग-द्वेष के कारण शांति नहीं मिल पा रही है। गुरु ने कहा कि तुम्हारी नजर एक होनी चाहिए। जिस तरह से मित्र को देखते हैं, उसी तरह से शत्रु को देखें। दोनों में भिन्नता नहीं रखें। पराएथन की भावना नहीं रहनी चाहिए। स्वार्थ सही राह नहीं दिखाता है। भगवान् महावीर के सिद्धांत जीवन में उतारें।”

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “आज के दिन हम प्रभु को अपने भीतर, अपने हृदय, अपनी चेतना में महसूस करें कि प्रभु और कोई नहीं हैं, हम स्वयं हैं। हम स्वयं आश्रयदाता हैं, स्वयं ग्रहणदाता हैं। आत्मा ही परमात्मा है। प्रभु ने अपनी साधना की यात्रा प्रारंभ की। आज के दिन अनेक प्राणियों का जन्म हुआ है, परंतु जिन्होंने साधना की उन्होंने अपने जीवन को मूल्यवान बना लिया। प्रभु साधना के पथ पर बढ़े, स्वयं चले, अकेले चले, दिशा देने वाला कोई नहीं था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और न ही पीछे हटे। अपने भीतर में घबराहट पैदा नहीं की। कौन संभालेगा, कौन आश्रय देगा, ये सब विचार नहीं किया। जितने कष्ट, संकट, समस्याएँ आईं, सबने साधक जीवन के विकास में कुछ न कुछ विघ्न डाला, लेकिन प्रभु विघ्नों से घबराए नहीं और अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लिया।”

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सच्चे देव, गुरु, धर्म के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा व आस्था नहीं है तो भगवान् महावीर का जन्मकल्याणक मनाने की जरूरत नहीं है। लौकिक देवों को हम नहीं पूजें। निर्ग्रथ प्रवचन ही अर्थ है, बाकी अनर्थ हैं।

साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संयम जीवन उत्तम जीवन है। इससे हम सर्व दुःखों को नष्ट कर सकते हैं।

18 वर्षीय **मुमुक्षु बहन त्रिशला जी धम्माणी** सुपुत्री अनूप जी-डिंपल जी धम्माणी सुपौत्री सुभाष जी-अनिता जी धम्माणी, रत्नाम की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिजनों द्वारा अनुज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया गया। मुमुक्षु बहन ने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन करते हुए शीघ्र दीक्षा प्रदान करने की विनती गुरुवर से की। अनुज्ञा-पत्र का पठन वीर पिता अनूप जी धम्माणी ने किया। संपूर्ण पांडाल ‘राम गुरु विराट हैं दीक्षाओं का ठाठ है’ एवं जयवंता-जयवंता की स्वर लहरियों से गूँज उठा। महावीर जयंती के प्रसंग पर महावीर प्रश्नमंच का आयोजन किया गया।

भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का संथारा 44वें दिवस भी पूर्ण सजगता के साथ गतिमान रहा। शासन दीपक श्री गगन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में भगवान् महावीर जन्मकल्याणक दिवस धर्माराधना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 83 एकासना, 51 संवर, 1 सामायिक की पचरंगी, 101 सामायिक का तेला के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति व वीर गुणगान किया गया। धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने अपूर्व उत्साह से भाग लेकर धर्म लाभ लिया। श्री गगन मुनि जी म.सा. ने भगवान् महावीर की सहनशीलता पर प्रकाश डाला।

22 अप्रैल
2024

दुनिया को नहीं, अपने मन को करें नियंत्रित

समता भवन, भदेसर। प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का धर्मनगरी भदेसर में गगनभेदी जयनादों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। संपूर्ण मार्ग ‘संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं’, ‘शासन नायक वीर की, जय बोलो महावीर की’, ‘नाना गुरु ने क्या दिया, राम दिया भई राम दिया’ सहित अनेकानेक जयघोषों से गूँज रहा था।

संथारा साधिका साध्वी श्री रामकर्स्टूर श्री जी म.सा. ने गुरुवर के दर्शनों का लाभ लिया, जिससे उनका रोम-रोम पुलकित हो गया। दीक्षा के पावन प्रसंग हेतु स्थानीय गुरुभक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए अपनी मधुरवाणी में फरमाया कि ‘श्री धातु से गुरु शब्द बना है। जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही बताना गुरु का काम है। इससे सत्य का ज्ञान स्वतः ही हो जाता है। सत्य धृथला हो जाता है तो हमारा मन-मस्तिष्क भय के अँधेरे में चला जाता है। भय ज्ञान के अभाव में पैदा होता है। इच्छा किसे कहते हैं? इच्छाएँ दो तरह की होती हैं- 1. मुझे कैसा होना चाहिए, 2. दुनिया को कैसा होना चाहिए? अपने लिए उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए। दुनिया की इच्छा, तृष्णा हमें निरंतर प्रभावित करती हैं। हमारे नियंत्रण में केवल हम हैं। कोई पराई वस्तु हमारे नियंत्रण में नहीं रह सकती है। कब कौनसी वस्तु हमारी पकड़ से छूट जाएगी, हमें मालुम भी नहीं चलेगा। हमारी इच्छाएँ अनिवार्य हैं। जो ज्यादा इच्छा करता है वो ज्यादा दुःखी रहता है। ये दुनिया हमारे अनुसार चलने वाली नहीं हैं। हम इसे अपने अनुसार चलाना चाहते हैं, इसी कारण हम दुःखी होते हैं। हमारे अनुसार हमारे अलावा कोई नहीं चल सकता। गुरु सत्य का ज्ञान करवाते हैं। सत्य यही है कि दुनिया हमारे अनुसार चलने वाली नहीं है। तुम अपने आपको नियंत्रित करोगे तो सुखी रहोगे।’’

शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। प्रतिदिन 1 घंटे मौन रहने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिया। धर्मपरायण बसंती देवी सरूपरिया, चित्तौड़गढ़ के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। एक माह तक भोजन के विषय में कोई प्रतिक्रिया नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

23 अप्रैल
2024

जिम्मेदारी होने पर कार्य हो पाता है संभव

समता भवन, भद्रेसर। प्रातः मंगलमय प्रार्थना में नवकार महामंत्र के पश्चात् ‘हे प्रभु यं यज्ञमेष्ठी दयाला’ एवं ‘मेरे व्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म भठन्’ के सामूहिक गान की स्वर लहरी से कण-कण धर्म के रंग में सराबोर हो गया।

समता भवन में आयोजित प्रवचन सभा में तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में ज्ञानपिपासु श्रोताओं को भगवान महावीर की वीरवाणी का रसपान कराते हुए फरमाया कि ‘‘मुझे शांति/समाधि में जीना है, ऐसा विचार तो कर सकते हैं, किंतु सफल नहीं हो पाते। बहुत बार वियरीत तथ्य सामने आने पर क्रोध, कषाय हो जाता है। इसकी खोज करनी चाहिए। प्रतिक्षा से अच्छा है कार्य प्रारंभ कर देना, किंतु कार्य का बीच में छूट जाना खोज का विषय है। बहुत बार व्यक्ति भय के आवेश में कार्य करता है। मूल कारण जाने बिना समाधान संभव नहीं है। मूल कारण है कि हमने अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझा। जिम्मेदारी होने पर ही कार्य संभव है। जिम्मेदार सामान्यतः धोखा नहीं खाएगा।’’

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भक्ति में नाम की कामना नहीं होनी चाहिए। दिखावे के लिए भक्ति नहीं करनी चाहिए। मान को बढ़ाना नहीं, अपितु कम करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में सरलता को महत्व दें।

शासन दीपक श्री नमन मुनि जी म.सा., श्री रामयश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का चित्तौड़गढ़ से भद्रेसर गुरुचरणों में पधारना हुआ। प्रतिदिन 10 मिनट बच्चों को सुंदर संस्कार देने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

संघ के राष्ट्रीय महामंत्री जी, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री जी, राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान केंद्र, नागपुर के सीनियर प्रिंसिपल हैड साइंटिस्ट डॉ. रितेश विजय जी अपने टीम मैबर्स प्रिंसिपल एंड साइंटिस्ट रीमा जी विश्वास, साइंटिस्ट अभिषेक जी बिसारिया, साइंटिस्ट अमित कुमार जी और सह-प्रमुख जिला उपकर्म

पी.एस. जी एवं विद्या भवन पॉलिटेक्निक कॉलेज, उदयपुर के प्रिंसिपल अनिल जी मेहता ने आचार्य प्रवर से आशीर्वचन रूप विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

24 अप्रैल
2024

कीचड़ में जल कमलवत् रहें

समता भवन, भद्रेसर। मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए फरमाया कि “गुरु जीवन को नई दिशा देते हैं। उनके बताए मार्ग पर चलना कठिन है। व्यापार में भी शुद्ध नीति व ईमानदारी होनी चाहिए। इस सभा में ऐसा कोई व्यक्ति है जिसने व्यापार में कभी कोई झूठ नहीं बोला हो। यह धरा रत्नगर्भा वसुंधरा है। बुरे लोगों से ज्यादा अच्छे लोग हैं। लक्ष्य में जो स्थिर होते हैं, वे चाहे कैसे भी वातावरण में हों, पर मार्ग से भटकते नहीं हैं और कीचड़ में कमलवत् रहते हैं। उनकी साधना कीचड़ में कमलवत् होती है। जो टिका रहता है वह सफल होता है और निंदा, प्रशंसा में वह झूलता नहीं है। वीतरागता की दिशा में उनके कदम निरंतर बढ़ते रहते हैं।”

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने ‘लाखों को पार लगाया है भगवान तुम्हारी वाणी ने’ गीत के साथ फरमाया कि जीवन का एक-एक क्षण अनमोल है। हमें आत्मसमाधि की ओर कदम बढ़ाना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि ठाणा का चित्तौड़गढ़ से 30 किमी. का विहार कर गुरुचरणों में पथारना हुआ। स्थानीय गुरुभक्तों ने महापुरुषों के सान्निध्य का लाभ उठाने की अपील की। एक विग्रह त्याग का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

सरपंच रघुवीर सिंह जी चौहान, एस.डी.एम. विजयेश जी पांडिया, बी.डी.ओ. बालकृष्ण जी शर्मा आदि ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे के 47वें दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए। मुमुक्षु बहन सायली जी बाफना एवं वीर पिता विजय जी बाफना व परिवारजनों का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। मुमुक्षु बहन सायली जी बाफना के आगमन पर श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता युवा संघ, समता बालिका मंडल, भद्रेसर द्वारा चौबीसी का आयोजन किया गया।

25 अप्रैल
2024

धैर्य और सहनशीलता रखें बरकरार

समता भवन, भद्रेसर। प्रातः: मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति का आनंद हिलोरे ले रहा था। धर्मसभा को संबोधित करते हुए जगत् उद्धारक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “तलवार की धार पर चलना सरल है, किंतु तीर्थकर देवों की वाणी पर चलना बहुत कठिन है। हमें दुर्लभ जिनशासन मिला है। अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या करना तीर्थकर देवों की आज्ञा नहीं है। भगवान महावीर के कानों में कीलें ठोकी गईं, फिर भी भगवान ने कोई प्रतिक्रिया न कर क्षमा का आदर्श उपस्थित किया। क्षमा आएगी तो समता आएगी। समता के लिए धैर्य की छाया चाहिए। कठिनाई के समय भी क्षमा, शांति, समाधि बनी रहनी चाहिए। आज सहनशीलता के अभाव में भाइयों में, घर-घर में झगड़े हो रहे हैं। वर्तमान में सजग रहें, क्षमा भाव जग जाएगा। क्षमा, सहनशीलता को सदैव बरकरार रखें। शिकायत के भाव हमारे मन में न आएँ। मेरे लिए कोई कुछ भी कहे, मैं सदैव शांत रहूँगा। आज सायली बाफना घर-बार का त्याग कर संकटों

की परवाह न करते हुए संयम मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए तत्पर हो रही है।”

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “हमारी वर्तमान प्रवृत्ति कैसी है? राग-द्वेष की प्रवृत्ति तो नहीं चल रही है? वर्तमान का उपशम भाव कैसा है? हमारी अशांति का कारण हमारे द्वारा किया गया कर्म है। अभी क्या कर रहे हैं जो अशांति का कारण हो सकता है। स्वयं को वर्तमान में केंद्रित कर सावधान रहना है। अपने आपके प्रति सावधान रहना है। वर्तमान में मेरे मन में क्या चल रहा है, यह चिंतन का विषय है। संयमी जीवन वर्तमान के सुधार की प्रक्रिया है। हमने कोई पाप न किया हो ऐसा हो नहीं सकता। जो वर्तमान का साथ देता है, वह जाग्रत हो जाता है। जो हो गया, सो हो गया। बीते का रोना नहीं रोना है। वर्तमान क्षण में घमंड नहीं आना चाहिए। जड़ पदार्थों पर आकर्षण नहीं होना चाहिए। केवल वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करें। हर कार्य यतना और विवेकपूर्वक करें।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने ‘संयम के भाव हैं आज जगे, मेरे नाम के आगे शम लगे’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि महापुरुषों का सान्निध्य पाकर जीवन में बदलाव लाएँ।

जमीन-जायदाद, संपत्ति के लिए कोर्ट में नहीं जाने का संकल्प कई युवा भाई-बहनों ने लिया। संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे के आज 48वें दिन के उपलक्ष्य पर लोगों ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। देश के अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया।

आज जिनका अभिनंदन है, कल उनको वंदन है

वीर बाला मुमुक्षु सायली जी बाफना के भव्य वरघोड़ा व
शानदार अभिनंदन कार्यक्रम में उमड़ा जनसैलाब

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण।

धन्य धन्य कह रहा है सबका मन॥

भदेसर। भौतिक व आधुनिक साधनों को ठोकर मारकर वीतराग साधना के पथ पर अग्रसर होने वाली वीरबाला, अध्यात्म पथ साधिका 25 वर्षीय मुमुक्षु बहन कुमारी सायली जी बाफना सुपुत्री विजय जी-सुनीता जी बाफना, निफाड़ का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, भदेसर द्वारा एम.के. रिसोर्ट में शानदार स्वागत व अभिनंदन किया गया।

इससे पूर्व मुमुक्षु बहन का भव्य वरघोड़ा समता भवन से रवाना होकर प्रमुख मार्गों से होते हुए एम.के. रिसोर्ट पहुँचा। मुमुक्षु बहन व उनके परिजन आकर्षक रथ पर सवार हो सभी का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। संपूर्ण मार्ग भक्ति गीतों एवं गगनभेदी जयघोषों से गूँज उठा। मुमुक्षु बहन के आदर्श त्याग को देखकर जनता नतमस्तक हो रही थी।

मुमुक्षु भाई सौरभ जी संचेती, मुमुक्षु भाई सौरभ जी भूरा का भी वरघोड़े में जगह-जगह पर स्वागत हुआ। भव्य अभिनंदन समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी, साहित्य संयोजक जी, आगम एवं तत्त्व प्रकाशन समिति संयोजिका जी सहित अनेक राष्ट्रीय व स्थानीय पदाधिकारियों व सदस्यों सहित गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति गौरवान्वित करने वाली थी। मंच पर मुमुक्षु बहन सायली जी बाफना, वीर माता-पिता विजय सिंह जी-सुनीता जी बाफना, मुमुक्षु भाई सौरभ जी संचेती (दुर्ग), मुमुक्षु भाई सौरभ जी भूरा (देशनोक), मुमुक्षु बहन शैली जी बाफना (दुर्ग), मुमुक्षु बहन त्रिशला जी धम्मानी (रतलाम) व उनके परिजन दिनेश जी-रोमा जी बाफना

(दुर्ग), अनूप जी-डिंपल जी धम्मानी (रतलाम), दीपक जी भूरा (देशनोक), वीर दादी पाना बाई बाफना (निफाड़) सुशोभित थे। अपने कलेजे की कोर को आचार्य भगवन् के पावन श्रीचरणों में समर्पित करने वाले वीर परिवारों का जनता हृषित होकर अभिवादन कर रही थीं।

प्रारंभ में मंगलाचरण समता बालिका मंडल ने तथा स्वागत एवं दीक्षा गीत समता महिला मंडल व बहू मंडल ने सुमधुर स्वरों में प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण में संघ मंत्री ने कहा कि महापुरुषों की कृपा से दीक्षा का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है। मुमुक्षु एवं उनके परिजनों का श्री साधुमार्गी जैन संघ, भदेसर की ओर से विशिष्ट जनों ने तिलक, माला, शॉल से स्वागत व बहुमान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भदेसर संघ बहुत ही सौभाग्यशाली है, जिन्हें आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर, चारित्रात्माओं, दीक्षा का पावन प्रसंग एवं संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे व दीक्षा का पुण्य प्रसंग प्राप्त हुआ। भदेसर संघ की जितनी सराहना की जाए उतनी कम है।

मुमुक्षु बहन सायली जी बाफना ने अपने उद्बोधन में कहा कि संसार दुःखों से भरा है। सच्चा सुख संयम व अध्यात्म में है। आचार्य प्रवर की कृपा, परिवार के संस्कार, चारित्रात्माओं की पावन प्रेरणा से मैं वीतराग साधना हेतु संयम पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। अपने बच्चों को एक बार जरूर आरुग्गबोहिलाभं में भेजने का लक्ष्य रखूँ। निफाड़ एवं भदेसर संघ तथा अन्य प्रत्यक्ष सहयोगियों के लिए अहोभाव व्यक्त करती हूँ।

उपस्थित अन्य मुमुक्षु भाई-बहनों ने संयम को श्रेष्ठ जीवन निरूपित करते हुए महापुरुषों व अपने परिवारों के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त किए। महेश नाहटा ने महापुरुषों के अतिशय को विवेचित करते हुए मुमुक्षु भाई-बहनों का आत्मिक परिचय किया।

इस अवसर पर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ व आरुग्गबोहिलाभं सहित अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा मुमुक्षु भाई-बहनों का स्वागत व अभिनंदन किया गया। आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर द्वारा ‘आगम-पाठर्णिण्य-पद्धति’ साहित्य का विमोचन दीक्षार्थी भाई-बहनों, राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं स्थानीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में नवकार मंत्र जाप व गुरु राम को समर्पित भजनों के साथ संपन्न हुआ। स्थानीय मंत्री ने सभी के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

26 अप्रैल
2024

दो मुमुक्षु बहनों संयम पथ की ओर अग्रसर

अनुपम दीक्षा ग्रदाता आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु सायली जी बाफना व मुमुक्षु दर्शना जी कोटड़िया की जैन भागवती दीक्षा सोल्लास संयन्न

नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री रामशिष्या श्री जी म.सा. व

नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदर्शना श्री जी म.सा. घोषित

दर्शना जी कोटड़िया की सादगीर्यूर्ण दीक्षा की सर्वत्र सराहना

संसार की वासना से मुक्ति है संयम – आचार्य श्री रामेश

संकल्प शक्ति से लक्ष्य आसान – उपाध्याय प्रवर

दीक्षा भोह-माया का त्याग है, दीक्षा सिद्धत्व का अनुराग है।
 सर्वोच्च है जग में दीक्षा की भूमिका, दीक्षा रत्नत्रय का सहभाग है॥
 आत्मा की आवाज है संयम। मानव जीवन का सार है संयम॥

भदेसर। युगनिर्माता, युगपुरुष, महान् अध्यात्म योगी, साधना के शिखर पुरुष आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रब्द्येश्वर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में वीरबाला, अध्यात्म पथ साधिका 26 वर्षीय मुमुक्षु बहन सायली जी बाफना, निफाड़ एवं वीरबाला 24 वर्षीय मुमुक्षु बहन दर्शना जी कोटडिया, नंदुरबार की सांसारिक सुखों व भोगों को छोड़कर संन्यास जीवन धारण करने हेतु जैन भागवती दीक्षा एम.के. रिसोर्ट, भदेसर में हजारों की जनमेदिनी की उपस्थिति में उल्लासमय, उमंगमय, धर्ममय वातावरण में संपन्न हुई। पूर्व में आज के दिवस हेतु केवल मुमुक्षु बहन सायली जी बाफना की ही दीक्षा घोषित थी, अचानक ही मुमुक्षु बहन दर्शना जी कोटडिया भी जैन साध्वी जी की वेशभूषा सफेद वस्त्र पहनकर सभा में उपस्थित हो गई। यह दृश्य देखकर पांडाल में उपस्थित सभी जन आश्चर्य से विभोर हो आचार्यदेव के अतिशय को नमन करने लगे। मुमुक्षु बहन की इस आडंबर रहित दीक्षा की यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।

प्रारंभ में नवकार महामंत्र का जाप किया गया। समवसरण-से प्रतीत हो रहे पांडाल में उच्च पाट पर विराजित जन-जन की श्रद्धा के केंद्र, मानवता के मसीहा, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ‘‘मेरा कार्य आज सिद्ध हो गया। अनादिकाल से किस-किस दरवाजे पर ठोकरे नहीं खाई? नरक, तिर्यक, देव योनि में भटके, एक भी जन्म को सार्थक नहीं कर पाए। अब मनुष्य जन्म का यह स्वर्णिम अवसर मिला है, जिसमें नर से नारायण, आत्मा से परमात्मा बना जा सकता है। प्रत्येक आत्मा का यह लक्ष्य बनना चाहिए। मुमुक्षु सायली जी बाफना की आत्मा जाग गई। कब, किसकी आत्मा जग जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। कोई ऐसी घटना नहीं जो वैराग्य उत्पन्न नहीं कर सके। दर्शना जी कोटडिया ने भी अपना पुरुषार्थ जाग्रत किया। हम भी इनसे प्रेरणा लेकर मानव जन्म को सार्थक करें।’’

दीक्षा का यह भेला है, बड़ा अलबेला है।
 आज यह समझना कि जीव तू अकेला है॥

जैसे ही आचार्य भगवन् ने यह गीतिका प्रारंभ की, जन-जन के हृदय में वैराग्य के भाव हिलोरे लेने लगा। आचार्य भगवन् ने आगे फरमाया कि ‘‘इस दुनिया में कोई भी कार्य असंभव नहीं है। हिम्मत हो तो सभी कार्य पूर्ण हो सकते हैं। दोनों बहनों ने गजब की हिम्मत की है। दोनों के अनुज्ञा-पत्र पारिवारिकजनों ने प्रदान कर दिए हैं। अपने कार्य की सिद्धि होती है तो मन ग्रसन्न हो जाता है। आज संसार की वासना से मुक्ति मिलने पर इन दोनों बहनों को अपार खुशी मिली है। इन्हें अंतरिक जाग्रति का लक्ष्य मिला है। आत्मा से परमात्मा बनने की दिशा में गति मिली है। तीर्थकर देवों के मार्ग पर चलना आसान नहीं है। समता से श्रमण बनना है। अहिंसा, संयम और तप में इन्हें श्रम करना है।’’

हे प्रभु मेरी एक युकार, मैं भी बन जाऊँ अणगार।
 छोड़ के जारे पाप अठार, मैं भी बन जाऊँ अणगार॥

भगवन् के श्रीमुख से यह भावगीत के साथ ही पूरा वातावरण संयममय हो गया। दोपहर 12:16 पर बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए मुमुक्षु बहनों से दीक्षा की तैयारी के विषय में पूछा तो दोनों मुमुक्षु बहनों ने शीघ्रातिशीघ्र दीक्षा का स्वर्णिम मार्ग प्रदान कर संसार के प्रपञ्चों से मुक्ति दिलाने का निवेदन किया। इसी क्रम में उपाध्याय प्रवर ने उपस्थित जनसमूह से दीक्षा की आज्ञा हेतु पूछा तो वीर बाफना परिवार-निफाड़,

कोटडिया परिवार-नंदुरबार, भदेसर संघ, श्री अ.भा.सा. जैन संघ व उपस्थित जनता ने अपने दोनों हाथ खड़े कर दोनों बहनों की दीक्षा हेतु सहर्ष अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया।

आचार्य भगवन् ने 12:22 पर तीन बार करेमि भते के पाठ से दोनों मुमुक्षु बहनों को संपूर्ण सावद्य पापों-योगों का त्याग करवाकर नवकार मंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया। मुमुक्षु बहनों ने सभी से जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना की। आचार्य भगवन् के श्रीमुख से नवीन नामकरण क्रमशः **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामशिष्या श्री जी म.सा.** एवं **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदर्शना श्री जी म.सा.** के नाम की जैसे ही घोषणा हुई, संपूर्ण सभा जय-जयकारों ‘राम गुरु विराट है, दीक्षाओं का ठाठ है’, ‘जयवंता-जयवंता’ गीतों से गूँज उठी। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “जब मन में कोई लक्ष्य निर्धारित होता है, संकल्प शक्ति जाग्रत होती है, मन भीतर स्थिर बन जाता है, तब लक्ष्य पूर्ति आसान हो जाती है। दिग्ग्रम की स्थिति परिणाम नहीं देती है। संकल्प भीतर पैदा होता है तो लक्ष्य ओज्जल नहीं होता। सायली जी बाफना ने अपना लक्ष्य निर्धारित कर संकल्प किया। निफाड़ साधुमार्गी के नक्शे में नहीं था। महासती श्री सुयशा श्री जी म.सा. का विचरण होने से सायली जी को राम नाम की धून लगी। इनकी शुभ भावना में वृद्धि हुई। दर्शना जी कोटडिया की भावना में तीक्ष्णता आई। सबके जीवन का लक्ष्य संयम होना चाहिए अर्थात् सबका जीवन संयममय बन जाना चाहिए।”

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने ‘निर्मल जल-सा मन है जिनका, सागर सम गंभीर है’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मोक्ष मंजिल की राह बताने वाले गुरु होते हैं। जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन शुरू नहीं। गुरु के बिना जीवन का विकास मुश्किल है। एक ओर आधुनिक युग है तो दूसरी ओर आध्यात्मिक युग है। एक ओर भोग है तो दूसरी ओर योग है। जीव-अजीव का बोध हुए बिना धर्म की आराधना कैसे होगी ?

साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा. ने ‘सब मार्ग दिखावे मुझे गुरु’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि प्रतिकूल अवस्था में भी गुरु के प्रति समर्पित रहें।

शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंचल कंवर जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा., साध्वी श्री शर्मिला श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने ‘देते हैं बधाइयाँ, गूँजी हैं शहनाइयाँ’ बधाई गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् ने कुछ स्थानों के चातुर्मास की आगारों सहित घोषणा की। दीक्षा से पूर्व आचार्य भगवन् के पावन चरणों में मुमुक्षु बहन दर्शना जी कोटडिया ने प्रतिज्ञा-पत्र अर्पित कर शीघ्र ही दीक्षा प्रदान करने का निवेदन किया। वीर पिता दिनेश जी कोटडिया, नंदुरबार ने अनुज्ञा-पत्र का पठन कर सांसारिक परिजनों सहित



आचार्य भगवन् के श्रीमुख से नवीन नामकरण क्रमशः **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामशिष्या श्री जी म.सा.** एवं **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदर्शना श्री जी म.सा.** के नाम की जैसे ही घोषणा हुई, संपूर्ण सभा जय-जयकारों ‘राम गुरु विराट है, दीक्षाओं का ठाठ है’, ‘जयवंता-जयवंता’ गीतों से सभा गूँज उठी। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ।

गुरुचरणों में समर्पित किया। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने दीक्षा प्रसंग को अलौकिक और अविस्मरणीय बताया।

संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, विधायक चंद्रप्रकाश जी आक्या सहित निफाड़, नासिक, पुणे, थुलिया, शिरपुर, शिरुड़, मालवा, मेवाड़, मारवाड़, छत्तीसगढ़ एवं देश के अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने दीक्षा समारोह में अपनी उपस्थिति दी। यह दीक्षा समारोह भद्रेसर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। एक मुमुक्षु तैयार करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। शाम को 4 बजे बाद आचार्य भगवन् का समता भवन से अचलपुरा की दिशा में विहार हुआ। विहार मार्ग के दोनों ओर 'जाते-जाते भूल न जाना, वापस लौट के जल्दी आना' आदि नारे गूँज रहे थे। उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-4 का मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ में पदार्पण हुआ।

शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. समता भवन भद्रेसर में एवं साध्वीवर्याएँ रामेश समता भवन में विराजकर जिनशासन की प्रभावना करेंगे। 09 जून को बेंगू में पाँच दीक्षाओं की घोषणा हो चुकी है।

27 अप्रैल
2024

व्यसन से जीवन बर्बाद

राजकीय विद्यालय, अचलपुरा। जन-जन की आस्था के केंद्र आचार्य भगवन् आदि संतवंद का भद्रेसर से राजकीय विद्यालय अचलपुरा में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। धर्मसभा में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की अर्थ सहित व्याख्या फरमाते हुए धर्म, अहिंसा, संयम, तप की दिशा में निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आपश्री जी ने आगे फरमाया कि गलत खान-पान, विचार, व्यवहार से जीवन खराब हो जाता है। सदैव अच्छी संगत करना चाहिए। माता-पिता, गुरुजनों का सदैव सम्मान करें, किसी को तकलीफ, पीड़ा पहुँचे ऐसा कोई काम न करें। महेश नाहटा ने व्यसन को कैंसर, हृदय रोग का घर बताया। छात्र-छात्राओं ने व्यसनमुक्ति का संकल्प लिया।

दर्शनार्थियों की जिज्ञासाओं का आगमसम्मत समाधान महापुरुषों द्वारा किया गया। स्कूल में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

28 अप्रैल
2024

आत्मा की शक्ति को करें जाग्रत

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नाहरगढ़। महान् आध्यात्म योगी आचार्य भगवन् आदि ठाणा-7 का अचलपुरा से नाहरगढ़ पधारना हुआ। मंगल प्रवेश पश्चात् यहाँ पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि यह धन, वैभव सुख देने वाला नहीं है। दुनिया के भौतिक सुखों को पाने के लिए धर्म का कुछ भाग भी नहीं छोड़ना चाहिए। सच्चा सुख संयम व त्याग में है। अनुकूलता व प्रतिकूलता में सम्भाव रखना चाहिए। कष्टों से घबराना नहीं चाहिए। जवाहराचार्य, गणेशाचार्य का मन तो बीमारी की वेदना के बाद भी पूर्ण प्रसन्न रहता था। हमें भी सहनशीलता को बढ़ाना है। आत्मा की शक्ति को जाग्रत करना है।

नवकार मंत्र का प्रतिदिन स्मरण करने एवं व्यसनमुक्ति के संकल्प हुए। आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने का सौभाग्य उपस्थित गुरुभक्तों को मिला। आचार्य श्री नानेश के सांसारिक भानजे सूरजमल जी सांखला ने सजोड़े शीलब्रत का प्रत्याख्यान लिया। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने 'इस दुखिया संसार में चेतन उलझन ही उलझन है' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो समय बीत गया है, उसकी चर्चा न करें। अब जो समय वर्तमान में हमारे हाथ में है, उसे सार्थक करें। वर्तमान में जीने वाला वर्धमान बन जाता है। वर्तमान में हमारी आराधना जितनी

सार्थक होगी, भविष्य उतना ही सुंदर होगा। आपश्री जी ने आध्यात्मिक आरोग्यम् के बारे में विस्तार से समझाया।

‘राम गुरु का है सदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश’ के अंतर्गत स्कूलों में कार्यक्रम हुए। गाँव के शुभम किराणा स्टोर, नाहरगढ़ के शुभम टाक ने अंडे नहीं बेचने का नियम ग्रहण कर जीवदया, अहिंसा, शाकाहार के क्षेत्र में गहरी रुचि दिखाई।

29 अप्रैल
2024

दूसरों पर नहीं, अपने कृत्यों पर धरें ध्यान

नरेश जी ढाबरिया का निवास, कन्नौज। संयम साधना के सजग प्रहरी आचार्य भगवन् एवं सान्निध्य में विहाररत संतवृदं का जय-जयकारों के साथ नाहरगढ़ से स्मृतिशेष शासन प्रभावक श्री सेवंत मुनि जी म.सा. की सांसारिक जन्मस्थली कन्नौज में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। माहेश्वरी, सैन, कुम्हार, सुथार आदि समाज के लोगों ने आचार्य भगवन् के आगमन पर अत्यंत हर्ष व्यक्त किया।

यहाँ पहुँचकर विहार यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई, जिसे संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि शांति, आनंद के लिए कोई बात करने वाला हो यह जरूरी नहीं है। आप स्वयं से बात करें। किसने क्या किया है इस ओर ध्यान नहीं देना है, खुद ने क्या किया इस पर ध्यान देना। हमें दुर्गति नहीं, सद्गति की ओर कदम बढ़ाना है। हर परिस्थिति में शांत रहने का प्रयास करें। आपश्री जी ने शासन प्रभावक श्री सेवंत मुनि जी म.सा. को तपस्वी, सेवाभावी, वात्सल्य मूर्ति निरूपित किया।

संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे का 52वाँ दिन पूर्ण सजगता एवं शांत भावों के साथ गतिमान रहा। श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहा। अब तक आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर सहित संत-महापुरुषों एवं शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा., साध्वी श्री पुष्पलता श्री जी म.सा., साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंचल कंवर जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा., साध्वी श्री शर्मिला श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुसौम्या श्री जी म.सा. आदि ने संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. को दर्शन प्रदान कर संथारे की अनुमोदना की। अनेक साध्वीवर्याओं ने स्वाध्याय में आत्मबोध, गीत, चिंतन सुनाकर संथारा साधिका जी को धर्मतत्त्व प्रदान किया, जिससे संथारा साधिका जी आत्मविभोर हो गई।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सांसद सी.पी. जोशी जी सहित कई राजनेताओं ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया। 36 वर्ष से लगातार अनाज का त्याग करने वाली लीला बाई सुथार, कन्नौज ने आजीवन अनाज का त्याग करने का नियम लिया। आप मात्र दूध, फल का ही उपयोग करती हैं।

दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज का काम आज करना चाहिए। धर्म को कल पर कभी ना छोड़ें। अशुभ कार्यों को कल के लिए टालें और शुभ कार्यों को तुरंत पूर्ण करें। अनुशासन का पालन करें। जो कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित करता है वही सच्चा धार्मिक व्यक्ति है।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ श्रवण कराया। शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पथारना हुआ।

रात्रि में आयोजित प्रवचन सभा में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु के प्रति विश्वास दुर्लभ है। गुरु का साथ होने पर जिंदगी में किसी बात की चिंता नहीं होती। दूसरों की पीड़ा हरना पुण्य का काम है। श्री सेवंत मुनि जी म.सा. साधना, स्वाध्याय, सेवा व वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थे। श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने सेवंत मुनि जी म.सा. के गुणों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। 15 मिनट धर्माराधना करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

सावा। प्रातः मंगलमय बेला में प्रार्थना के माध्यम से प्रभु एवं गुरुभक्ति के पश्चात् आचार्य भगवन् आदि ठाणा माहेश्वरी पंचायत भवन, सावा में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इनसान भँवरे के समान मतवाला बना हुआ है। भँवरा रसपान करता हुआ सूर्यास्त होने से फूल में बंद हो जाता है और सोचता है कि सूर्योदय होने पर बाहर आ जाऊँगा, लेकिन हाथी द्वारा सूर्योदय से पूर्व ही कमल को नष्ट कर दिया जाता है। इसी तरह इनसान संसार के राग-रंग और धन की अंधी दौड़ में अपनी जीवनलीला समाप्त कर देता है।

आचार्य भगवन् ने महती कृपा कर मंगलपाठ फरमाया। शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने 'धन्य है जिनवाणी शुरुवर धन्य है जिनवाणी' गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय गुरुभक्तों सहित जैनेतर माहेश्वरी, ब्राह्मण व मूर्तिपूजक संघ ने अधिकाधिक विराजने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास एवं भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि के पश्चात् श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में फरमाया कि जीवन की शुद्धि के लिए मन, वचन व आचरण को शुद्ध रखना होगा। कठोर वचन व कर्कश वाणी के कारण महाभारत का युद्ध हुआ। अच्छे-बुरे कर्मों का फल आज नहीं तो कल निश्चित ही भुगतना होगा।

तपस्या सूची

आजीवन शीलन्रत	पूरणमल जी मंजू देवी लोढ़ा-आवरी माता, सुभाष जी अनिता देवी धम्माणी-रतलाम, पोखर जी माली, हीरालाल जी सोनी, चंद्रकांत जी जोशी-सावा, धीसूलाल जी वैराणी-सावा, नारायण जी कृष्ण देवी समदानी-सावा, सज्जन सिंह जी संपत बाई नलवाया-कानोड़, कन्हैयालाल जी सुमन देवी मोदी-भदेसर, सूरजमल जी सांखला-नाहरगढ़, रामपाल जी कल्पना बाई ढाबरिया-उदयपुर, नरेश जी ललिता जी ढाबरिया-चित्तौड़गढ़, रामलाल जी दर्जी, जगदीश जी दुर्गा जी पालीवाल-कन्नौज
पक्की नवकारसी	आजीवन - विमला देवी सोनगरा-सावा
चौविहार	आजीवन - युवारत्न लोकेश जी लोढ़ा-आवरी माता
एकासना का एकांतर	11वें वर्ष के लिए - करणमल जी कोठारी-भींडर

-महेश नाहटा

भदेसर में 95 वर्षीय साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. शांति और समभाव से अपनी मंजिल की ओर समाधि के साथ आगे बढ़ रही हैं। संथाना 62वें दिवस पर पूर्ण समाधि भावों के साथ गतिमान रहा। इस प्रसंग पर प्रतिदिन भदेसर सहित देशभर के अनेक स्थानों पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान लेकर भाई-बहन संथारे की अनुमोदना कर रहे हैं। अनेक चारित्रात्माओं ने दर्शन लाभ प्रदान कर महासती जी का मार्ग प्रशस्त किया। आप मोक्षमार्ग में दृढ़ से दृढ़तर बनती जा रही हैं। परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की कृपा से संथारे का ठाठ लगा हुआ है।

पारिवारिक परिचय

- परदादा जी-परदादी जी :** स्व. श्री मिश्रीलाल जी-स्व. श्रीमती जतन बाई कोटड़िया
- दादा जी-दादी जी :** स्व. श्री देवीचंद जी-पुख्ती बाई, नथमल जी-विरदी बाई, खेतमल जी- श्रीबाई कोटड़िया
- पिता जी-माता जी :** दिनेश जी-जयश्री जी कोटड़िया
- बड़े पिता जी-माता जी :** रामसुंदर जी-स्व. श्रीमती पुष्पा बाई, श्यामसुंदर जी-आशा बाई कोटड़िया
- चाचा जी-चाची जी :** जयप्रकाश जी-संगीता जी, जयचंद जी-नैना जी, विजय जी-राख्ती जी, कमल जी-मंजू जी, कैलाश जी-मोना जी, रमेश जी-भावना जी कोटड़िया
- भाई-भाभी :** महावीर जी-करिश्मा जी कोटड़िया
- बहन-बहनीई :** खुशबू जी-अश्विन कुमार जी भंडारी, चंचल जी-रिषभ जी बरड़िया, रेजल जी-सागर कुमार जी पारख
- भाई, बहन :** चंदन जी, पद्म जी, पारस्स जी, नमन जी, आदेश जी, नीरज जी, इलक जी, श्रीपाल जी, नयन जी, मोक्षा जी, लोकेश जी, केतन जी, झील जी
- भतीजी, भांजा, भांजी :** धृति, सम्यक्, दार्शिक, रुही, प्राव्या, धैर्य
- भुआ जी-फूफा जी :** चंद्रा बाई-जसराज जी बोथरा, कमला बाई-मुरलीधर जी बोथरा, गीता बाई (मंजू बाई)-पूनमचंद जी बोथरा, निर्मला बाई-रमेशचंद जी बोहरा, जयवंती जी-नितिन जी बरड़िया, पन्ना जी-प्रफुल कुमार जी वैद
- नाना जी-नानी जी :** स्व. श्री शार्तिलाल जी-पुष्पा बाई बाफना
- मामा जी-मामी जी :** मनोज कुमार जी-रंजना बाई बाफना
- मौसी जी-मौसा जी :** नीतू बाई-उत्तमचंद जी झाबक, मालती जी-दिनेश जी बाणगीता, आशा बाई-रिषभ जी बाणगीता, नविता जी-धीरज कुमार जी झाबक
- परिवार से दीक्षित :** श्री रामयश मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय भाई) साधुमार्गी साध्वी श्री निर्विद श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन) साधुमार्गी साध्वी श्री स्नेहा जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन) अन्य संप्रदाय में साध्वी श्री पृथ्वी जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन) अन्य संप्रदाय में

मुमुक्षु सुश्री दर्शना जी कोटड़िया

निवास स्थान :

नंदुरबार (महा.)

जन्म तिथि :

04 अप्रैल 1998

व्यावहारिक शिक्षा :

बी.ए., एल.एल.बी.

धार्मिक अध्ययन :

श्रमण प्रतिक्रमण, सामाधिक सूत्र



સંક્ષિપ્ત પરિવાય

જન્મ સ્થાન	: દુર્ગ (છ.ગ.)
જન્મ તિથિ	: 19 અપ્રૈલ 1991
વૈરાગ્યકાળ	: લગભગ 1 વર્ષ
વ્યાવહારિક શિક્ષા	: એમ.કોમ.
ધાર્મિક અધ્યયન	: શ્રીમદ્ દશવૈકાલિક સૂત્ર કે 4 અધ્યયન, શ્રીમદ્ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર કે 1-11, 15, 16, 20, 28, 29, 31વાઁ અધ્યયન, શ્રી પુછ્છિંસુ ણ, ઉવવાઈ સૂત્ર કે 22 ગાથા, થોકડા- લઘુદંડક, ગતિ-આગતિ, જૈન સિદ્ધાંત બતીસી, પાંચ સમિતિ તીન ગુપ્તિ, સ્તોત્ર- ભક્તામર, ચિંતામણિ પાશ્વર્વનાથ, આત્મશુદ્ધિ, ઉવસગહર સ્તોત્ર, બડી સાધુ વંદના, રત્નાકર પચ્ચીસી, મેરી ભાવના
ધાર્મિક પરીક્ષાએં	: જૈન સંસ્કાર પાઠ્યક્રમ 1 સે 5, જૈન સિદ્ધાંત ભૂષણ
પદયાત્રા	: લગભગ 200 કિમી.
તપારાધના	: માસખ્રમણ (31), પંદ્રહ, સાત એવં તેલા
સંભાવિત દીક્ષા તિથિ	: 09 જૂન 2024 સ્થાન : બેગું

મુનુક્ષુ સૌરભ જી સંચેતી



પારિવારિક પરિચય

દાદા જી-દાદી જી	: સ્વ. શ્રી સિરેમલ જી-સ્વ. શ્રીમતી પારસ્ય બાઈ સંચેતી
છોટે દાદા જી-દાદી જી	: સ્વ. શ્રી સંપત્રાજ જી-સ્વ. શ્રીમતી કમલા બાઈ, પ્રકાશચંદ જી-જસ્સુ બાઈ સંચેતી
પિતા જી-માતા જી	: સ્વ. શ્રી મહાવીર ચંદ જી-શ્રીમતી ઢેલા બાઈ સંચેતી
ચાચા જી-ચાચી જી	: સુનીલ જી-મમતા જી, રાજેદ્ર જી-ઉમા જી, પ્રવીણ જી-કવિતા જી, પ્રગેશ જી-પ્રોતિ જી સંચેતી
ભાઈ-ભાભી	: વિનય જી, વિકાસ જી-શ્રુતિ જી, યોગેશ જી-દીક્ષા જી, પ્રસ્નન્દ, આગમ, ભવ્ય સંચેતી
બહન-બહનોઈ	: સાનિયા જી-નીલેશ જી ગોઠી, પ્રાચી, પ્રજ્ઞા-ક્રષ્ણ જી ગોલાટા, રિમઝિમ, રિયા, યુક્તા, વંશિકા, કૃપા, ભવિ સંચેતી
માંજી એવં ભતીજી	: કુહૂ, આનૂ, ટિશા, મૌલી
મુઊઝી જી-ફૂફા જી	: મુન્જી બાઈ-મદનલાલ જી સાંખલા, સ્વ. શ્રીમતી ચંદ્રકાંતા જી-પ્રકાશચંદ જી ઢેલાંદ્યા, ગુણમાલા જી-મૂલચંદ જી સેઠિયા, કુ. પ્રણીતા જી સંચેતી, પ્રેરણ જી-જયકુમાર જી આબદ્દ, પ્રણીતિ જી-અર્પણ કુમાર જી કોઠારી
નાના જી-નાની જી	: સ્વ. શ્રી ચંપાલાલ જી-સ્વ. શ્રીમતી સુંદર બાઈ ભંસાલી
મામા જી-મામી જી	: સ્વ. શ્રી દીપચંદ જી-સ્વ. શ્રીમતી ધન્ની બાઈ, સ્વ. શ્રી ટોડરમલ જી-સંતોષ બાઈ, ભાગચંદ જી-ઊષા બાઈ, રાજેદ્ર જી-લલિતા દેવી
મૌસી જી-મૌસા જી	: નિર્મલા દેવી-નરેંદ્ર જી બરાંદ્યા
પરિવાર સે દીક્ષિત	: સાધ્વી શ્રી સુવૃષ્ટિ શ્રી જી મ.સા. (સંસારપક્ષીય બહન) વિદુષી મહાસતી શ્રી ગુમાન કંવર જી મ.સા. (સંસારપક્ષીય ભુઆ દાદી જી - જ્ઞાનગઢ્ઠ)

अंकित परिवय

जन्म स्थान	: देशनीक, बीकानेर (राज.)
जन्म तिथि	: 25 मई 2005
वैराग्यकाल	: लगभग 4 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.कॉम. - प्रथम वर्ष
धार्मिक अध्ययन	: सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 1-11 अध्ययन, श्रीमद् भगवती सूत्र एवं श्रीमद् प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े
धार्मिक परीक्षाएँ	: जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1, 2, 3 और नी एंड ग्री
पदयात्रा	: लगभग 2000 किमी.
संभावित दीक्षा तिथि	: 09 जून 2024
स्थान	: बेंगू

मुनुक्षु
सौरभ जी
भूरा



पारिवारिक परिचय

पड़दादा जी	: स्व. श्री प्रेमसुख जी भूरा
दादा जी-दादी जी	: स्व. श्री संपतलाल जी-स्व. श्रीमती भूरी देवी भूरा
पिता जी-माता जी	: मांगीलाल जी-नैनी देवी भूरा
बड़े पिता जी-माता जी	: स्व. श्री रतनलाल जी-मंजू देवी, श्रीचंद जी-ममता देवी, नवरतन जी-ऊषा देवी, शुभकरण जी-सुशीला देवी भूरा
भाई-भाभी	: दीपक जी, क्रष्ण जी, अभिषेक जी, राकेश जी-लक्ष्मिता जी भूरा
बहन-बहनी	: किरण जी-अक्षय जी बाफना, रोशनी जी-महेंद्र जी गोलछा
भतीजा, भाणेज	: सारांश भूरा, हेत्विक बाफना, हिमांशु गोलछा
नाना जी-नानी जी	: मदनलाल जी-स्व. श्रीमती सीता देवी, मूलचंद जी, सोनराज जी, सुमेरमल जी-विमला देवी बोधरा
मामा जी-मामी जी	: श्रीपाल जी-रेवती जी, हनुमान जी, रावलमल जी-सरला जी, संदीप जी-पूजा जी बोधरा
मौसी जी-मौसा जी	: अनिता देवी-हुक्मीचंद जी सुराणा, दुर्गा देवी-भंवरलाल जी श्यामसुराणा
परिवार से दीक्षित	: शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. साध्वी श्री सुनवनिधि श्री जी म.सा.

अंकिता पदिवय

निवास स्थान	: दुर्ग (छ.ग.)
जन्म तिथि	: 04 जून 1998
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.सी.ए.
धार्मिक अध्ययन	: श्रीमद् दशर्वेकालिक सूत्र के कुछ अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, तत्त्व का ताला ज्ञान की कुँजी, भगवती सूत्र एवं श्री प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थीकड़े
धार्मिक शिक्षा	: आरुण्णबीहिलाभं
संभावित दीक्षा तिथि	: 09 जून 2024
स्थान	: बेगूँ

पारिवारिक परिचय

पड़दादा जी-पड़दादी जी	: स्व. श्री रूपचंद जी-माडु बाई बाफना
दादा जी-दादी जी	: स्व. श्री चंदनमल जी-स्व. श्रीमती तुलसी देवी बाफना
पिता जी-माता जी	: बसंत जी-निर्मला देवी बाफना
बहूँ पिता जी-माता जी	: स्व. श्री हीरालाल जी-स्व. श्रीमती रेशम बाई, स्व. श्री रत्नलाल जी-स्व. श्रीमती लीला देवी, झूमरलाल जी-सरस्वती बाई, ओमप्रकाश जी-मीना देवी, पन्नालाल जी-सुषमा देवी बाफना
भाई-भाभी	: धरमचंद जी-संगीता जी, संजय जी-सीमा जी, तरुण जी-संगीता जी, नवीन जी-जूली जी, सचिन जी-पूजा जी, प्रवीण जी-रुचि जी, प्रशांत जी-प्रियता जी, हर्ष, दर्शन बाफना
बहन-बहनी	: निकिता जी-धीरज जी सुराना (राजनांदगांव)
भुआ जी-फूफा जी	: स्व. श्रीमती कमला बाई-मूलचंद जी बोथरा (दुर्ग), विजयलक्ष्मी बाई-अभय कुमार जी मालू (महास्मुंद)
नाना जी-नानी जी	: स्व. श्री पुखराज जी-राधा बाई, स्व. श्री शांतिलाल जी, पारस्मल जी, प्रकाशचंद जी, धरमचंद जी पारख
मामा जी-मामी जी	: राजेश जी, ललित जी, सुनील जी, केवल जी, प्रिंस जी, अन्नू जी, अमन जी, आकाश जी पारख
मौसी जी-मौसा जी	: चंदा देवी-स्व. श्री शांतिलाल जी छाजेड़, नंदिनी-अहिवारा, त्रिवेणी देवी-शीतलचंद जी छाजेड़, खरेगढ़, आशा देवी- राकेश जी बाफना, बालोद
परिवार से दीक्षित	: श्री प्राणेश मुनि जी म.सा., श्री जयेश मुनि जी म.सा., साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुनवनिधि श्री जी म.सा. (साधुमार्गी), साध्वी श्री भाग्यवंती श्री जी म.सा., साध्वी श्री निष्ठा श्री जी म.सा. (ज्ञानगच्छ), साध्वी श्री प्रणिता श्री जी म.सा. (समरथगच्छ)

मुमुक्षु सुश्री प्रणिता जी बाफना



અંક્રિપ્ત પરિવય

નિવાસ સ્થાન	: અર્જુદા, દુર્ગ (છ.ગ.)
જન્મ તિથિ	: 27 જુલાઈ 2002
વૈરાગ્યકાળ	: લગભગ ઢાઈ વર્ષ (30 માહ)
વ્યાવહારિક શિક્ષા	: બારહવીં
ધાર્મિક અધ્યયન	: પુચ્છિસુણ, શ્રીમદ્ દશવેંકાલિક સૂત્ર એવં શ્રીમદ્ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર કે કુછ અધ્યયન, સુખવિપાક સૂત્ર કે 2 અધ્યયન, તત્ત્વ કા તાલા (સંપૂર્ણ), પ્રજાપના સૂત્ર વ ભગવતી જી કે કુછ થોકડે
ધાર્મિક પરીક્ષાએં	: ભૂષણ, કૌવિદ (1)
પદ્યાત્રા	: લગભગ 200 કિમી.
સંભાવિત દીક્ષા તિથિ	: 09 જૂન 2024
સ્થાન	: બેગું

મુમુક્ષુ સુશ્રી શૈલી જી બાફના



પારિવારિક પરિચય

પઢાદા જી-દાદી જી	: સ્વ. શ્રી રતનલાલ જી-સ્વ. શ્રીમતી ચંપા દેવી બાફના
બઢે દાદા જી-દાદી જી	: સ્વ. શ્રી કિશોરલાલ જી-કમલા દેવી બાફના
દાદા જી-દાદી જી	: અમરચંદ જી-પ્રેમલતા જી બાફના
પિતા જી-માતા જી	: દિનેશ કુમાર જી-રોમા જી બાફના
બઢે પિતા જી-માતા જી	: સંજય જી-સારિકા જી બાફના
ચાચા જી-ચાચી જી	: વિનોદ જી-ખુશબૂ જી, પ્રણેશ જી-મમતા જી બાફના
ભાઈ-ભાભી	: સ્વાનિલ જી-સ્વીમ્યા જી, સંભવ જી બાફના, પૂરું જી-દિશા જી ચૌરડિયા
બહનેં	: સાક્ષી, સુવિધિ, દેશના, સુહાના, ભૂમિકા, શાચિ, વિધિ, ધૃતિ
મુઆ દાદી જી	: સાયર દેવી બુરડ
મુઆ જી-ફૂફા જી	: નીતૂ જી-મહેંદ્ર જી સુરાના, નિર્મલ જી-નિર્મલ જી ઢેલડિયા, સીમા જી-સુનીલ જી છાજેડ, માયા જી-નિકેશ જી બુરડ
નાના જી-નાની જી	: કેશરીચંદ જી-પુષ્પા જી ચૌરડિયા
મામા જી-મામી જી	: વિકાસ જી-રશ્મી જી ચૌરડિયા

અંક્રિપ્ત પરિવય

નિવાસ સ્થાન	: રતલામ (મ.પ્ર.)
જન્મ તિથિ	: 19 સિટંબર 2006
વૈરાગ્યકાળ	: લગભગ 2 વર્ષ
વ્યાવહારિક શિક્ષા	: બારહવીં
ધાર્મિક અધ્યયન	: પુચ્છિંસુ ણં, શ્રીમદ્ દશવૈકાલિક સૂત્ર 1 સે 4 અધ્યયન, જૈન સિદ્ધાંત બતીસી, લઘુદંડક, ગતિ-આગતિ, અષ્ટ પ્રવચન માતા, 67 બોલ એવં અન્ય થોકડે
ધાર્મિક પરીક્ષાએં	: જૈન સિદ્ધાંત ભૂષણ
પદ્યાત્રા	: લગભગ 350 કિમી.
સંભાવિત દીક્ષા તિથિ	: 09 જૂન 2024
સ્થાન	: બેગું

પારિવારિક પરિચય

પઢદાદા જી-દાડી જી	: સ્વ. શ્રી બસંતીલાલ જી-કોમલ બાઈ ધર્મમાણી
બઢે દાદા જી-દાડી જી	: પ્રકાશચંદ્ર જી-સ્વ. શ્રીમતી વિમલા દેવી, પારસમલ જી-નિર્મલા જી, રાજકુમાર જી-શકુંતલા જી ધર્મમાણી
દાદા જી-દાડી જી	: સુભાષચંદ્ર જી-અનિતા જી ધર્મમાણી
પિતા જી-માતા જી	: અનૂપ જી-હિંપલ જી ધર્મમાણી
બઢે પિતા જી-માતા જી	: નિતિન જી-કવિતા જી, વિપુલ જી-સીનિયા જી, વિપિન જી-સ્વાતિ જી ધર્મમાણી
ચાચા જી-ચાચી જી	: અતુલ જી-નીલમ જી અવિ જી-લવિના જી, રવિ જી-પાયલ જી, સ્વ. શ્રી આશીષ જી-ભાવના જી ધર્મમાણી
ભાઈ, બહન	: આદિ, અરિષ્ટ, ઈરા, વિરમ, હિતજ્ઞ
મુખ્યા જી-ફૂફા જી	: સર્યુર્કાંતા જી-ઉમરાવમલ જી સિયાલ, ચંદનબાલા જી-પૂનમચંદ જી બાફના, ગરિમા જી-અમિત જી બાફના
નાના જી-નાની જી	: સુરેશ જી-તેજ કંવર જી લોઢા
મામા જી-મામી જી	: શૈલેંદ્ર જી-અનિતા જી, નવીન જી-પ્રિયા જી
મૌસી જી-મૌસા જી	: સિંપલ જી-રિતેશ જી બાફના
પરિવાર સે દીક્ષિત	: શ્રી ઇભ્ય મુનિ જી મ.સા. સાધ્વી શ્રી અવિચલ શ્રી જી મ.સા. સાધ્વી શ્રી રામકરસ્તૂર શ્રી જી મ.સા.

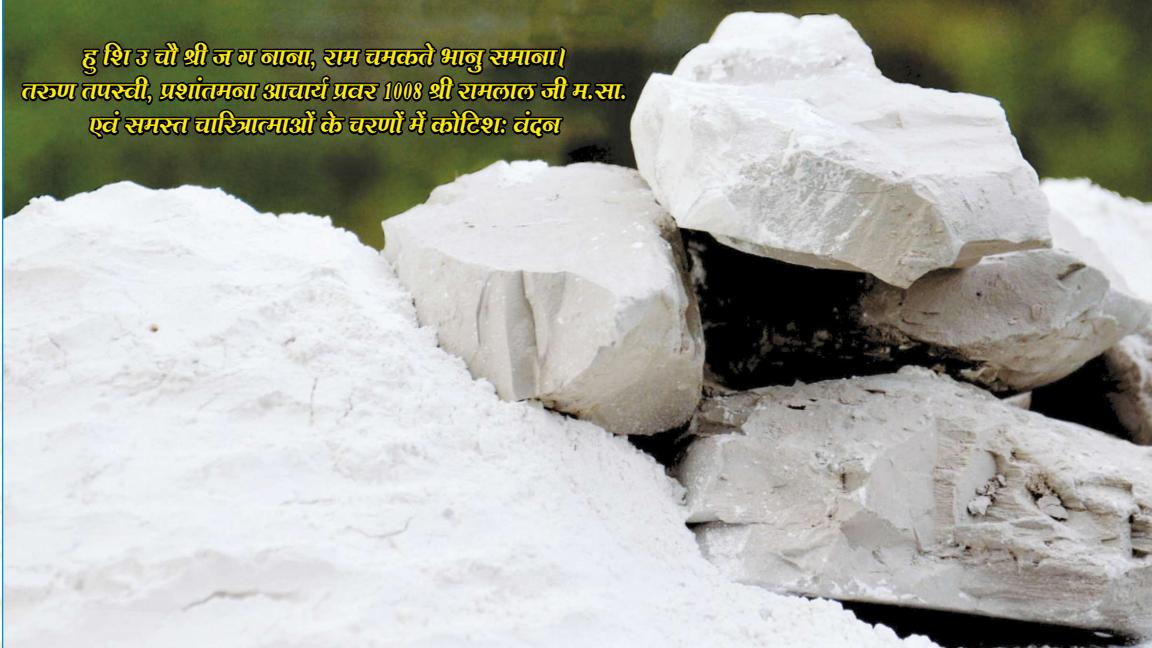
મુનુક્ષુ
સુશ્રી ત્રિશલા જી
ધર્મમાણી





Serving Ceramic Industries Since 1965

हुशि उ चौ श्री ज न नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरण तपस्ची, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समरत चारिगाल्माओं के चरणों में क्रोटिशः वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com



CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT



PATIENT ROOM



RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095

Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

हुं शिं उ चौं श्री ज न नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तप्तवी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल नी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन



RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
	वाचनालय हेतु (केवल भारत में)
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में) 3,000/-
---------	-------------------------

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से
कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com

SCAN & PAY



ब्लॉग्स और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक : 9799061990 } news@sadhumargi.com

श्रमणोपासक समाचार : 8955682153 }

साहित्य : 8209090748 : sahitya@sadhumargi.com

महिला समिति : 6375633109 : ms@sadhumargi.com

समता युवा संघ : 7073238777 : yuva@sadhumargi.com

धार्मिक परीक्षा : 7231933008 } examboard@sadhumargi.com

कर्म सिद्धान्त : 7976519363 }

परिवारांजलि : 7231033008 : anjali@sadhumargi.com

विहार : 8505053113 : vihar@sadhumargi.com

पाठशाला : 9982990507 : Pathshala@sadhumargi.com

शिविर : 7231833008 : udaipur@sadhumargi.com

ग्लोबल कार्ड अपडेशन : 6265311663 : globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर ब्लॉग्स और ई-मेल आईडी करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST



RAKSHA[®]

PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL

हुं शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।

तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर

1008 श्री रामलाल जी म.सा.

एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027. INDIA

Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.

Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



RAKSHA FLO

P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond[®]

Dureflex

Diamond[®]

DUROLON



Now with new
M.R.O.
Technology
Resists high impact



IS 15778:2007
CM/L NO : 2526149



cftri
CERTIFIED



LUCALOR
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा — जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,900

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

सम्पादक भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोया रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261